करार

करार

केदार नाथ चौधरी

इंडिका इन्फोमीडिया
tudiqjh] ubZ fnYyh110 058

KEDAR NATH CHOUDHARY
Hidden Cottage, Bengali Tola
Laheriasarai, Darbhanga–846 001
Mob. : 93349 30715

ISBN : 81-89054-08-5

प्रकाशक
इंडिका इंफोमीडिया
डी-1सी/26बी, जनकपुरी, नई दिल्ली–58
फोनः 93509 51555, 93507 50555

प्रथम संस्करण
2006

मूल्य
60 रु.

आवरण
दर्शन शर्मा, श्रीकांत

मुद्रक
संदीप प्रेस
नारायणा, नई दिल्ली–110 028

KARAR,
A Maithili Fiction
by Kedar Nath Choudhary

हम एकहि टा बात कँ ध्यान में राखि कथा लिखैत छी जे पाठक एकरा रुचि सँ पढ़थि, चर्च करथि। हम एकरे उपलब्धि मानैत छी।

अहि शहर मे एलहुँ त' डा. उमाकांत जी सँ सम्पर्क भेल। ओ सज्जन आ विद्वान त' छथिहे, संगहि मैथिली भाषाक समर्पित लेखक सेहो छथि। 'चमेलीरानी' आ प्रस्तुत उपन्यास लिख' मे ओ उत्साह आ सहयोग देलनि। डा. उमाकांत जी कँ धन्यवाद!



1.

हयौ भाइजी, एक इन्च जल-स्तर आरो बढ़तै त' पानि बरामदा पर चढ़ि जेतैक। तखन आउटर हाउसक कोठली सेहो डुबि जेतै। अएँ यौ भाइजी, हमर-अहाँक जल-समाधि अही ठाम बनतै की?

भाइजी अर्थात वीर बाबू कँ पंकज कहि रहल छलखिन।

मिथिलांचलक दरिभंगा शहर मे अजूबा बाढ़ि आयल छलै। रेलवे टीसन, रेडियो स्टेशन, मोबाइल टावर, टेलीफोन-भवन, ट्रान्सफर्मर संगहि कोट-कहचरी, अस्पताल, डाकघर आदि अथाह पानि मे डुबि जन-शून्य भ' चुकल छलै। व्यवस्थापक आ कर्णधार हाकिम अपन-अपन परिवार ल' पलायन क' चुकल छलाह। बाँकी बचला सामान्य नागरिक। हुनका लेल कोनो चिन्ता नहि। आजादीक पचास-पचपन बर्खक बाद एतुका मनुक्ख कँ आपातकाल मे अपन प्राण रक्षा करबाक लूरि स्वतः आबि चुकल छै। आम जनता कँ ककरो मदतिक जरूरत नहि। प्रत्येक बर्खक बाढ़ि एवं बीच-बीच मे आयल भूकम्पक अनुभव हुनक प्राण बचेबाक कर्तव्य-बोध कँ पूर्णतः जागृत क' देने छल। ओहुना मनुक्ख कठ-जीव होइत अछि। जल्दी मरत तकर सम्भावना बहुत कम। मुदा अहि बेरुक बाढ़ि, आ रौ, बाप रौ बाप! प्रकृति जीव आ निर्जीव, दुनू कँ अपन ग्रास बनबै लेल अट्टहास क' रहल छल। हहाइत बाढ़ि भयावह बनि धरती पर प्रलय आनि देने छल। हौउ बाउ! अहि बेर प्राण नहिए बचतह से बुझि लैह।

एहन प्रलयंकारी बाढ़ि ऐबाक कारणक विश्लेषण जनताक बीच खूब भ' चुकल छल। कियो बाजल रहथि—व्यवस्था मे भ्रष्टाचार ओहि सीमा तक प्रवेश क' चुकल अछि जे एतुका मनुक्ख लाचार, बेबस आ मूक दर्शक बनि गेल अछि। एकर निदान समग्र क्रान्तिए टा सँ भ' सकैए। दोसर एकर खण्डन करैत कहलनि—सभटा तर्क अकारथ छह। हौउ ई थिक प्रभु इच्छा। पापी मनुक्ख कँ भगवान थका-थका क', डुबा-डुबा क' प्राण हरण करथिन, तकरे सभटा इन्तजाम थिकै।

पृथ्वी पर भिन्न-भिन्न स्वभावक लोक निवास करैत अछि। मिथिलाक लोक

सज्जन, सरल आ गाँधी बाबाबला अथक सहन शक्तिक स्वामी। सहैत-सहैत मृत्यु जखन दुआरि पर आबि जेतनि त' बकरी जकाँ मेमिया उठताह–आह! विधाता सँ के लड़त!

एहन मनुक्ख समुदाय जे सोचिए ने पबैत अछि जे ई बाढ़ि-विपत्ति प्रकृति प्रदत्त अछि आ की शासनक भ्रष्ट आचरणक दुआरे, ताही ऊहा-पोह मे फँसि गेल छलाह दू टा विद्यार्थी, वीर बाबू आओर पकंज।

सांझ भ' गेल रहै। झलफल अन्हार होब' लागल रहै। बाढ़िक प्रचण्ड हाहाकार सँ भयक साम्राज्य चारूकात व्याप्त छलै। वीर बाबू पकंज सँ कने बयस मे पैघ तैँ भाइजी। भाइजी सभ किछु छलाह मुदा वीर कथमपि नहि छलाह। मृत्युक भय सँ आशंकित वीर बाबू आ पंकज असहायक स्थिति मे रहथि। एतुका लोक कैँ छोटको विपत्तिक सामना करबाक साहस नै छै। तखन एखुनका बाढ़ि सँ उत्पन्न विपत्त्कि पहाड़क मुकाबला ओ दुनू क' पबितथि तकर कोनो सम्भावना त' नहिए छल। पड़ा क' जइतथि कत? चारूकात हहाइत बाढ़िक लहरि सब किछु कैँ डुबा चुकल छलै, आब त' चराचर सृष्टि कैँ गीर जेबाक लेल उद्धत छल। जे निर्बल होथि, निर्धन होथि, तनिक आसरा मात्र भगवान। मुदा हुनको गोहारि कयल जाय तकरा लेल मोन स्थिर होए तखन ने।

डुबि क' मरब तकर आशंका मे चिंतित पंकज कैँ किछु जवाब नहि द' वीर बाबू एक दिस टकटक ताकि रहल छलाह। किछु निश्चय करैत ओ बजलाह–हँ, हँ। ई त' मनुक्खे थिक। एम्हरे आबि रहल अछि।

आब'बला दिस पंकज सेहो आँखि चिआरि क' तकलनि आ थर-थर कपैत बजला–हँ, यौ भाइजी, लगै छै त' मनुक्खे जकाँ। ओना भूत-प्रेत सेहो भ' सकैत अछि। विपत्ति कखनहुँ असगर नहि आबए। हमरा त' डर होइत अछि! हे परमेसर!

आब'बला समीप एलाह। ओ डाँड़ तक पानि मे डुबल रहथि। हुनकर पीठ पर थैला लटकल रहनि। सिंदूरी संध्याक तुरंत बाद कालिमा युक्त रात्रिक आगमनक बेला छलै। आब'बलाक आकृत स्पष्ट नहि भ' रहल छलै। बरामदा पर ठार वीर बाबू आ पंकजक प्रबल जिज्ञासा दुआरे भौं तनि, भृकुटि टेढ़ भ' गेल छलनि। ओ दुनू चुपचाप आँखि चिआरि तकैत रहला। लग आबि आब'बला जोर सँ चिचिआयल–एतय अहाँ दुनूक संग विनय सेहो रहै छथि?

–हँ, हँ। वीर बाबू खखसैत कहुना क' जवाब देलनि।

हम विनयक छोटका काका जटाधरक अमिन्न मित्र राज शेखर थिकहुँ। पूरा नाम भेल पंडित राज शेखर दत्त। विनय हमरा पंडित कका कहैत छथि। किछु माह

पूर्व विनय बाजार मे भेटल रहथि आ कहने रहथि जे अहीठाम रहैत छथि। आइ एकाएक बाढ़िक चपेट मे फँसि गेलहुँ। की करू? कोमहर जाउ? कोना प्राण बचाउ? सैह सभ सोचि रहल छलहुँ कि अनायास विनय मोन पड़लाह। ओ त' नहिए हेताह, काकाक एकोदिष्ट कर' लेल गाम गेल हेताह, से बुझितो विवशता कारणे आब'पड़ल। आब अहाँ दुनू सँ निवेदन जे हमरा रात्रि भरिक आश्रय दी। अहाँ दुनू कैँ हम कोनो कष्ट नहि देब। सप्पत खा क' कहैत छी जे काल्हि भोरे हम अन्यत्र चलि जायब।

एना किएक बजैत छी? अधीर होइत पंकज कहलनि। अबियौ, अहाँक स्वागत अछि। ऊपर आएल जाए। हम दुनू त'विपत्ति मे फँसले छी, दू सँ तीन होयब त' निश्चिते बल भेटत।

वीर बाबू आ पंकज दुनू कात सँ पंडित राज शेखर दत्तक दुनू हाथ धेलनि। ओ ऊपर बरामदा पर अयलाह। ऊपर एलाक बादे हुनक आकृति स्पष्ट भेल। पचपन-साठिक बयस, छः फीट लम्बा, एखनहुँ स्वस्थ आ गठल शरीर, सशक्त ताहि पर भव्य मुखमंडल, चौरगर ललाट, पैघ-पैघ आँखि, गौरवर्ण, छिड़ियायल, भीजल आ कान तक कैँ झंपने कारी-कारी केश। अत्यन्त आकर्षित कर' बला व्यक्तित्व आ पीठ पर लटकल थैला।

पंडित राज शेखर दत्त चारूकात नजरि दौड़'लनि। स्थान शहरक एक छोर। दू-तीन बीघाक प्लॉट। कट्ठा, दू कट्ठाक टुकड़ी। प्लॉटिंग कएल। ईंटाक छहर दिवाली सँ घेरल। कोनो प्लॉट मे नींव पड़ल, कोनो-कोनो मे लिंटन तक बनल घर। बेसी खालिए मुदा अहि प्लॉट मे पूरा दू-मंजिला भवन बनि क' तैयार छल। हरेकृष्ण ताँती एक्सक्यूटिभ इन्जीनियर अपन पिता सीताराम ताँती लेल मकान बनबौने छलाह। सम्प्रति सीताराम ताँती अपन पत्नीक संग अयोध्या गेल रहथि। ओही मकानक आउटर हॉउस मे तीन जन, विनय कुमार, वीर बाबू तथा पंकज रहैत छलाह। वीर बाबू आओर पंकज पढ़ाइ समाप्त क' विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाक तैयारी मे रहथि। विनय कुमार जमीन जथ्थाबला लोक। हुनक विवाह भ' गेल रहनि आ दू बर्खक एकटा बेटा सेहो छलनि। शहर मे नाना तरहक काजक सम्पादन हेतु ओ एकटा ठौर बनौने रहथि। मकान बनेबा काल सीमेन्ट, बाउल, लोहाक छड़ तथा आन-आन वस्तु राख' लेल जे घर बनैत अछि सैह भेल आउटर हाउस। आउटर हाउसक नींब बहुत नीचा रहैक। तैँ बाढ़िक पानि ओकरा डुबा देबाक लेल आतुर छल।

सभ किछु देखि पंडित राज शेखर दत्त बजला—ई बरामदा आ कोठली कखनहुँ पानि मे डुबि जेतैक। एतय रहब उचित नहि।

—मुदा पंडित कका, सामने बला दू मंजिला घरक गृहस्वामी त'ताला लगा क' अयोध्या गेल छथि।

—एहन आपादकाल मे जीवन रक्षार्थ जँ ताला तोड़ल जेतैक त' निश्चय ओ पाप नहि हैत?

तीनूक विचार मिलि गेलनि। तीनू एकत्र भेलाह। सभ कियो फांड़ बन्हलनि। ताला टूटल। पोर्टिकोक उपरका छत्तबला हन्ना मे चौकी, कुर्सी, बिछौना, कपड़ा-लत्ता, किताब-काँपी अर्थात सभ किछु उघि-उघि ऊपर भेल। चापाकल डुबल नहि छल। एक बाल्टी जल, जग, गिलास आदि झाँपि क' राखल गेल। पंडित कका अपन थैला सँ एक बैटरी चालित डिबिया निकालि क' जरौलनि। रोशनी कम, मुदा रातिभरिक इजोतक व्यवस्था भेल। आब किछु भोजन भ' जेतैक त' उत्तम। एकरो निदान भेल। पंडित कका अपन थैला सँ पॉकिट निकालि क' कहलनि—हम भोजन क' चुकल छी। अहि पॉकिट मे रोटी, तरकारी आ मिठाइ अहाँ दुनू लेल पर्याप्त होयत।

भोजन पर्याप्ते टा नहि सुस्वादुओ छल। वीर बाबू आ पंकज भोजन केलनि, जल पिलनि आ प्रसन्न होइत चौकी पर स्थान ग्रहण केलनि। मोन निफिक्र होइतहि, खुराफात करबे करत। किछु ने किछु मोनक मांग होइते रहैत छैक। घड़ी मे आठ बाजल रहै। वीर बाबू कृतज्ञता प्रदर्शित करैत पंडित कका सँ कहलनि—अहाँक आगमन देवता स्वरूप भेल। प्राण बाँचल। अन्यथा हमरा दुनूक की होइत से नहि जानि। पंडित कका, अहाँ प्रणम्य छी, हम अहाँ कैं प्रणाम करैत छी।

आगाँ पंकज बजलाह—अहाँ सँ मात्र एक घड़ीक संग अछि। मुदा एना बुझना जाइत अछि जेना जन्म-जन्मांतरक परिचय होअय। सभ तरहें निश्चिन्त भेलहुँ। मुदा जेहन परिस्थिति छैक ओहि मे निन्न पड़ब ने संभव आ ने उचित। एहन बाढ़िक पाला एतुका लोक कैं कहिओ ने पड़ल रहैक। ताइ पर सँ एकर उद्दण्डता प्रतिक्षण बढ़ले जा रहल छै। कखन की हेतै से ककरो ने बुझल छैक। तखन रतिजग्गा कर' लेल अपने सँ एकटा निवेदन। अहाँक ऐला सँ हम दुनू उपकृत भेलहुँ अछि। हमर ई सोचब अछि जे अहाँ साधारण लोक नहि विशिष्ट व्यक्तित्वक स्वामी छी। तैं अपने सँ आग्रह जे अहाँ अपन जीवन मे घटल कोनो सुरुचिपूर्ण घटनाक वर्णन करियौक जाहि सँ मोनो लागल रहए आ रातिओ कटि जाए।

—हम एकर अनुमोदन करै छी। तत्काल वीर बाबू बाजि उठला।

बैटरी बला डिबियाक अति क्षीण इजोत मे पंडित राज शेखर दत्तक चेहरा आलोकित भ'रहल छलनि। पंडित ककाक सानिध्य मे वीर बाबू आ पंकज चिंता मुक्त आनन्द मे मग्न रहथि। टिपिर-टिपिर बुन्न पड़ि रहल छलै। जल कण मिश्रित

हवा मे सिहरन व्याप्त रहै। स्थिर आबाज मे पंडित कका बाजब शुरू केलनि—मनुक्ख पृथ्वी पर बटोही बनि अबैत अछि आ जीवन यात्रा समाप्त क' मरि जाइत अछि। अनगिनत घटना ओकर जीवन मे घटित होइत छै, मुदा ओकरा मोन राख' बला ओ असगरे। तखन त' एतबे ने कहबै यौ जे खिस्सा शुरू भेल आ खतम भ' गेल। ककरो सुनबै बला सामग्री कहाँ बँचै छै।

पंडित ककाक कंठ सँ निकलल खनकल ध्वनि मे व्यंग्य रहैक जे जीव मात्रक जीवनक सार्थकता पर प्रश्न चिन्ह लगा देलक। पंडित कका एक क्षण लेल चुप रहला आ फेर कह' लगला—मुदा अहाँ दुनू निरास नहि हौउ। अहाँ दुनूक आग्रह आ प्रतिकूल परिस्थितिक अनिवार्यता, से ठीक। हम अपन जीवन मे घटल सभ सँ रोमांचकारी घटनाक वर्णन खिस्साक रूप मे करब। मुदा हमर शर्त अछि। हमर शर्त एतबे जे अहाँ दुनू एकरा ध्यान सँ सुनिये। निन्न पड़ि जैबे अथवा औंघेबै त' कथा भंग भ' जेतैक। एहना परिस्थिति मे हमरा दुःख होयत, नीक नहि लागत। बाजू, शर्त मंजूर अछि?

तत्काल सावधान होइत दुनू शर्त मंजूर केलनि। देव-तुल्य पंडित कका कँ कोनो तरहक दुःख देब ओ दुनू कथमपि नहि चाहलनि।

पंडित कका कहब आरम्भ केलनि—नैनीताल शहर सँ लगभग दस-पन्द्रह किलोमीटर उत्तर, पहाड़ आ तालक पृष्ठभूमि मे एकटा विशाल एंग्लो-इन्डियन स्कूल छैक। स्कूलक भवन एवं छात्रावासक सीमा पार शिक्षक लोकनिक लेल पहाड़क ढ़लाउ आ तलहट्टी मे छिड़ियायल एतय-ओतय आवास बनल छै जे दूर सँ देखला पर एना लगैत छै जेना पंक्षीक खोंता जहँ-तहँ लटकल होइक। ओही शिक्षकक आवास मे सँ सकटा आवास मे हमर मित्र हरिहर प्रसाद सपरिवार रहैत छलाह। हुनकहिं आग्रह पर हम नैनीताल गेल रही। ई बहुत साल पहिलुका गप्प थिक। ओहि काल हमर बयस कमे छल, बुझू पच्चीस-छब्बीस बर्खक। ओत' पहुँचि हमरा जीवन मे एहन विस्मयकारी घटना घटित भेल जे हमर जीवन कँ धो-पोछि क' राखि देलक। हम जखन ई कथा कहब त'अहाँ दुनूक विश्वास डगमगा जायत। ई कथा हम आइ तक ककरो कहने नै छियैक। आब अहाँ दुनू एकरा विश्वास करी अथवा नै करी, मुदा जखन कहब शुरू केलहुँ अछि त' बिना परबाहि कयने कथा कहबे करब, रूकब नहि।

हम जाहि दिन नैनीताल पहुँचल रही कोनो अप्रत्यासित आयल सूचना दुआरे हमर मित्र सपरिवार अपन जन्म-भूमि लेल प्रस्थानक तैयारी मे छलाह। हमरा देखि हमर मित्र प्रसन्न भेलाह, अपन विवशता प्रगट केलनि आ हमर घुमक्कर प्रवृत्ति कँ जनितहुँ हमरा सँ शपथ करौलनि जे अगिला पन्द्रह दिन तक जाबे कि ओ घुमि

क' अओताह नहि, हम ओतहि रहब। हम सहर्ष ओतए रहए लगलहुँ। खेबा-पीबाक आ आन सुख-सुविधाक सभटा इन्तजाम रहैक।

पहाड़ मध्य विशाल घाटी, घाटी मे दूर-दूर तक पगडन्डी, उज्जर-कारी मेघ सँ छाड़ल आकाश, शीत सँ बोझिल भेल पवनक प्रियगर झोंका, जामुन-जमुनीक गाछ सँ घरेल आ जमुनिआँ रंग सँ लबालब भरल झील, चारूकात देवदारक घनघोर जंगल, जंगली फूल सँ पाटल धरती, झुण्डक-झुण्ड पहबा नामक चिड़ैक विचरण, सभ किछु कैँ देखैत, आनन्द एवं उन्मत वातावरण मे हमर दस दिन कोना बीति गेल से हम किछु ने बुझलियै। एगारहम दिनक गप्प थिक। हँ, ओही दिनक गप्प छी जे हमर स्थिर जीवन कैँ हिलकोरि क' राखि देलक।

ओहि दिन सभ दिन जकाँ सकाले उठि हम कीचेन मे जा एक कप चाह बनौलहुँ। फेर एकटा ऊनी शाल सँ देह झाँपि चाहक कप नेने कॉटेजक बाहर बरामदा पर राखल आरामकुर्सी पर बैसि रहलहुँ। कार्तिक मास रहै आ पहाड़ी स्थान दुआरे ठंडक बेसी रहै। पहाड़क शिरा बर्फ सँ भरि चुकल छलै। सम्पूर्ण घाटी मे प्रभात कालक लालिमा पसरि गेल रहै। मेघक एकटा उज्जर टुकड़ी हमर कॉटेजक नीचा घाटी मे एमहर-ओमहर छिड़िया गेल रहै। पक्षीक' झुण्ड चराउरक लेल धरती पर ठुमकि रहल छलै। सभटा दृश्य ततेक ने नयनाभिराम छलै जे हम मगन भेल ओकर अवलोकन क' रहल छलहुँ।

ककरो नजरि हमर बामा कपाल मे सुल्फा भोंकि रहल छै तेहन सन अनुभव भेल। बामा कात घुमि गेलहुँ। सटले एकटा दोसर कॉटेज रहै। ओकर आगाँ थोड़ेक समतल भूमि छलै जाहि मे फुलायल फूल सँ लदल अनेकों छोट-पैघ गाछक पतियानी रहै। ओही फूलक गाछक मध्य एकटा युवती ठार छलीह। ओस सँ भीजल हरियर-हरियर दुभि पर ठार युवतीक सर्वांग शरीर उज्जर वस्त्र सँ झाँपल छलनि। लाल-लाल फुदनाबला ओढ़नी युवतीक गरदनि पर झुलि रहल छलै। युवतीक चेहरा गोल, आँखिक ऊपर भौं सीटल, माथक केश जूड़ा मे लेपटाओल, दुनू कान मे झुलैत झुमका आ सूर्यक लालिमा सँ रंगल गाल आ ठोर अत्यधिक आकर्षित क' रहल छल। युवती परम सुन्दरी छलीह आ अपलक हमरा दिस देखि रहल छलीह। हुनक तकबाक अन्दाज मे गजब के उत्तेजना भरल छलनि। हमर शरीर झनझना उठल। मस्तिष्क तन्तु मे पीपही बाज' लागल।

हमरा नारीक सौन्दर्य मे एखन तक रुचि नहि भेल छल। अविवाहित रही आ कहिओ सुन्दर युवतीक कल्पना तक नहि कयने रही। मुदा जनिका हम देखि रहल छलहुँ ओहि मे हमर जिज्ञासा, हमर कौतुहल कैँ एना ने जगा देने छल जे हम अचैन भ' गेलहुँ। करेजक धड़कन कान मे पहुँचि गेल। ध्यान देबाक एक खास

बात रहैक। ओ रहै हुनक ताकब मे अलबत्त कैँ पैनापन जतए लज्जा अपनहि लजा क' कतहु प्रस्थान क' गेल छलीह। सौन्दर्यक मल्लिका किछु काल धरि अनवरत हमरा दिस देखैत रहलीह। हुनकर नजरि हमर आँखि सँ मिलि एक अनजान आ नवीन भावक जन्म द' रहल छल। ओ जेना किछु कहि रहल छलीह तकरा हम बुझि रहल छलहुँ, तेना बोध भेल। किछु कालक उपरान्त मोहिनी स्वरूपा युवतीक नजरि नीचा खसलनि। हल्लुके हल्लुक चलैत ओ सामनेक कॉटेज मे प्रवेश क' आँखिक परोछ भ' गेलीह।

सामनेक दृश्य ओहिना रहि गेल छलै, मात्र हमर आँखिक पटल पर बनल चित्र सँ युवती लुप्त भ' गेल रहथि। हम सचेत भ' आरामकुर्सी सँ उठि ठार भेलहुँ। फेर हड़बड़ाइत बरामदा सँ नीचा उतरि, उभर-खाभर रस्ता कैँ पार करैत ओहि स्थान पर पहुँचलहुँ जतए किछु क्षण पूर्व मनमोहिनी ठार छलीह। एकाएक नाक मे एकटा अति विशिष्ट सुगन्धि प्रवेश केलक। मोन कैँ मुग्ध क' देलक। हम सकांच भेलहुँ। चारूकात फूलक गाछ रहैक। ई अनुपम सुगन्धि ओही फूल सँ त' ने अबैत अछि? प्रत्येक गाछक फूल कैँ सुंघल। ई त' फूलक सुगन्धि नहि छियै, तखन छियै की?

मनुक्ख कैँ पाँच ज्ञान इन्द्रिय होइत छै से बुझल छल। इहो धारणा बनल छल जे नाक कमजोर इन्द्रिय अछि। मुदा एखन जे गंध हमरा नाक मे प्रवेश कयने छल, हमर धारणा कैँ बदलि देलक। आइ पता लागल जे गंध मे एतेक ने उत्तेजना होइत छैक जे ककरो बताह बना सकैत अछि। सत्य कहै छी जे ओहि अलबेला सुगन्धिक कारणे हम मस्त भ' गेलहुँ, आतुर भ' उठलहुँ आ हमर समस्त चेतना ओहि युवती मे समर्पित भ' गेल। अहाँ दुनू सँ पूछै छी जे ओहि अजीब सुगन्धिक कोनो टा अन्दाज क' सकैत छी?

वीर बाबू आ पंकज कथा सुन' मे ध्यानस्थ छलाह। पंडित ककाक प्रश्न सुनि चौंकि उठलाह। दुनू किछु बाज' चाहलनि, मुदा शब्द हुनक कंठ सँ बाहर नहि आयल। बाहर अन्हार दिस देखैत पंडित राज शेखर दत्त स्वयं जवाब देलनि– बैशाख-जेठक गर्म लूक भीषण ज्वाला सँ दग्ध भेल धरती पर जखन बर्खाक पहिल बौछार पड़ैत छै त' माटि सँ सोहनगर सुगन्धि निकलि चहुँदिशि पसरि जाइत छैक, गंगाजल मे मिश्रित दूध, अच्छत, मिसरी, चानन, बेल पत्र आ फूल मिलल महादेवक निर्माल मे सेहो अपूर्व सुगन्धि रहैत छै, कंसार मे धीपल बालु मे भूजल अरबा चाउरक सुगन्धिक की वर्णन होए, बिहुंसैत अबोध बच्चा कैँ दुलार कर' काल सेहो नाक मे मधुर सुगन्धि स्पर्श करैत छै। तकर बादो आन-आन सुगन्धिक हम अखियास कयल। मोन पड़ल कस्तुरीक गंध। मुदा सभटा वृथा भेल। कतबो ने कल्पना कयल मुदा ओतय जे सुगन्धि रहैक से बुझू अकल्पिते रहल।

सुगन्धि हेतु मोन मे एहन गहन विचार किएक आयल? ओहि ठामक पसरल अपूर्व आ अपरिचित सुगन्धि हमर मस्तिष्क मे हलचल मचा देने छल। बेबस भेल मोन मे बड़ी टा महत्त्वाकांक्षा जनमि गेल छल। सृष्टिकर्ताक चमत्कार, ओहि युवती कैँ एक बेर आरो देखी तकर प्रबल अभिलाषा मोन कैँ बेचैन बना देने छल। जाहि कॉटेज मे परी देशक राजकुमारी अदृश्य भेल रहथि ओतय पहुँचलहुँ। आहि रे, ई की? कॉटेजक गेट मे ताला झुलि रहल छलै।

अगिला पाँच दिन तक सकाले उठि बरामदा मे जा क' ठार होइ आ ओहि स्थान कैँ निहारी। मुदा ओहि बालाक दर्शनक कामना पूर्ति नहि भेल। पहिल बेर जीवन मे किछु नीक लागल छल, बड़ नीक लागल छल। मुदा सभटा मनोरथ अकारथ भेल। ओहि अप्रतिम सौन्दर्यक प्रतिमा कैँ हम फेर सँ नहिए देखि पौलहुँ।

समय पर मित्र सपरिवार वापस भेलाह। एक दिन आरो रहि हम ओहि स्थान सँ वापस भेलहुँ। भोर सँ सांझ, सांझ सँ भोर, दिन, सप्ताह, महिना होइत-होइत बर्ख बीति गेल। नैनीतालक संचित अभिलाषा समयक संग धूमिल होब' लागल। मोन ओहुना बिचारलक जे सभ किछु भ्रम त' ने छल। पहाड़ी स्थानक छलावा सेहो भ' सकैत अछि? मौज-मस्ती मे डूबल मोनक कल्पनाक अतिरिक्त एकर दोसर नाम देब ठीक नहि होयत। मोनक निशा क्रमशः समाप्त भ' गेल। हम ओहि फूल कुमारी कैँ नीक जकाँ बिसरि गेलहुँ।

बैशाखक मास। भोरहि सँ गर्म हवा लू बनि बहब शुरू कयने छल। हम समस्तीपुर स्टेशनक ओभरब्रीज पार करैत सात नम्बरक प्लेटफार्म पर नई दिल्लीक ट्रेन पकड़' लेल जा रहल छलहुँ। नई दिल्ली सँ हरिद्वार होइत ऋषिकेशक कोनो आश्रम मे एक मास तक प्रवास करब, सैह विचारने यात्राक हेतु प्रस्थान कयने रही। ओभरब्रीज पर तेजी सँ पार करैत जा रहल छलहुँ, कारण, गाड़ीक प्रस्थान कर'क समय भ' गेल रहैक। एकाएक नैनीताल मे देखल, ओही मनमोहनी युवती कैँ विपरीत दिशा सँ अबैत देखि ठकमका क' ठार भ' गेलहुँ। सम्पूर्ण गत्र झनझना उठल। पयर पुलक तख्ता मे सटि जाम भ' गेल। एक बूढ़ मनुक्ख लगभग अस्सी-पचासी बर्खक, जवानी मे पहलवान छल हेता तेहन काया, पाकल मोंछ आ भौं, लाल-लाल डेराओन आँखि तथा कोयला सन कारी रंगक चोंगा पहिरने आगाँ-आगाँ, हुनक पाछाँ असबाब उठौने दू टा कुली, तकर पाछाँ वैह युवती। नैनीताल मे देखल ओहिना सफेद वस्त्र पहिरने, लाल बूटेदार ओढ़नी ओढ़ने आबि रहल छलीह। ओ सोझे हमरा आँखि मे टकटक देखैत डेग उठा रहल छलीह। हम ओभरब्रीजक कतबहि मे निश्चल, निरुपाय आ निर्लज्ज ठार ओहि युवती कैँ अचम्भित भ' देखि रहल छलहुँ।

एतेक खिस्सा कहि पंडित राज शेखर दत्त चुप भ' गेलाह। वीर बाबू आ पंकज कथा सुन' मे डुबि गेल रहथि। विराम होइते दुनू अकचका कँ उठि चौकी पर बैसि रहला। फेर तीव्र जिज्ञासा सँ दुनू पंडित कका दिस तकलनि जेना कहि रहल होथि—चुप नहि हौउ पंडित कका। आगाँ कहियौ की भेलै। ओहि युवतीक प्रति हमरो सभहक प्रबल आकर्षण बढ़ि गेल अछि।

पंडित कका दीर्घ सांस लेलनि आ कथा कहब शुरू केलनि—युवतीक मंडली हमरा लग, हमर बगल मे पहुँचि गेल। कारी वस्त्रधारी बूढ़ मनुक्ख आ दुनू कुली आगू भेल। युवती ठीक हमरा बगल मे एलीह। हमर आँखि मे देखैत सावधानी आ चालाकी सँ एकटा लिफाफ नीचा खसा बक्र नजरिए हमरा देखलनि आ फेर लिफाफ दिस तकलनि। हुनक भाव कँ बुझि हम लिफाफ उठा लेलहुँ। तत्काल युवतीक मोती सन दाँत चमकि उठलनि, ठोर बिहुँसि गेलनि आ आँखिक भाव एहन भ' गेलनि जेना ओ हमरा धन्यबाद कहि रहलि होथि। आँखिक भाषाक अलगे शब्द, अलगे अर्थ आ अलगे भाव होइत छैक जे हृदय मे गहींर तक जा कील ठोकि दैत छै। तहिना हमरा संग भेल छल। युवती आ हुनक मंडली ओभरब्रीजक बामाकात बनल सीढ़ी पर नीचा उतरि आँखि सँ परोछ भ' गेलीह।

हम घुमि क' एक नम्बर प्लेटफार्म पर आबि एक खाली ब्रेंच ताकि बैसि रहलहुँ। लिफाफ खोलल। टुह-टुह लाल रंगक कागत मे कारी-कारी आखर। गम गम करैत वैह नैनीताल बला सुगन्धि। बुद्धि तर्क करैत छै, तेरिज करैत छै आ तखन कोनो विचार कँ स्थिर करैत छै। मुदा जँ बुद्धिए भ्रमित भ' गेल होए, बेबसआ लाचारबनि गेल होए त' की हेतै? सुगन्धिक चर्चा हम पहिनो क' चुकल छी आ फेर एखनो कर' लेल बाध्य छी। ओहि बताह बनब'बला सुगन्धि दुआरे हमर बुद्धि नैनीतालो मे हरण भ' गेल छल आ एखनो भ' रहल छल। हम मन, बचन आ कर्म सँ ओहि युवतीक दासानुदास बनि चुकल छलहुँ। नई दिल्ली की जायब, आब पहिने चिट्ठी पढ़ियौ। उत्कंठित भ' चिट्ठी पढ़ब शुरू कयल।

प्रिय शेखर,

मदति चाही तँ पत्र लिखलहुँ अछि। आगू-आगू बूढ़ सन जे मनुक्ख गेल अछि ओ कापालिक थिक। कापालिको मे ई अघोर पंथीक तामसी पूजा केनिहार तांत्रिक अछि आ एकरा अनेकों सिद्धि प्राप्त छै। स्वभाव, प्रवृत्ति आ आचरण सँ ई धूर्त, दुष्ट आ मक्कार अछि। हम पूर्णतः एकर कैदी छी। अगिला अमावस्याक बाद तंत्र मार्गक विधि-विधान सँ ई हमरा पत्नी बनाओत आ भोग करत। तकर किछु महिना बाद ई हमर भैरवीक आगाँ बलि द' देत। अनेकों सुन्दरि कन्याक बलि एकरा हाथे पड़ि चुकल छैक। जकरा ई डाकनी, योगिनी, प्रेतनी बना क' अश्लील

आ वीभत्स तंत्रक होम-जाप क’ अपन अभीष्ट पूरा करैत अछि।

अहाँ हमर मदति कोना करब से सुनू। हमर गाम चननपुरा मे हमर बाल-सखा एवं प्रेमी गोवर्धन रहैत अछि। गोवर्धन साहसी, बलबान आ हमर प्रेम मे माँतल अछि। पुजारी बाबा सँ प्राप्त मंत्र-सिक्त अष्ट धातुक सिद्धि बला मट्ठा ओकर हाथ मे छैक। विशम्भरी माताक मंत्रायल हाथी दाँत बला कबच ओकर गरदनि मे झुलै छैक। तेँ गोवर्धन अहि कापालिकक तंत्र प्रहार सँ परे अछि। अहाँ गोवर्धन केँ हमर सोचनीए स्थितिक सूचना देबै। ओ हमर सहायता कर’ लेल शीघ्र तैयार भ’ जायत।

अहाँ गोवर्धन केँ चिन्हबै कोना? गामक पूब मे सघन आम्र कुंज आ तकर सटल बड़ी टा परती मैदान भेटत। हजारो गाय आ तकर बाछा एवं बाछी केँ चरैत देखबैक। अही स्थान पर अहाँ केँ भेटताह गोवर्धन। गौर वर्ण, ऊँच कद, औंठिया कारी-कारी केश, चेहरा पर देवताक सुन्दरता, दाहिना हाथक पहुँचा लग लहसुनियाँक दाग आ सभ सँ पैघ चेन्ह जे हमर वियोग मे तरासल पाषाण मूर्ति बनल उदास कोनो गाछक डारि पर बैसल। सैह भेलाह हमर गोवर्धन।

गोवर्धन केँ हमर सभटा अता-पता देबनि। कहबनि जे ओ अमावस्या सँ दू दिन पहिनहि अहि शहर मे आबथि। कापालिक दिवा-राति होम करैत अछि। तेँ ओहि मकानक ओ खोज करथि जतए होमक धुआँ आकाश मे जाइत होइक। अहि तरहें ओ मकान केँ ताकि लेताह जतय हम कैद छी। अमावास्या तिथि मे कापालिक भरि राति श्मशान मे रहैत अछि। कापालिकक अनुपस्थिति मे रात्रिक दोसर पहर बितला पर गोवर्धन एतय आबि बाँसुरी बजाबथि। बाँसुरी मे विहगक ओ धुन बजबथि जकरा सुनला सँ एहन अनुभूति होइत छै जेना कोनो चंचल नदी सागर मे डुबैत काल अन्तिम आबाज दैत होइक–हमरा बचा लिअ। हम त’ डुबि रहल छी। बाँसुरीक धुन मे डुबैत नदीक चीत्कार सुनि हम बुझि जेबै जे हमर प्राणनाथ आबि चुकल छथि। हम कहुना ने कहुना गोवर्धन लग अवस्से पहुँचि जायब। अहि तरहें हमर प्राण बाँचि जायत।

चननपुरा गाम जेबाग मार्गक ब्योरा अहि चिट्ठीक पृष्ठ पर अंकित अछि। शेखर! हमर अटल विश्वास अहाँ मे ओहि सीमा तक अछि जतय तर्क शून्य भ’ जाइत छै। अहाँ हमर प्राण रक्षाक सहयोग मे विवश आ सहायक अवस्से हैब, ताही आशा मे,

चिर ऋणी,

स्वेता

चिट्ठी पढ़ि पंडित कका चुप भ’ गेलाह। मुदा चिट्ठीक शब्दक मर्म केँ बुझि

पंकज अपन विह्‌वलता कँ रोकि नहि पौलनि। ओ निसांस छोड़ैत बजलाह—आह! पंडित कका संगे धोखा भेलनि। स्वेताक हृदयाकाश मे त’ पहिने सँ कोनो आन प्रेमी स्थान ग्रहण कयने छल। सत्ये, पंडित ककाक सभटा मनोरथ ध्वस्त भ’ गेलनि। हमरा तकर दुःख अछि।

पंकजक प्रलाप कँ रोकैत वीर बाबू कहलनि—यद्यपि पंडित ककाक कथा मे रोइयाँ भुटकाब’ बला रोमांच भरल छन्हि, मुदा बहुतो बिसंगति सेहो छन्हि। स्वेता पंडित ककाक नाम सँ परिचित कोना भेलीह? हुनका कत’ सँ अधिकार भेटलनि जे ओ पत्र मे निवेदन नहि क’ आदेश निर्गत केलनि? तँ हमर कहब अछि जे एखन तक कथाक स्वरूप फरिछ नहि भेल अछि। नीक त’ होयत जे हम आ अहाँ चुपचाप रहि कथा सुनैत रही। सुनियै जे आगाँ की भेलै।

बिजलौका छिटकि रहल छलै। झमाझम बर्खा बरसि रहल छलै। कने काल तक पंकज कोंकियाति रहलाह, वीर बाबू बरबराइत रहलाह। मुदा पंडित कका निर्लिप्त आ निःशब्द बनल रहला।

2.

थोड़ेक विश्रामक उपरान्त पंडित राज शेखर दत्त खिस्सा कहब फेर सँ शुरू केलनि—बीर बाबूक कहब उचित छन्हि। जे भेलै ताहि मे विसंगति भरल छलै। नैनीताल मे स्वेता कैँ देखब, हुनक आलोपित होयब, अजीब सुगन्धि दुआरे हमर बेमत्त होयब, स्वेताक फेर सँ समस्तीपुर स्टेशन पर प्रगट होयब, लिफाफ खसायब, चिट्ठी मे हमर नामक सम्बोधन करब, हमरा अधिकार सहित आदेश देब तथा हमरा पर अटूट विश्वास करब, सभ किछु असामान्य रूपे अटपट जकाँ छल। मुदा अहि खिस्सा मे हम जिलहुँ आ मरलहुँ अछि। तँ हमरा लेल किछुओ विसंगति नहि रहल।

एमहर पंकजक कहब छन्हि जे स्वेता हमरा संग धोखा केलनि, कथमपि उचित नहि। स्वेता हमरा संग किछुओ धोखा नहि केलनि। ओ गोवर्धनक प्रेमिका होथु आ की कापालिकक भोग्या, हमरा ऊपर कोनो फर्क होब' बला नहि छल। स्वेताक प्रति हमर आकर्षण अति पर पहुँचि गेल छल, तकरा प्रेमक संज्ञा सेहो देल जा सकैत छल। प्रेम मे त' मांग किछु होइते ने छै। होइत छै समर्पण। आब त स्वेताक प्राण बचेबाक प्रश्न आबि गेल छल, हुनका बलि-वेदी सँ बचेबाक काज छल। तँ बुझू चननपुरा जेबा लेल हम उद्धत भ' गेलहुँ। चिट्ठी मे रस्ताक संकेत देले रहैक। हमर पहिल पड़ाव धर्मकांटा नामक स्थान छल।

बस स्टेण्ड पहुँचि पता केलहुँ। एक गोटे सँ पूछलियै। ओ कहलक—की कहली धर्मकांटा जाइबला बसक खोज मे बौआ रहली हेएँ। देखिऔ, बसक कतार मे लोहाक ढोल जकती मुंह-कान बला बस, हँ, हँ, उहे जायत। कब खुलत? कितना टेम भेल हेएँ? ठीक एक घंटाक बाद सात बजे खुलत। की पुछली, धर्मकांटा कब पहुँचत? सीरीमान, रौआ इहाँ फैल क' गेली। खुलक टेम बता सकै छी, पहुँचत कब तकर इनक्वायरी महावीर मंदिर मे होत। पवनसुत त्रिकालदर्शी छथ, हुनका सभ जानकारी हनि। हम त' मनुक्ख हती।

जर्जर स्थित मे बस, ताहि पर लिखल रहै सुपर फास्ट। खिड़की लगक सीट

भेटल। बस जखन खुजल आ मुख्य सड़क पर आयल त' एक कात एना ने झुकलै जे हम डेरा क' सीटक हथ्था पकड़ि लेल। हे राम! बस त' कखनहुँ उलटि जेतै? मुदा भय केनिहार हम एसगरे रही। आन-आन सभटा मुसाफिर निफिकिर रहथि। झुलैत बसक आनन्द लैत सभ कियो गप्प-सप्प कर' मे व्यस्त भ' गेल छल। हमहुँ सहज भ' स्वेताक प्रियगर छवि कैँ हृदय मे अंकित क' आत्म विभोर होब' लगलहुँ। तखने पछिला सीट पर बैसल नव दम्पतिक वार्तालापक स्वर कान मे पड़ल।

पत्नी—अहाँ कतेक निष्ठुर छी यौ। हम रंज भ' क' नैहर चलि गेलि रही। अहाँ तीन मास धरि कोनो खोज-खबरि नै कैलहुँ। दुःख आ चिन्ताक पहाड़ तर हम समय कोना क' बितेलहुँ से हमही जनैत छी।

पति—रंज कर' लेल के कहलक?

पत्नी—सुनियौन हिनकर गप्प। रंज करब वा नै करब अपना बस मे छै? ओहुना रंज करब, रूसब-फूलब त' सिनेहक नाकक बुट्टा थिकै। पति-पत्नीक मधुर सम्बन्ध बनल रहै, ओकर नवीकरण होइत रहै, तैँ ने भगवान एकर इन्तजाम कयने छथिन्ह। तकर ई अर्थ थोड़बे भेलै जे कठोर बनि पत्नी कैँ बिसरिए जाइ।

कने काल चुप रहि पति जवाब देलनि—पछिला तीन मास मे की-की भेलै, हम कोन-कोन नगरक यात्रा केलहुँ, सभटा सुनबै तखन भाँज लागत जे हम ने निष्ठुर छी आने कठोर। मात्र भविष्यक प्रति जागरूक छी, जिम्मेदार छी।

पत्नी—फरिछा क' कहबै तखन ने हम बात बुझबै।

पति—त' सुनू। अहाँक नैहर गेलाक दू दिन बादक गप्प छियै। दलान पर चुपचाप बैसल रही। दुलार कका सोर पाड़लनि। एकांत मे ल' जा क' कहलनि—बिआह केल' नीक केल'। आब अगिला जिनगी पर ध्यान दहक। खेती-बाड़ीक उपजा केहन होइत छै से त' बुझले छह। भैया तोहर बिआह करा देलथुन, निश्चिन्त भेलाह। फिकिर तोरा करैक छह। नहि त' धरा जेबह आ दुर्गति मे पड़ि जेबह। पत्नीक खर्च, काल्हि धिया-पूता हेतह तकर खर्च कत' सँ अनबहक? बाप सँ मंगबहुन त' ओ कपार ढाहि देथुन्ह। तैँ हमर विचार जे कोनो नौकरी-चाकरी ताकह। दुलार कका जे कहलनि से हमर आँखि खोलि देलनि। वैह एकटा चिट्ठी देलनि। हुनक पितिऔत सारक दौहित्र बम भोला बाबू गुजरात राज्यक सूरत शहर मे कार्यरत छथि। मुजफ्फरपुर मे ट्रेन धेलहुँ आ तेसर दिन सूरत शहर पहुँचलहुँ। बम भोला बाबू बड़ आदर-सत्कार सँ रखलनि। दौड़-बरहा क' दरबानक जगह पर नौकरी रखा देलनि। ताबत अखन सुक्खा अठारह सय मासिक भेटत। अगिला एक तारीख सँ नौकरी शुरू हैत। तैँ सूरत सँ घुमि कैँ आबि अहाँक बिदागरी करा क' गाम ल' जा रहल छी।

फेर पत्नी की कहलखिन से जामे सुनितहुँ तामे बसक अन्दर दोसर बबंडर ठार भ' गेलै। बसक पछिला सीट पर हल्ला भेलै। एक नवयुवक एक बूढ़ सन व्यक्ति कैँ हाथक गफ्फा सँ गरदनि चपने आ घिचैत-तिरैत आगाँ आनि रहल छल। बस यात्री मे सँ कियो पूछि देलनि—ई बूढ़ अहाँक पॉकिट मे हाथ देने छलाह जे एना दुर्गति कयने छियनि?

नवयुवक हुनका किछु जवाब नहि द' जिनकर गरदनि मरोड़ने रहथिन्ह तिनका सँ आवेश मे पूछलनि—अहाँ ओहि महिलाक पीठ पर हाथ किएक देलियै?

—महिला वै-वै करब शुरू केलनि। हमरा भेल जे ओ कहूँ वमन ने क' देथि। हुनका वमन नहि होए तैँ हुनक पीठ सहलाब' लगलहुँ।

—अच्छा! ओहि महिलाक संग पुरुष पात नहि छलै की?

—छलै त' सभ। मुदा हम सभ सँ पहिने दया-भाव सँ द्रवित भ' उठलहुँ आ तत्काल हुनक परिचर्या आरम्भ क' देलहुँ।

—दया भाव आ की लफन्दरी भाव हौउ कक्का?

—भातिज हेब'। अहि तरहक भाषाक प्रयोग करब तोरा लेल अनुचित आ अशोभनीय छह।

नवयुवक आँखि तरेरैत बजला—गाम पहुँच' हौउ कका। भातीजक मुक्का जखन पीठ पर पड़तह तखन गामक शोभा बनिह'। अषाढ़क पिल्ला नहि तन।

पहिने जे यात्री हुनका टोकने छलथिन, भभा क' हँसि देलनि आ कहलनि—बसक यात्रा त' वर्तमान सभ्यताक दर्पण थिकै। बूढ़ कने भासि गेलाह मुदा छथि अही माटि-पानिक मे। बूढ़ कैँ बकसि दिऔन। लिअ तमाकू खाउ।

नवयुवक तमाकू कैँ ठोर पर रखैत बजला—आब अहाँ कैँ सविस्तार सभटा गप्प कहै छी। कचहरी मे मोकदमा खुजल अछि। गबाह चाही। गाम कैँ के कहए, इलाका छानि बैसलहुँ, गबाह नहि भेटल। तखन हिनक उचक्कपनी बला स्वभाव कैँ जनितहुँ कहलियनि—संच-मंच गबाही देब त' नीक-निकुत भोजन करा क' एक सय टाका सेहो देब। हिनका ल' क जखन बिदा भेल रही त' गाम भरिक लोक चेतौने छल—आफदक संग जा रहल छह। बिनु गारि-मारि खेनहि जँ घुमि अबिह त' हनुमानजी कैँ सवा टकाक लड्डू चढ़ा दिहौन। भोरका कचहरीक हालत त' बुझले हैत। हाकिम नहि बैसलाह। तारीख पड़ि गेल। करितहुँ की? अहि हरशंखा कैँ खुऔलहुँ आ जखन नहि मानलक त' दू टाका बला पाँच गोट रसगुल्ला सेहो गिरेलहुँ। तखन बस लग पहुँचले रही कि मोन पड़ल जे कंटिरबी लेल कफक दबाइ लेबाक अछि। हिनका कहलियनि—कका, हमरो सीट छेकि क' बस मे बैसू। हम दबाइ कीनि तुरंते अबैत छी। घुमि क' बस मे आबि हिनका ताकब शुरू केलहुँ।

ई हमरा लेल सीट की रखितथि? ई भेटला बसक सभ सँ पछिला जनानी सीट पर। हम सावधान हिनके लग ठार भ' गेलहुँ। हिनका पर नजरि गरौने रही, किएक त' हिनकर बगलबला सीट पर एकटा महिला बैसल रहथि। बात भेलै एतबे। ओ त' सुकुर भेलै जे हिनका हम शुरुए मे तीर लेल। नहि त' हिनका संगहि हमरो गिंजन भ' जाइत।

बसक आन-आन यात्री संगहि हमहुँ ओहि युवकक गप्प सुन' मे कान पथने रही। एतबे मे कान लग कन्डक्टर भोमिंया उठल—भाड़ा निकालू, जल्दी करू। कन्डक्टरक समूचा शरीर सरंगपताली छलै। हरबाहाक पैना जकाँ पातर मुदा सोंटल। ओ पैजामा आ कलर बला गंजी पहिरने छल। गंजीक पाछाँ दिस कोनो अर्धनग्न फिल्मी हिरोइनक फोटो छापल रहै। कन्डक्टर माथक जुल्फी कँ झटका देलक, फेर सीटक उपरका बल्ला कँ ठोकैत बाजल—हँ, हँ मालिक लोकनि, झटपट किराया निकालू।

हमर सीटक अगिला सीट पर एकटा कमे उमेरक युवक बैसल रहथि। किराया दैत, चटपट-चटपट करैत ओ कन्डक्टरक कान मे फुसफुसाइत कहलनि—कन्डक्टर जी, ओमहर तकिऔ। हँ, हँ वैह यौ, जनिका गरदनि मे तीन भत्ता कंठीक माला छन्हि, ठरका चानन मे सेनुरक ठोप कयने छथि, बस, बस वैह। हमरे गामक थिकाह आ नाम छन्हि दुखमोचन। पचास बीघा खेतक मालिक, लाखो टकाक लगानी-भिरानी। एक छोड़ि एक दर्जन संतानक पिता। नित्य मोकदमा काजे दरिभंगा जेबे टा करताह, मुदा बस मे भाड़ा कहिओ ने देलनि। अहाँ अइ लाइनक नव कन्डक्टर छी तँ चेता देलहुँ। पुरना सभ कन्डक्टर हारि-खींज क' थाकि गेल। देखा चाही अहाँ बुते किराया असूल होइए की नहि।

कन्डक्टरक मुंह खिखिरक बील जकाँ गोल भ' गेलै। आँखिक ऊपर घनगर भौं नमरि क' एक दोसरा मे सटि गेलै। ओ डिम्हा कँ उनटाबैत ओहि कंठीधारी पसिन्जर कँ निहारैत मुंह सँ सीटी बजौलक। पहिरल गंजी कँ बांहि लग मरोरैत ओहि चटपटिया पसिन्जर सँ बाजल—नीमन केली जे हमरा कह देली। हम त' दरभंगा-पटना मेन रोडक कन्डक्टर छी। एक बेरुक गप्प कहै छी। ठीक भगवानपुर सँ पाव भरि जमीन पहिने आठ-दस बबुआन बस कँ रोकबा, हमरा ध'क' नीचा खिंचलथिन आ दनादन मुक्का बरसाब' लगलथिन। बुझू दस-पन्द्रह मिनट तक ओ सभ एके साथे हमरा मुकिअबैत रहलथिन। एमहुरका उसना चाउर आ बैगनक तीमन खायबला पिद्दी लोक जाहित नै। गहूम आ मकइक आंटा पचबै बला' पहलमान टाइप बबुआन। खैर, ओ सभ थक कँ हमरा छोड़ देलथिन। हम खड़ा भेली, फाटल कुर्ता कँ झारली, फेनो बस खुलै कँ सीटी मारली।

आब संयोग कहिऔ आ की हमर तकदीर। बस मे रघु बाबू बैसल छलथिन। की कहली रघु बाबू कँ चिन्हैत नै हतियनि? अरे! रघु बाबू अपन प्रान्त कँ बस सम्राट। कोन रोड एहन मिलत जतए हुनकर बस दौड़ैत नै मिलत। इहो बस त' हुनके हनि। रघु बाबू हमरा लग मे बजा हमर पीठ ठोकलथिन आरो सबासी दैत कहलथिन–आइ तोहर लोहा मानि गेलिऔ। तोहर टक्कर कँ कन्डक्टर बिहार कँ के कहए इन्डिया मे मिलब कठिन। आज से तोहर पगार मे पचास टाकाक इनाम जोड़ा गेलौ। आब अहाँ बोलू, हमरा सन कन्डक्टर जकरा डबल लाइसेन्स होइ तकरा कोन सार किराया नै देत?

कन्डक्टर फेर सँ अपन जुल्फी कँ झटका देलक आ धनुषक डोरी जकाँ देह कँ तनलक। चटपटिया यात्री हाथ कँ समेटि कोरा मे रखलनि आ मंसूबा मे चारूकात तकलनि–लगैए सभ दिन मोन रह' बला सीन आब देखबाक अवसर भेटत।

दुखमोचन कँ टीकक स्थान पर सफाचट रहनि। टीक ठीक दू आँगूर नीचा फहराइत रहनि। सफाचट बला स्थान मे कन्डक्टर कॉल-बेल दबौलक। दुखमोचन अकचकाइत पाछाँ तकलनि। कन्डक्टरक रौद्र रूप देखि भय सँ हुनक गात ओहिना थर-थर काँप' लागल जेना खिसियाह गुरुजी कँ देखने स्कूलक चटिया कँ होइत छैक। दुखमोचन कल जोड़ने ठार भेलाह आ कलपैत बजलाह–कन्डक्टर बाबू, हम अत्यन्त गरीब छी। खेबाक उपाय नहि अछि। अधिक काल भुखले सूति रहै छी। हमरा पर दया करू।

–बेसी बोलैक काम नै है, चुपचाप किराया निकालू।

–सैह ने कहैत छी। हम कुकराहा गाम तक जायब।

–कुकराहा जाउ आ की गिदराहा, हमरा कोनो मतलब नई है। भाड़ा होल बीस टाका। भाड़ा दू नहि त' चलती बस सँ बाहर फेंक देब।

–किछु रियाति नहि हेतै? हमर दयनीय आ सोचनीय अवस्था पर अहाँ विचार करियै। हम लाचार छी, नै त' ढ़ौआ देबा मे किनहुँ आनाकानी नहि करितहुँ।

पहिने सँ रिसिआयल कन्डक्टरक आब तांडब शुरू हैत। नाटकक पर्दा उठ' काल जेना लोकक पल खसब बिसरा जाइत छैक तहिना बसक यात्री सभ उत्सुक भ' कखनहुँ दुखमोचन कँ त' कखनहुँ कन्डक्टर दिस ताक' लागल। दुखमोचनक दुर्गति होति देखि चटपटिया मुसाफिरक बत्तीसो दाँत बाहर निकलि गेल छलै।

मुदा सभटा पसिन्जर मुंह बौने रहि गेल आ करमसांढ़ दुखमोचन किराया दै सँ बाँचि गेल। ओही काल बसक पछिला सीढ़ी पर लटकल क्लीनर खूब जोर सँ बस मे थाप मारलक आ चिचियाति बाजल–जुलूम भेल कन्डक्टर मालिक। पछिला बमरिया चक्का कनेकाल पहिने सँ सुसुआइत छल से सार पूरा मुंह बाबि देलक हेएँ।

कन्डक्टर दुखमोचनक पिसैया करक लेल उताहुल छल, से हड़बड़ा गेल। मुंह मे सीटी राखि जोर सँ सीटी बजौलक आ चिचिआयल–ओस्ताद! गाड़ी मे ब्रेक मारह। चक्का पंचर भ' गेल'।

डगमगाइत कहुना क' बस रुकल। बस कैँ ठार होइते एक-एक क' पुरुष पसिन्जर नीचा उतरि अनुशासित सिपाही जकाँ पतियानी मे मूतब शुरू केलनि। ड्राइभर, क्लीनर आ कन्डक्टर चक्काक मुआयना मे लागि गेला। हम अपन सीट पर बैसले रहलहुँ। बस मे बहुत मनोरंजन भेल छलै। ओहि मनोरंजन मे विभिन्न व्यजंनक स्वाद रहैक। यात्रा महक श्रम आ कष्ट, कोनो टा अनुभव नहि भेल छल।

हमरा बगलक सीट पर एकटा प्रसन्नचित युवक बैसल रहथि। ओ एकटक हमरा दिस देखि रहल छलाह। हमहुँ हुनका दिस ताकल। ओ चोटहि कहलनि– बंधुबर, अहाँ धर्मकांटा तक जायब। हमहुँ ओही ठाम तक जायब। जँ मुख्य सड़क छोड़ि एक पेरिया पकड़ि ली त' धर्मकांटा मुस्किल सँ आध कोस। बस कैँ ठीक होब' मे घंटो लगतैक आ संभव जे तकर बादो ठीक नहि होइक।

युवकक सुझाव पसिन्न भेल। एकपेरिया पकड़ि बिदा भेलहुँ। युवक यद्यपि अपरिचित छलाह मुदा चौकन्ना भेल हमरा बगल मे अहि तरहें चलि रहल छलाह जेना ओ हमर बडीगार्ड होथि। ओही बस सँ उतरि दू गोट आरो पसिन्जर हमरा दुनू सँ थोड़ेक हटल पाछाँ-पाछाँ आबि रहल छल। ओहि दुनू मे कड़क स्वर मे बहस भ'रहल छलै। कर्कश वार्तालाप सँ एहन बुझा रहल छल जेना दुनू मे मारा-पिट्टी ने होइक। हम आ हमर सहयात्री पाछाँ घुमि ओहि दुनू कैँ देख' लगलहुँ।

झगड़ा कर'बला दुनू यात्री एक दोसरा सँ एक लग्गा हटल आबि रहल छल। पछिला यात्री आगाँ बला कैँ चिचियाति कहलक–'हमर बहु ड्राइभर संगे उरहरि गेल तोँ से बजबें। तोहर एतेक टा मजाल? ठहर रौ सार, तोरा आइ जिबैत नहि छोड़बौ। अगिला पड़ायल आ पछिला खिहारलक। पछिलाक हाथ मे चमचमाइत बड़ी टा छुरा रहैक। रस्ता एकपेरिया रहैक तइयो हमर सहयात्री हमर बगल मे आबि गेल छला। आगाँ पड़ायल आब'बला व्यक्ति ठीक हमर तीन-चारि हाथ दूरहि एकपेरिया सँ ओंघरा क' खेत मे लुढ़कि गेल। छुरा बला व्यक्ति छुरा तनने दौड़ते रहल। ओकरा सोझ मे हम रही आ ओ हमर छाती मे छुरा भोकै लेल वृत्त भ' गेल। आब ओ हमरा छाती मे छुरा भोकि दैतेह, ठीक ताही काल हमर सहयात्री हमरा एक कात ठेल देलनि। हम खेत मे दोसर कात खसि पड़लहुँ। हमर सहयात्री पलटनियाँ लैत छुराबला व्यक्तिक पयर मे अपन पयरक प्रहार केलनि। छुराबला

मनुक्ख एकपेरिया रस्ताक ऊपरे लटपटा क' मुंहे भरे खसल। मुदा ओ अपन संतुलन केँ दुरुस्त करैत ठार भ' गेल आ खेत मे उतरि क' एक दिस भागल। आश्चर्य जे दोसर व्यक्ति जे पहिने सँ खेत मे ओंघरायल छल, सेहो उठि ओकरे पाछाँ दौड़' लागल। दस-बारह बीघा खेतक बाद गाछी छलै। दुनू गाछी लग पहुँचि ठार भ' पाछाँ घुमि हमरा आ हमर सहयात्री केँ किछु पल तक देखैत रहल आ फेर एकहि संग भ' गाछी मे विलीन भ' गेल।

सभटा तमासा एक दू मिनट मे समाप्त भ' गेलै। डरे हमर शरीर मे कँपकँपी सन्हिया गेल छल। कहुना क' हम ठार भेलहुँ आ खेत मे खसल बैग केँ पीठ पर लदलहुँ। एकपेरिया रस्ताक ऊपर आबि सहयात्री दिस तकलहुँ। हम अपन कर्त्तव्यक निर्वहन कयल' तेहन भाव सहयात्रीक चेहरा पर देखल। हमर प्राणरक्षक कहलनि—योजना बना क' दुश्मन आक्रमण कयने छल। हम सावधान छलहुँ आ दुनूक मंसा पहिने सँ भाँपि नेने छलियै। धर्मकांटा तक हम संगे रहब तँ कोनो चिन्ता नहि। अहाँ पर प्राणलेबा आक्रमण किएक भेल, तकर अंदाज लगायब कठिन। मुदा मार' बला सँ बचाब' बला सदिखन बलबान होइत अछि। खास क' हुनकर जे परसेवा भव सँ यात्रा कयने होथि। तँ हम मात्र एतबे टा विचार देब जे भय केँ त्यागि यात्रा केँ रोकू नहि, आगाँ बढ़ैत रहू।

सभटा घटना जे किछु काल पहिने घटल छल तकर जड़ि-छीप नहि रहैक। ओहि इलाका लेल हम पूर्णतः नव लोक रही। हमर दुश्मन कियो किएक होइत? ताहू पर सँ हमर सहयात्री, ने जान ने पहचान। हुनक नामो तक नै बुझल छल हमर प्राण किएक बचौलनि? सहानुभूति नहि चाही, जवाब चाही। तर्कक कसौटी पर मात्र शून्य मे उत्तर छलै।

कनेकाल तक दुविधा मे ठार रहलहुँ। दुविधा ग्रस्त मोन केँ अजबे उलझन होइत छै। किछु निर्णय लेब मुस्किल। मुदा हम करितियैक की? ओहुना सहयात्री बल देलनि, सहयोग केलनि। हम धर्मकांटा दिस डेग उठौलहुँ।

यात्राक उद्देश्य की छल? स्वेताक प्राण रक्षा लेल हुनक सम्बाद केँ गोवर्धन तक पहुँचेनाइ। स्वेताक अधीर भेल छवि हमर हृदय मे अंकित छल। मोन स्वेता मे नीक जकाँ समर्पित छल। मुदा एखन जे हमरा पर प्राणलेबा हमला भेल छल से हमर विश्वास केँ डगमगा देलक। समर्पण बला भाव तिरोहित होब' लागल, कने काल लेल धैर्य सेहो समाप्त होब' लागल छल। बड़ कठिने मोनक भाव केँ समेटलहुँ, पुचकारलहुँ आ ओकरा स्थिर केलहुँ। जे भेलै से भेलै। जे हेतै से देखल जेतै। स्वेताक लेल जिनगी न्योछाबर। रे मोन! आब त' स्थिर होअ।

3.

धर्मकांटा पहुँचि सहयात्री गुडबाय कहैत बिदा भ' गेलाह। घड़ी दिस ताकल। दुनू कांटा बारह पर रहै। धर्मकांटा नामक स्थान भरल-पुरल कस्बा छल। बाजारक दुनू कात पाँती लागल पक्का मकान छलै जाहि मे तरह-तरह बस्तुक दोकान रहै। पता चलल जे एतय सियाशरण झुनझुनबालाक साम्राज्य स्थापित छन्हि। व्यापार होए, रोजगार होए अथवा मनुक्खक जीवन कैँ प्रभावित कर'बला कोनो उद्योग होए, सभटा झुनझुनबाला एवं हुनक परिवारक स्वामित्व मे पसरल अछि। एक तरहें बुझल जाए जे हवा आ पानि पर सेहो ओही व्यापारीक अधिकार छलनि।

एकटा दोकान मे चाह-बिस्कुट खा क' एक थितगर सज्जन सँ प्रश्न कयल– बाबू साहेब, घेघिया जेबाक अछि। एकर मार्ग केमहर छैक? घेघिया जेबा लेल हमरा कोन सबारी भेटत?

ओ हमरा दिस एक क्षण तकैत रहि गेला। फेर ठोर पटपटबैत जवाब देलनि– अहाँ अहि इलाका लेल नव छी तैँ एहन अनर्गल प्रश्न पुछलहुँ हेएँ। घेघिया एतय सँ चारि कोसक दूरी पर अछि आ सबारी भेल दुनू चरणकमल। एकर माने भेल अहाँ कैँ घेघिया तक पैदल जाय पड़त, दोसर कोनो टा उपाय नहि। एतय सँ आगू सड़क नामक चेन्हो नहि भेटत। ई स्थान भेल कोशी, कमला, बलान, जीबछ, करेह आदि बहुतो नदीक नैहर। गंगा मे डूब' सँ पहिने ई तमाम नदी अहि स्थान कैँ जल सँ भरि दैत अछि। तीस-चालीस कोसक परिधि मे ई स्थान झील सदृश अछि। ठाम-ठाम पर टीला छै जतए गाम बसल अछि। बाढ़िक समय रहितैक त'अहाँ कैँ अही ठाम सँ नाव भेटि जाइत। मुदा एखन घेघिया तक सुखायल अछि। हँ घेघिया सँ आगू तक जाय चाहब त' ओतय सँ नाव भेटि जायत।

बजनिहार सज्जन उठि क' एक कात तमाकू थुकरलनि। फेर हाथ सँ इशारा करैत कहलनि–ई भेल पूब-दक्षिण कोण। फाँड़ बान्हू, जय सियाराम बाजू आ बिदा भ' जाउ। नवजवान छीहे, फुर्ती-फुर्ती डेग उठेबै त' सांझ तक घेघिया पहुँचि जायब।

स्वेताक चिट्ठी मे देल आदेशानुसार हमर दोसर मोकाम छल घेघिया। डगर धेलहुँ। टहकैत आकाश सँ गर्म-गर्म बसात टपकि रहल छलै। कपार चनक' लागल। पसीनाक टघार सँ पहिरल वस्त्र चिपचिपा गेल। जँ-जँ आगू बढ़ैत गेलहुँ गाछ-बृक्षक अभाव होइत गेलै। पसरल चौर मे कहै लेल बैल गाड़ीक लीखबला रस्ता, सेहो गरदा सँ झाँपल। सभ किछु बिकट आ तिरस्कृत।

मुदा तैँ की? हमर हृदय मे अनुराग भरल छल। हमरा लेल कोनो बाधा, बाधा नहि रहि गेल छल। हम त' स्वेताक समर्पित सेबक बनि चुकल छलहुँ। सभ तरहक त्याग आ बलिदान लेल तैयार भ' गेल रही। स्वेता सँ प्रेम भ' गेल छल से बाजब अनुचित होयत। मुदा मोन मे महमही त' छले। गरदा मे पयर रोपै काल माटिक सिनेहक अहसास होइत छल। स्वेताक आदेश पूर्ति करबाक उत्साह ततेक ने जबरदस्त छल जे मोन कैँ कोनो बाधा, कोनो कष्टक परबाहिए ने छल। उड़ैत चिड़े कैँ देखि मोन ओकरा सँ पूछ' लागए—तोँ चननपुरा गेल छह? गोवर्धन कैँ देखने छहक? सही मे की गोवर्धन देखै मे तरासल मूर्ति जकाँ सुन्दर छथि जनिका स्वेता सनक प्रेमिका भेटलनि? आह! ईर्ष्या नहि कर'। खराब बात। हौउ, पृथ्वी पर मनुक्ख अपन नसीब ल' क' जन्म लैत अछि, कियो सिकन्दर बनैत अछि त' कियो हरमोनियम मास्टर। मुदा ईहो सत्य जे सुख-दुख दुनूक हिस्सा मे बरोबरि।

आधा कोस रस्ता पार कयने होयब की एकटा मोड़ भेटल। मोड़ लग बामा घुमतहि टायर गाड़ी कैँ देखलियै। गाड़ी ठार छलै। ओहि वीरान रस्ता मे टायरगाड़ी देखने ओहने आश्चर्य भेल छल जेना दरिभंगा मे ऊँट देखने होइत। लोभ भेल। आशा जागल। डेग नमहर केलहुँ। टायरगाड़ी लग पहुँचलहुँ। बहलमानक स्थान पर बैसल महानुभाव कैँ देखि मोन पुलकित होब' लागल। ओ हमरे दिस ताकि रहल छलाह। टायरगाड़ी पर माल-असबाब लादल रहै जे त्रिपाल सँ झाँपल छलै। बहलमानक स्थान लग छाँह लेल कपड़ाक झाँपन टाँगल रहै। बहलमान जी बड़दक रासि पकड़ने रहथि। मन्द-मन्द मुस्कैत कहलनि—गाड़ी घेघिया तक जेतैक। हम अहाँक हित चिन्तक छी आ अही लेल टायरगाड़ी कैँ ठार कयने छी। ऊपर आबि जाउ।

बहलमानजीक वाणी मे ततेक ने आवेश छलनि जे मोनक सभटा दुविधा ताहिखन समाप्त भ' गेल। अपरिचित बहलमानजी सँ परहेज करब जरूरी नहि बुझायल। हम टायरगाड़ी पर चढ़ि हुनके बगल मे स्थान ग्रहण कयल। तत्काल एहन सन लागल जेना प्रचंड गर्मी सँ निकलि सिसकैत पीपरक शीतल छाया मे पहुँचि गेलहुँ अछि। बहलमानजीक भेष मे कोनो महान व्यक्तिक सानिध्य मे आबि गेल छी तकरो बोध भेल। कारण ओहि भद्र पुरुषक शरीर सँ विसर्जित होइबला

ऊर्जा मे ममता रहै, करुणा रहै। एकहि क्षण मे हम आनन्दधाम मे पहुँचि गेल रही। मोन निर्मल भ' गेल रहैए।

बहलमानजी दुनू बड़द कैँ चुचकारैत गाड़ी हकलनि आ बिना हमरा दिस तकनहि प्रश्न केलनि—यात्राक उद्देश्य की अछि?

की जवाब दिअनि? भीतर हृदय मे त' गंगोत्री सँ गंगा निकलि क' बहि रहल छलीह। अनायास मुंह सँ जवाब निकलल—हम के छी तकर पता लगेबाक लेल यात्रा केलहुँ अछि। सत्य मे, हम अपना कैँ चिन्ह चाहैत छी।

हमर उत्तर सुनि बहलमानजी हमरा दिस तकलनि। हुनक सपाट चेहरा मे कतहु विस्मय नहि छल। ओ शून्य नजरि सँ हमरा देखैत पुनः प्रश्न केलनि—जतबा प्राप्त अछि ताहि मे संतोष नहि अछि?

—संतोष कत' सँ भेटत। संसारिक जीवनक इच्छा, आनन्द। एकक पूर्ति भेल आ की दोसर इच्छा ठार भ' गेल। तखन त' अभाव बनले रहैत छैक। मुदा एखन हम ओहि तरहक अभाव सँ मुक्त छी। अहाँक सानिध्य मे अबिते हमर हृदय कूप मे छटपटाइत जिज्ञासा बेकल भ' बाहर आबि गेल हेएँ। अहाँ सँ परिचय नहि अछि। परिचय चाहबो नै करी। अहाँ सक्षम छी, योग्य छी तकर विश्वास एकाएक भ'गेल हेएँ। तैँ अहाँ हमरा बुझा दी जे हम के छी, की छी, किएक अहि संसार मे कुदि-फानि रहलहुँ अछि?

एतबा बाजि पंडित राज शेखर दत्त एक-एक क' वीर बाबू आ पंकज कैँ कहलनि—बहलमानजी सँ हम एहन प्रश्न किएक कयल तकर समुचित कारण नहि बता सकैत छी। हम हुनक सत्संग सँ सम्मोहित भ' गेल रही। हमरा अपन ऊपर अधिकार नहि रहि गेल छल।

वीर बाबू पंडित कका कैँ उत्तर देलनि—अहाँक खिस्सा मे अलौलिकता एवं रोचकता भरल अछि। हम अहाँक उक्तिक खंडन-मंडन नहि करब। मात्र सुन' चाहब जे बहलमानजी अहाँक जिज्ञासाक जवाब की देलनि।

पंडित राज शेखर दत्त पुनः कहब शुरू केलनि—हम बहलमानजी कैँ फेर सँ देखल आ हुनक बयसक अन्दाज लगेबाक प्रयास कयल। सभटा निरर्थक। हुनक बयसक कोनो टा अनुमान करब कठिन छल। धोती, गोल-गला गंजी आ कन्हा पर गमछा। भव्य मुख मंडल आ गरदनि मे रुद्राक्षक माला। पैघ-पैघ दुनू कान, गठल शरीर आ ललाट पर ठोप। हुनकर दुनू आँखि स्थिर आ वाणी कोमल छलनि। किछु काल पहिने हमर आँखिक नोर सुखा गेल छल। ओहि आदर्श पुरुषक संगति मे फेर सँ आँखि मे पानि भरि आयल। ओ पानि जे जीवन थिकै, जीवनक हुलास थिकै।

बहलमानजी चुपचाप नजरि कँ सामने टिकौने रहथि। रस्ता सुनसान आ निर्जीब रहै। टायरगाड़ी अपन गति सँ चलल जा रहल छल। हम प्रश्न उपस्थित क' चुकल रही आ जेना कहबी छै 'खुल जा सिम सिम' तहिना आशा मे छलहुँ जे बहलमानजी अध्यात्मक खजानाक दरबज्जा खोलि देता आ संसारक सभटा रहस्य उजागर भ' जायत।

बहलमानजी बजला मुदा हमरा सँ नहि। दुनू बड़द कँ टोकरा दैत कहलनि– माधव आ तिलकेसर, दुनू सावधान भ' कहब सुन'। प्रश्नकर्ताक प्रश्न तँ दुनू सुनि चुकल छह। हिनक प्रश्नक उत्तर देब साधारण बात नहि छैक। हम तकर प्रयास करब आ ताहि मे तलीन भ' जायब। अहि टायरगाड़ी पर सेठ सियाशरण झुनझुनबालाक अन्न लादल छैक जकरा सेठ बनबारीलालक घेघियाक गद्दी तक पहुँचेबाक छैक। दुनू सेठ धर्मात्मा छथि आ धर्मक आज्ञा सँ अहि उजरल इलाकाक लोक-सेवा मे कार्यरत छथि। रस्ता त' उटपटांग छइहे। सेठक मालक नोकसान नहि होइ से हमर जिम्मेदारी अछि। तँ तँ दुनू हमर सभहक वार्तालाप सुनितो रहिह' मुदा सतर्क रहिह'। तँ दुनू हमर कहबाक आशय बुझि गेलहक, से ने कह'?

दुनू बड़द अपन गरदाम मे बान्हल घंटी कँ एना टुनटुनौलक जाहि सँ स्पष्ट भ'गेल जे दुनू बड़द बहलानजीक कथन कँ बुझि गेल। आब बहलमानजी हमरा दिस घुमैत कहलनि–अहाँक बयस एतेक नहि भेल अछि जे अहाँ ईश्वरक माया कँ उचित तरहें बुझि सकी। तकरा संगहि जाबे हम सभ घेघिया पहुँचब ततबे समयो अछि। तँ संक्षेप मे हम अहाँक प्रश्नक उत्तर देब। अहाँ सँ आग्रह जे सहज भाव सँ जेना कि गप्प-सप्प होइत छै तहिना एकरा सुनियैक। अधिक गम्भीर होयबाक प्रयोजन नहि छैक।

सहमति मे हम अपन मूड़ी डोललहुँ। बहलमानजी कहब शुरू केलनि–दयाक मूर्ति बनल अथवा दुष्टक सम्राट बनल लोक अहि धरती पर विचरण करैत अछि। प्रत्येक जीव मायाक अधीन अछि। माया सँ उत्पन्न भेल कर्त्तव्यक निर्वहन मे अहुछिया कटैत अछि। ककरो एको क्षणक विश्राम आ फुर्सति नहि छैक। बेहाल भेल जिनगी मे एक मात्र सत्य जे एकटा विश्वासक परिधि मे सभकियो चक्कर कटैत अछि। ओ विश्वास की अछि? एक अदृश्य महान शक्ति छथि त' निश्चिते जनिका पर नीक आ बेजाय सभ विश्वास करैत अछि। ओ अदृश्य शक्ति भेलाह विधाता। आब विधाता सँ सम्पर्क राखक लेल लोक पूजा-पाठ, तीर्थ-यात्रा, दान-पुण्य, कीर्तन-भजन सभ किछु करैत अछि। मुदा विकराल भेल ओकर अहंकार ओकर मति मे सदिकाल भ्रान्ति भरने रहैत छै जाहि कारणें ओ अपना कँ कर्ता आ अपन शरीर कँ अपन परिचय मानि लैत अछि। अही अहंकार दुआरे

मनुक्ख लाचार, निरर्थक, दिशाहीन बनल अज्ञानता मे बौआइत अछि। सत्य एकरा सँ परे छैक। संयोगहि ककरो आश्चर्य होइत छै आ जिज्ञासा जगैत छै—आरो बाउ! हम छी के? संसार मे की क' रहलहुँ अछि? की जन्म सँ पहिने आ मृत्युक बादो कोनो संसार छैक? जकरा मे अहि तरहक जिज्ञासा जागृत होइत छै ओकरा व्याकुल हैब स्वाभाविके छैक।

मनुक्खक अही व्याकुलता कैँ अहाँ प्रश्न बना क' हमरा समक्ष उपस्थित केलहुँ अछि। अहि प्रश्नक उत्तर अध्यात्मक विषय थिक। अध्यात्म अन्वेषणक तीन गोट मार्ग छै, यथा प्रत्यक्ष, अनुमान एवं धर्म ग्रंथ मे संचित सूचना।

प्रत्यक्ष भेल जे किछु देखैत छी, सुनैत छी। अहि मे अन्तर्द्वन्द्व नहि छै। मुदा जीवनक रहस्यक एक छोट भाग हम प्रत्यक्ष मे देखैत छियैक। प्राप्त इन्द्रिय सँ सभ किछु कैँ देखब, सुनब सभवं नहि छैक। तखन बचल अनुमान आ धर्म ग्रंथक सही-सही विवेचना। एकरा लेल एहन व्यक्तिक आवश्यकता अछि जे योग्य होथि, जकरा मे अहाँ विश्वास क' सकी एवं हुनकर कहल कैँ अहाँ सत्य मानि सकी। हमरा मे ओ योग्यता अछि अथवा हमर कहल मे अहाँ कैँ पूर्ण विश्वास होअय ताहि लेल जरूरी अछि जे हम अहाँ कैँ अपन परिचय दी।

बहलमानजीक संयत वाणी मे गम्भीरता आबि गेल छलनि। ओ अपन परिचय दैत कहलनि—हम भेलहुँ कन्हाइ मंडल पिता जगदीश मंडल ग्राम दहनौनी, धर्मकांटा सँ थोड़ेक पश्चिम। गाम मे एक जन हजाम मास्टर जी रहथि। हुनकहि सँ ककहरा आ बिटगरहाक पाठ सिखलहुँ। हमर गामे नहि इलाकाक बहुतो लोक भदोही नामक स्थान मे जीविकोपार्जन करैत छलाह। भदोही सँ झुण्ड मे ओ लोकनि आबथि आ जाथि। ओहने एक मंडली संग हम भदोही पहुँचलहुँ। भदोही सँ आगाँ जंगल मे एकटा संस्कृत विद्यालय छलै। ओही विद्यालयक छात्रावास मे नौकरी भेटल। खेनाइ बनेबाक संगहि आन-आन काज, हमरा देल गेल। हम पूर्ण जिम्मेदारी सँ अपन काज कर' लगलहुँ। व्यवस्थापक हमर काज सँ संतुष्ट रहथि। भोजन, आवास, एवं किछु द्रव्य ओहि चाकरी सँ हमरा उपार्जन होब' लागल। समय पर बिआह भेल। पत्नी सेहो ओतहि आबि रह' लगलीह। पत्नी गृहकाज मे दक्ष छलीह आ हुनक स्वभाव मधुर रहनि। सभ तरहक सुख-सुविधा मे जीवन-यापन करैत रही। एक पुत्री सेहो जन्म लेलनि। रेशमा हुनक नाम छलनि। समय बितैत रहलैक। आब रेशमा पाँच बर्खक भ'गेल छली। ताहीकाल पिताक सम्बाद प्राप्त भेल। हमर माता मृत्यु सज्जा पर छलीह आ संसार त्याग सँ पहिने हमरा देखबाक हुनक इच्छा छलनि। हम अपन माता-पिताक एकलौता संतान, तेँ अपन माताक मृत्युकाल हमर उपस्थित होयब परम आवश्यक छल।

जाहि दिन गाम पहुँचलहुँ तकर दोसर दिन मायक देहान्त भेलनि। पिता कैँ थोड़ेक खेत-पथार रहनि आ यैह बैलगाड़ीक धन्धा। तैँ परिवारक आर्थिक स्थिति नीक छल। मायक श्राद्ध एवं दान-दक्षिणा नीक तरहें कयल।

ओहि दिन मायक द्वादशा रहनि। भोज-भात एवं पात्रक विधि-विधान सँ निवृते भेल रही कि बज्रपात भेल। आंगन सँ हृदय-बिदारक सूचना भेटल। हमर पत्नी कैँ साँप काटि लेलकनि। भरि राति ओझा-गुणी लग दौड़ैत रहलहुँ। मुदा पत्नीक प्राण नहि बचलनि, हुनक मृत्यु भ' गेलनि। मोन मे हाहाकार मचि गेल। एहन सन बुझायल जेना छाती मे गहींर तक बर्छी भोंका गेल होअय। बताह बनि भगवानक गोहारि केने छलहुँ-हे ईश्वर! आब हम जीब कोना?

मुदा तइ सँ होए की? मृत्योपरान्तक क्रिया त' करैए टा पड़त। पत्नीक चिता धधका क' आंगन आबि आगि, पानि, पाथर करिते रही कि बेटी रेशमाक चीत्कार सुनलहुँ। अखरा चौकी पर बैसलि हमर मातृविहिना पुत्री आर्त्तनाद क' रहल छलीह–बप्पा हौउ, बप्पा। एक पल लेल हम अपन पुत्री दिस ताकल। ओकर आँखिक पीड़ा मे पत्नीक धधकैत चिताक ज्वाला देखि हृदय धरकब छोड़ि देलक। चारूकात अन्हार भ' गेल आ हमर सुधि-बुधि समाप्त भ' गेल।

कन्हाइ मंडल आहत स्वर मे आगाँ कहैत रहला पत्नीक मृत्युक आघात कैँ सहब हमरा लेल कठिन छलै, ताहि पर सँ पुत्रीक दारुण दुख सँ आक्रोश करब हमरा विक्षुब्ध क' देलक। कान मे एकेटा स्वर सुनियैक–बप्पा हौउ, बप्पा। सुतल, जागल आँखि मे एकेटा दृश्य देखियैक, बेटीक भखरल चेहरा। बाँकी संसार सँ सभ तरहक सम्बन्ध टूटि गेल।

किछुए बर्खक बाद एक विलक्षण बात भेलैक। सदिकाल आँखिक सोझा रह' बाली रेशमाक करुणार्द छविक आकृति पैघ होब' लगलै। ओ आकृति सम्पूर्ण आकाश कैँ झाँपि लेलक। फेर रेशमाक छवि छोट होब' लगलै आ एक बिन्दु सदृश्य बनि आकाश मे स्थापित भ' गेलै। निस्तब्ध राति मे ओहि बिन्दु सँ लाल, पीयर, हरियर, बैगनी अर्थात विभिन्न रंगक प्रकाश कैँ झहरैत देखियैक। ताहि संग कान मे एकटा ध्वनि सुनियै, बेटी रेशमाक चीत्कार–बप्पा हौउ, बप्पा। अइ तरहें बारह बर्ख बीति गेल।

एक दिन मध्य रातिक समय मे नियमानुसार हम अपलक आकाश दिस ताकि रहल छलहुँ। चारूकात अन्हारे अन्हार रहैक। एहि अन्हार मे एक मात्र पुत्रीक छवि सँ बनल एकटा बिन्दु आकाश मे देखि रहल छलहुँ जाहि सँ रंग-बिरंगी किरण फुटि-फुटि क' झहरि रहल छलै। ओही काल एकटा ज्योति पिण्ड प्रगट भ' हमर पुत्रीक बिन्दु बनल छवि कैँ आकाश मे परिक्रमा करब शुरू केलक। सम्पूर्ण नभ

मंडल मे वृत्ताकार तेज रोशनी पसरि गेलै। हम बेसुधिक जीवन जीबि रहल छलहुँ। मुदा एकाएक हमरा मे चेतनाक संचार भेल। हम सकांच भेलहुँ। आश्चर्य सँ ओहि ज्योति पिण्ड कैँ निहार' लगलहुँ। ताही काल कान मे ध्वनि प्रवेश केलक–जागह! कन्हैया जागह!! हम महामाया तोहर अनजान मे कयल तप सँ प्रसन्न भेलहुँ। एकाग्रता मे ज्ञानक कुंजी छैक। पुत्र, तोहर एकाग्रता अपन चरम पर पहुँचि तोहर तप कैँ सफल क' चुकल छह। तौँ अपन जगत मे घुमि क' आबि जाह। तोहर पुत्री आ तोहर पिता कैँ तोहर सहायताक आवश्यकता छन्हि। हम तोरा एखन एकटा मंत्र देबौक। तौँ ओही मंत्रक जाप करैत रह' आ संसार मे रह'। तोरा सँ विधाता कैँ बहुतो काज करेबाक छन्हि। हुनकर आदेश तोरा समय-समय पर भेटैत रहतहु।

एतेक कहि महामाया हमरा कान मे मंत्र द' देलनि। हम संसार मे घुमि अयलहुँ। सदिकाल हम मंत्रक जाप करैत छी। हम कहिओ ने पूजा-पाठ कयने रही, ने शास्त्र-पुराण पढ़ने रही। हमरा ने कियो गुरु छलाह आ ने सत्संगक लाभ प्राप्त भेल छल। मुदा महामायाक दर्शन क' सभ किछु ओहिना हमरा प्राप्त भ' गेल। भगवतीक अनुकम्पा सँ हम ऋद्धि-सिद्धिक स्वामी बनि चुकल छी। हमरा ओ दिव्य दृष्टि अछि जे अहि संसारक तथा दृष्टि सँ परे सम्पूर्ण ब्रह्मांडक गतिविधि देखि सकैत छी, बुझि सकैत छी। पंडित राज शेखर दत्त, हम अहाँ कैँ चिन्हैत छी। जाहि प्रयोजन सँ अहाँ चननपुरा तकक यात्रा आरम्भ केलहुँ अछि से हमरा ज्ञात अछि। आब अहाँ हमर योग्यता सँ परिचित भ' गेलहुँ अछि। आब अहाँक प्रश्नक हम उत्तर देब।

4.

हम कन्हाइ मंडल कैँ पुछलियनि—अहाँक पुत्री रेशमा एखन कत' छथि? अहाँक बयस कतेक अछि?

ओ जवाब देलनि—हमर पुत्री रेशमा अपन चारिम पीढ़ीक दर्शन आ परिचर्या क' स्वर्ग गेलीह। हुनक संतति कतेको शाखा मे बँटि भारतक विभिन्न प्रदेश मे पसरल छन्हि। अहाँक दोसर प्रश्न हमर बयस सम्बन्धी अछि। प्राणक सम्बन्ध शरीर सँ छैक आ प्राणक दोसरे नाम भेल काल। प्राण पर अधिकार भेला सँ काल स्वतः अधिकार मे आबि जाइत छैक। परिणाम ई होइत छै जे आयु बढ़ल जाइत छैक मुदा कालक प्रभाव शरीर पर नहि पड़ैत छैक।

एकाएक ध्यान मे आयल जे हम कोनो पहुँचल संत सँ वार्तालाप क' रहल छीह। अस्तु, निरर्थक प्रश्न पूछब उचित नहि।

कन्हाइ मंडलक अमृत वाणी फेर सँ श्रवण करब आरम्भ कयल। ओ कहलनि— वेद, उपनिषद, पुराण, कपिलक सांख्य दर्शन, गौतमक न्याय दर्शन, जेमिनीक मीमांसा, शंकरक अद्वैत, रामानुजक द्वैत आ रामकृष्णक विशिष्टाद्वैत अर्थात जतेक चिंतन आर्यावर्त मे प्रस्तुत भेल अछि ओ एक मान्यता कैँ स्वीकार केलाक बादे अपन-अपन सिद्धान्त कैँ आरोपित केलनि अछि। सभहक सामूहिक मान्यता रहल अछि गीता मे कहल श्रीकृष्णक उक्ति। गीता मे कृष्ण कहैत छथि—हे अर्जुन ई जतबा सत्य जे जकर जन्म भेलै अछि तकर मृत्यु हेबेटा करतैक। तहिना इहो परम सत्य अछि जे जकर मृत्यु भेलै अछि तकर फेर सँ जन्म हेबेटा करतै। हे अर्जुन! अहाँ आ हम, सभ दिन छलहुँ, एखनो छी आ आगाँ सेहो रहब।

सोलह कलाधारी श्री कृ ष्णक उक्ति कैँ सत्य मानि 'हम के छी, किएक छी' नामक अहाँक प्रश्नक अन्वेषण करब ठीक रहत। जन्म-मृत्युक चक्कर सनातन सँ छैक आ आगाँ सेहो रहतैक। जन्म सँ मृत्युकाल तकक जीवन कैँ हम प्राप्त इन्द्रिय सँ देखैत छियैक। तैँ ओकरा सत्य मानैत छियैक। मुदा मृत्यु भेलोपरान्त आ फेर सँ जन्म काल तकक जीवन कैँ देखि नहि पबैत छियैक। तैँ ओकरा असत्य मानैत

छियैक। यैह भेल तकलीफक गप्प। बुद्धि द्वारा देल तर्कक अनुसारे गीताक बचन कैँ हम सेहो अमान्य क' दैत छियैक। ई त' आरो महा अनुचित भेल।

मानि लिअ कियो जगन्नाथ पुरी सँ अयलाह आ कहलनि जे कोना कैँ ओ समुद्र मे नहयला, कोना कैँ समुद्रक लहरि मे आयल शंख कैँ बिछलनि। अहाँ जगन्नाथ पुरी नहि गेल छी, समुद्र कैँ नहि देखने छियैक। त' मनहिमन अहाँ की सोचबै? अहाँ सोचबै जे ई केहन गप्पा अछि, झुठे टा बजैत अछि। आब फेरो मानि लिअ जे अहाँ कैँ जगन्नाथपुरी जेबाक सुअवसर भेल। तखन अहाँ कैँ सत्य सँ दर्शन होइत अछि। अहाँक संशय मेटा जाइत अछि। तहिना प्राप्त इन्द्रिय सँ मनुक्ख ब्रह्मांडक एक छोट भाग कैँ देखि पबैत अछि। मुदा मनुक्ख कैँ उर्वरा मस्तिष्क छैक। ओकरा चिंतन-मनन करैक असीम शक्ति छैक। मनुक्ख जँ चाहए त' आलस्य त्यागि, कनेटा परिश्रम क', सावधान भ' तर्क विहीन विश्वास कैँ भक्तिक परिधि मे पहुँचा परमेश्वर सँ ओ शक्ति आ क्षमता प्राप्त क' सकैत अछि जाहि सँ जीवात्माक मृत्योपरान्त भेल हानि-लाभ कैँ देखि सकैत अछि, बुझि सकैत अछि। तखनो ओकरा लेल किछुओ असत्य नहि रहतैक।

एतय हमर सहायक वेदान्त होइत अछि। आध्यात्मिक अन्वेषणक लेल वेदान्त दू गोट मार्ग बतौलक अछि। पहिल भेल बाह्य। भरल-पुरल वसुन्धरा, अनंत ग्रह, तारा, आकाश गंगा सभ तरहक ईश्वरी ऐश्वर्य देखि ओहि महान शक्ति मे अपन सम्पूर्ण समर्पण क' तादाम्य सम्बन्ध स्थापित करब। देसर भेल आन्तरिक अन्वेषण। हमरा अछि की? हमरा बास करक लेल एकटा शरीर अछि। जानकारी बढ़ेबाक लेल तथा पूर्ण ज्ञान प्राप्त करबाक लेल अपन शरीरक खोज-पुछारि करी।

शरीर आत्मा कैँ धारण कर'बला एकटा पिंजरा थिक। अहि पिंजरा मे छै की सभ? सात प्रकारक धातु जेना रस, रक्त, मांस, मज्जा, मेद, अस्थि एवं शुक्र सँ ई पिंजरा बनल अछि। पाँच कर्म कर'बला प्राण सँ ई ऊर्जा प्राप्त करैत अछि आ जीवित रहैत अछि। पाँच ज्ञान इन्द्रिय, पाँच कर्म इन्द्रिय, मोन, बुद्धि, तथा अहंकार, कुल तेरह अहि पिंजरा मे रह' बला जीवात्माक टहलू छैक जे सभ तरहक काज करैत अछि। मुदा एक गोट बात बुझलियै पंडित जी? मृत्युकाल शरीरक संगहि सभ किछु नष्ट भ' जाइत छैक।

कन्हाइ मंडलक कथन सुनि हम धरफराइत पुछलियनि—आहि रे बा! जखन किछु बचबे ने करैत छैक त' मृत्युक बाद श्राद्ध किनकर होइत छन्हि? स्वर्ग वा नर्क के जाइत छथि? फेर सँ जन्म किनकर होइत छन्हि?

अहाँक कहब यथार्थ अछि पंडित जी। जीवात्माक परिचय कायम राखक लेल कोनो एकटा सूत्र त' चाहबे करी जे मृत्युकाल नष्ट होइ सँ बाँचि जाइत अछि। तँ

हमरा लोकनि शरीरक फेर सँ अवलोकन करी आ ओहि तत्त्वक खोज करी जतय सँ सम्पूर्ण शरीर संचालित होइत अछि। हम आ अहाँ सम्प्रति गप्प-सप्प क' रहलहुँ अछि। तकर माध्यम की अछि? हँ यौ! ओ तत्व त' भेटिए गेल। गप्प-सप्प करैक माध्यम हमर अहाँक मोन अछि। एकर अर्थ भेल जे शरीरक सभ सँ मुख्य अंग अछि मोन। तेँ नीक हैत जे मोनक माध्यमे अपन अन्वेषण केँ आगाँ बढ़ाबी।

मोन भेल वस्तुगत ज्ञान प्राप्त कर'बला मुख्य अंग। मोन सभटा क्रियाक आधार। मोने केँ सुख वा दुःख होइत छैक। समस्त विचार केँ उत्पन्न कर' बला मोन थिक। उत्पत्ति भेल विचार केँ जँ विचारपूर्वक देखल जाय त' स्पष्ट होयत जे विचार स्वयं मोन थिक। मोन मे उत्पन्न विचार कल्पतरु सदृश अछि। पाप आ पुण्य, बंधन आ मुक्ति, स्वर्ग आ नर्क मोनहि मे समायल रहैत अछि। एतहि हम इहो जनलहुँ जे मोने स्थूल शरीर एवं मोने सूक्ष्म शरीर छथि।

जन्म काल मोन, प्राण आ आत्मा, तीनूक स्थान हृदय रहैत अछि। कनिए पैघ भेला पर बच्चाक नामकरण होइत छैक। नामधारी बच्चा केँ पुछियनि-अहाँ के छी? तत्काल हुनक मोन हृदय-स्थली सँ निकलि ललाट पर अपन स्थान बनबैत उत्तर देताह—आह! हमरा नहि चिन्हलहुँ? हम फलाँ छी। अहि तरहें जीवात्मा अपना केँ उत्तम पुरुष मे स्थापित क' अपन परिचय कायम क'लैत अछि। अत्यन्त समीप रह' बला सम्बन्धी केँ ओ मध्यम पुरुष मे स्थान दैत अछि। दूर मे रहनिहार त' उचिते अन्य पुरुष भेलाह। अहि तरहें प्रत्येक जीवात्मा मोनक माध्यमे अपन अलग परिचय एवं अलग संसारक निर्माण करैत अछि।

मोन जखन अपन पृथक संसारक निर्माण क' लेलक तखन ओकरा द्वारा कर्म करब अनिवार्य भ' जाइत छैक। मोन अपन परिचय एवं संसार केँ कायम राखक लेल कर्माधीन हेबेटा करत। आब जखन जीवात्मा कर्म केलनि तखन कर्मक भोग हुनका करहि पड़तनि। अहि कारणें जीवन-मृत्युक चक्कर शुरू भ' गेल। एतहि ज्ञान आ अज्ञान मे भेद सेहो प्रगट होइत छैक। ज्ञान मोन केँ आत्मा मे लीन राख' चाहैत छेक। मुदा अज्ञान मोन केँ आत्मा सँ विमुख क' अविवेकी बनबैत विषय मे आशक्त क' दैत छैक। आब जीवात्मा एकटा भ्रमक अपन संसार मे रहि कर्म-लिप्त भ' जीवन-मृत्युक बीच चक्कर कटैत रहैत अछि।

हम कन्हाइ मंडल सँ प्रश्न कयल—एतेक सामर्थ रखनिहार मोन अज्ञानता मे किएक फंसि जाइत छथि?

मंडल जी जवाब देलनि—कन्टीरबाक जन्म हेतै त' केथड़ी गनहेबे करतै। मोन केँ अपन परिचय प्राप्त करक लेल आत्म स्वरूप सँ बाहर आबहि पड़तनि। पूर्व जन्मक कर्म हुनक संस्कार बनि प्रगट हेबे करतनि। संसार मे लोभ-लिप्सा चहुँ दिस

पसरल छैक। इन्द्रिए दुर्बलता दुआरे मोन कैँ ओहि लिप्सा मे फंसैए पड़तनि। तेँ ने वेदान्त मुक्ति प्राप्त करक लेल पहिल शर्त रखलक अछि जे मोन अपना कैँ स्वतंत्र करथु।

हम फेर हुनका सँ पूछल—मोन परतंत्र छथि तकर की अर्थ?

कन्हाइ मंडल उत्तर देलनि—मोनक अतिरिक्त शरीर मे आरो बारह गोट इन्द्रिय छै ने यौ। मोन कैँ चाहियनि जे ओकरा पर शाासन करथि, अपन अधीन राखथि। मुदा यथार्थ मे होइत की छैक? मोने सभ इन्द्रियक चाकर बनि जाइत अछि। प्रत्येक इन्द्रियक मांगक पूर्ति हेतु मोन सदिकाल बेहाल रहैत अछि। तेँ कहल जे मोन स्वतंत्र नहि छथि।

—एकरा कने फरिछा क' कहियौ।

कन्हाइ मंडल कहलनि—ठीके मे मोन कोना परतंत्र छथि तकरा बुझक लेल एकटा खिस्सा कहैत छी, सुनू। सन्यास व्रतधारी भतृहरि एक दिन एक बाजार बाटे जा रहल छलाह। बाजार मे एक गोट हलुआइ शुद्ध घी मे हलुआ बना रहल छल। घीक सुगन्धि सँ बाजार गमागम क' रहल छल। सुगन्धि भतृहरीक नाक मे सेहो पहुँचल। अविलम्ब हुनक नाक आ जिह्वा मांग उपस्थित केलक। भतृहरि हलुआइ लग पहुँचि हाथ पसारि देलनि। हलुआइ हलुआक मूल्यक मांग केलक। भतृहरि हलुआइ कैँ कहलनि जे ओ संन्यासी छथि, मूल्य देबा मे असमर्थ छथि। हलुआइ बिना मूल्यक हलुआ देब' लेल तैयार नहि भेल। ओ भतृहरि कैँ सुझाव देलक—हौ संन्यासी, थोड़े आगाँ जाह। ओतए पोखरि खुना रहल छैक। ओतहि भरि दिन काज करिह'। संध्याकाल मेहनताना कैंचा भेटतह। कैंचा ल' क' अबिह तखन हम तोरा हलुआ देब'।

जतय पोखरि खुना रहल छलै ओतए भतृहरि पहुँचला। भरि दिन माटि माथ पर उठा-उठा क' फेकलनि। सन्ध्याकाल पारिश्रमिकक कैंचा भेटलनि। ओ हलुआइ कैँ कैंचा देलनि आ हलुआ प्राप्त केलनि। आब भतृहरि एक पात पर हलुआ आ दोसर पात पर गोबर ल' पोखरिक कात मे आबि क' बैसलाह। ओ हलुआक कौर उठा ठोर सँ सटा पोखरिक पानि मे फेकि देथि आ गोबर कैँ मुंह मे राखि लेथि। अहि तरहें कने-कने हलुआ कैँ ओ पानि मे फेकैत रहलाह आ गोबर उठा क' मुंह मे दैत रहला। जखन कनिकबे हलुआ पात पर बाँचल रहि गेल त' जीह्वा निहोरा केलक—सभटा हलुआ त' अहाँ पानि मे फेकि देलियै। आब जे कनिक रहलै अछि तकरा त' मुंह मे दिऔक जाहि सँ हमरा हलुआक स्वादक आनन्द भेटि सकय।

भतृहरि जिह्वा कैँ जवाब देलनि—तोहर बदमासी दुआरे भरि दिन हम छीट्टा मे माटिभरि माथ पर उठा क' फेकलहुँ अछि। कह त' हम संन्यासी, हमरा हलुआक

स्वादक कोन काज? हमरा प्राण रक्षार्थ एक मुट्ठी अन्न पर्याप्त अछि। तोहर टिटकारी मे पड़ि हम भरि दिनक परिश्रम आ समय व्यर्थ गमाओल। तेँ हम तोरा हलुआक स्वाद कथमपि ने लेब' देबौक। एतबा कहि भतृहरि बचलाहा हलुआ के पानि मे फेकि देलनि।

अहि खिस्सा सँ पंडित जी अहाँ कँ बुझ' जोकरक भ' गेल होयत जे कोना क' इन्द्रियक मांग होइत छैक आ कोना क' मोन ओहि मांगक पूर्ति कर' मे दास बनल रहैत अछि। तेँ ध्यान सँ सोचबै आ मोनक दुर्दशा कँ देखबैक त' पता चलत जे मोन इन्द्रियक मांग सँ एको पल लेल फुर्सति मे आबिए ने पबैत अछि। ओतबहि नहि, इन्द्रियक आरो तरहक करतब अछि।

मानि लिअ राति-बिराति कियो अहाँ कँ शोर पाड़लनि—पंडित राज शेखर दत्त छी यौ। ध्वनि अहाँक कान मे पहुँचल। कानक काज थिकै ओहि ध्वनि के शुद्ध रूप मे मस्तिष्क मे पहुँचा देब। मुदा से की भ' पबैत छै? केम्हरहु सँ खोंचरनाइ शुरू भ जाइत छैक—देखिह, सम्हरि कँ रहिह'। शोर केनिहार जेना बेगर्ते आन्हर छथि। हुनक बेगर्ताक पूर्ति मे अपन नोकशान नै क' लिह। भ' गेल, विचार मे विचार जोड़ा गेल। सम्वाद दूषित भ' गेल। मस्तिष्क मोन कँ जे सम्वाद पहुँचौलक ओ सम्वाद भ्रमित कर' बाला बनि गेल। मोन कँ निर्दोष सम्वाद कखनहुँ प्राप्ति होइतहि नहि छैक। तेँ शंकराचार्य कहलनि—जगत माया थिक। एतय मायाक अर्थ भेल कृत्रिम, अशुद्ध आ पूर्वाग्रह युक्त।

मानि लिअ, अहाँक सौभाग्य दुआरे दसो इन्द्रियक मायाजाल सँ अहाँ बाँचि गेल छी। तखन बुद्धि आ अहंकार अहाँक दुश्मन बनि ठार भ' जायत। बुद्धि त' ने माउग आ ने पुरुष। पूजा कर' जाउ त' बुद्धि फूलडाली नेने ठार। चोरि कर' जाउ त' ओ खंती नेने ठार। मुदा अहंकारक खिहार बड़ी दूर तक। पूजा लेल तैयार भेलहुँ आ आब मंदिर मे प्रवेश करब। मंदिर मे पूजा निमित्ते जेबा काल अहंकार कहत—अछिंजल लेलह, फूल-माला कहाँ छह, चानन घसबे ने केलह त' पूजा की अपन कपारक करबह। ई सर्वमान्य अछि जे पूजा काल ईश्वर पूजा केनिहारक निर्मल भावक अपेक्षा करैत छथि। मुदा मोन त' अहंकारक चक्रचालि मे फंसि गेल, बेकल भ' गेल, आ ईश्वरक प्रति समर्पणक भावक अभाव भ' गेल। एहन मोन सँ पूजा करब त' निरर्थके टा होयत। तेँ कहल जे, जे मोन शरीरक राजा थिक कखनो स्वतंत्र भइये ने पबैत अछि।

पंडित कका सँ एतेक कथा सुनि वीर बाबू चौकी सँ उतरि एमहर-ओमहर टहल' लगला। जखन हुनक मोन संयत भेलनि त' बजला—कन्हाइ मंडल कतउ होथि, हम हुनका प्रणाम करैत छियनि। ओ सत्ये कहलथिन जे मोन कखनहुँ

स्वतंत्र भैइये ने पबैत अछि। जाबे तक शरीर मे प्राण छैक, मनुक्ख कोनो ने कोनो काज पूर्ति करक लेल अहुछिया कटिते रहैत अछि। यैह कारण थिक जे मनुक्ख अन्हार सँ प्रकाश मे आबिए ने पबैत अछि।

ताहि काल पंकजक कोनो प्रतिक्रिया नहि छल। हुनक भाव-भंगिमा सँ ई स्पष्ट होइत छल जे ओ वार्तालापक विषय-वस्तु कँ बुझ' कँ प्रयास त' क' रहल छथि, मुदा बुझि किछुओ ने रहलाह अछि।

5.

पंडित कका वीर बाबू कैँ चौकी पर बैसक लेल इशारा केलनि। वीर बाबू बैसैत बजलाह–पंडित कका, अहाँक धर्मकांटा सँ घेघिया तकक यात्रा अत्यन्त नीक रहल। कन्हाइ मंडल सरल भाषा मे बुझा देलनि जे मोन स्वतंत्र नहि अछि। जखन मोन स्वयं सदिकाल ओझरायल रहैत अछि तखन ओ अपना कैँ कोना चिन्हत जे ओ के थिक। ओकर त' सभटा रस्ते बन्द रहैत छैक।

पंडित ककाक जवाब छल–अहाँक कहब सत्य अछि वीर बाबू। मुदा मोन कैँ स्वतंत्र करक लेल कन्हाइ मंडल सहज उपाय बतौलनि से सुनि लिअ। कन्हाइ मंडल कहने रहथि–मोन कैँ स्वतंत्र करक लेल सभ सँ उत्तम उपाय अछि सभ तरहक महत्वाकांक्षाक त्याग। हमरा जतबे अछि पर्याप्त अछि। अहि तरहक विचार मोन कैँ संतुष्टि दैत छैक। जनैत छियै पंडित जी, जकरा संतुष्टि भेटि गेलै ओ बाजी जितलक। संतुष्टि प्राप्त मनुक्ख राजा अछि। सदिकाल बिचारैत रही जे एक दिन पृथ्वीक त्याग करक अछि। जेना हम अपन बाबा कैँ परबाबा कैँ मोन नहि पाड़ैत छियनि तहिना हमर संतान हमर मृत्युक बाद हमरा बिसरि जेताह। तखन अंइठी कोन बातक? घमण्ड कथी लेल? मुदा संतुष्टिक अर्थ ई कथमपि नहि भेल जे हम अपना कैँ एतेक सज्जन बना ली जे कियो आबि क' हमर कान तीर लिअ। ई संतुष्टि नहि, सज्जनता नहि, ई भेल कायरता। हम जखनहि अपन आत्मसम्मान संगे सौदेबाजी करब, हम कथुक जोग नहि रहि सकब। तैँ संतुष्टिक वास्तविक अर्थ भेल हमर समक्ष जे जीवन अछि ओकरा नीक जकाँ जीवी। हमरा लेल जे काज अछि ओकरा इमानदारी सँ करी।

आरम्भे मे पंडित जी हम कहने रही जे प्रत्येक मनुक्खक हृदय-कूप मे एकटा विश्वास रहैत छैक, एकटा अदृश्य मुदा महान शक्ति छथि, तकर मान्यता रहैत छैक। तैँ हम अपन विश्वास कैँ यत्नपूर्वक भक्तिक परिधि मे पहुँचा क' ईश्वर दर्शन लेल ललायित भ' जाइ। रामकृष्ण कहने छथि जे जीव पानि मे डुबैत काल जाहि बेकलता सँ, आतुरता सँ प्राण रक्षाक यत्न करैत अछि, ओही बेकलता आ

आतुरता सँ जें ईश्वर दर्शन लेल अधीर हेताह त' हुनका प्रभुक दर्शन हेबेटा करतनि। ईश्वर कतहु सँ अबैत नहि छथि, ओ त' हमर भीतरे निवास करैत छथि। हम जँ बेकल भ' दर्शनक अभिलाषा करब त' हमरा आत्मदर्शन हेबेटा करत।

कन्हाइ मंडलक ध्यान एकाएक भंग भेलनि। ताही काल टायरगाड़ी मे जोतल दुनू बड़द अपन गरदामक घंटी अहि अन्दाज मे टुनटूनौलक जेना प्रत्येक वार्तालापक विषय कँ दुनू बुझने होअय आ अनुमोदन कयने होअय। मंडलजी दुनू बड़द दिस आवेश सँ तकलनि आ कहलनि–पंडित जी, अहींक दुआरे माधव आ तिलकेसर कँ सेहो सत्संगक लाभ भेटलनि अछि।

टायरगाड़ीक यात्रा हमरा मोन कँ प्रसन्न कयने छल। हम एक नजरि दुनू बड़द दिस ताकल आ फेर कन्हाइ मंडल दिस देख' लगलहुँ। मंडल जीक कहब चालू छलनि–संतुष्ट बनबाक लेल मोनक एकाग्रता चाही। एकाग्रता प्राप्त करबाक लेल मंत्र जाप सभ सँ नीक उपाय। जहिना हाथीक सूढ़ मे एकटा सिल्ला पकड़ा देल जाय त' रस्ता चलैत हाथी ने ककरहु टाट उजाड़तै आ ने ककरो चार परहक सजमनि तोड़तैक, तहिना मोन कँ जँ मंत्र जाप मे लगा देल जाए त' मोन निर्लज्ज भेल वासनाक भोग सँ विरक्त भ' जायत। मंत्र जाप मोन कँ सहजहि स्थिर, स्वतंत्र तथा एकाग्र बना दैत छैक।

स्थिर, स्वतंत्र एवं एकाग्र भेल मोनक दुआरे मनःशक्ति प्राण शक्ति तथा आत्म शक्ति सँ ऊर्जा प्रवाहित भ' चित शक्तिक निर्माण करैत अछि। चित शक्ति भेल चेतना। चेतनाक जागरण भेला सँ मनुक्खक सभ सँ पैघ शत्रु एवं बाधक अभिमानक दमन भ' जाइत छैक, बुद्धि आज्ञाकारी बनि जाइत छैक तथा तमाम इन्द्रिय विकार मुक्त भ' मोनक सहायक बनि जाइत छैक। अहि तरहें तैयारी क', बुद्धि कँ अपन सहिस बना मोन अपन उद्गम अर्थात आत्म स्वरूपक दर्शन लेल यात्रा आरम्भ करैत अछि।

मोन मे भाव उठैत छै आ भाव सँ विचार बनैत छै। विचार भाषाक माध्यमे प्रगट होइत छैक। आब मोनक स्थिति बुझ' लेल भाषाक विभिन्न स्वरूप कँ जँ बुझैत आगाँ अन्वेषण करब त' नीक होयत। भाषाक पहिल स्वरूप भेल बैखरी। हम आ अहाँ टायरगाड़ी पर बैसल घेघिया जा रहल छी। आ गप्प-सप्प क' रहल छी, यैह भेल बैखरी। बैखरी भेल पाथर। पाथर कँ तोड़बै त' किछु नहि भेटत। आब मोन कँ चेतना प्राप्त छैक। मस्तिष्कक चेतन आ अचेतन भंडारक कपाट सेहो खुजि चुकल छैक। मोनक एकांत आ अन्तर्मुखी यात्रा आरम्भ भ' चुकल छैक। एहने स्थिति मे मोन मध्यमा मे प्रवेश करत ने। एतय प्राण शक्ति मे प्रचूर विकास भेलाक कारणें ढोढ़िक नीचा काम केन्द्रक सभटा चक्र गतिमान भ' जाइत

छैक। काम केन्द्रक जागरण सँ भावक ज्वार उठैत छैक। पाथर आब फूल बनि जाइत अछि। फूल मे पंखूड़ी, पंखूड़ी मे पराग आ परागक सुगन्धि मोन कँ मुग्ध क' दैत छैक। भाव जीवन्त भ जाइत छैक। प्रसिद्ध चित्रकार, मूर्तिकार, संगीतकार, साहित्यकार एवं अन्य सभटा कलाकार आ फनकार अही मध्यमाक भाव संसार सँ प्रगट होइत अछि। संगीत कतेक मधुर अछि, कविता मे कतेक भाव अछि, उषाकालक लालिमा कतेक सुन्दर छै, गुरुवाणी मे कतेक विश्वास अछि आदि जतेक भाव अछि तकर जनक अछि मध्यमा। मोनक अही स्थिति सँ संगीत कला, चित्रकला, साहित्य, कविता अर्थात कला सम्बन्धी सभटा उत्कृष्ट विधा उत्पन्न होइत अछि। एतय भाव विचार बनि मोन कँ कहैत छै—आह! आब तोरा की चाही? तोँ उच्च कोटिक कलाकार छह। तोहर रचल कविता, तोहर गढ़ल मूर्ति, तोहर लिखल साहित्य अद्वितीय छह, अतुलनीय छह आ सर्वोपरि छह। अइ सँ बेसी तोरा की चाही? जीवनक उच्चतम शिखर पर तोँ पहुँचि गेलह अछि। ईश्वरक विशिष्ट प्रसाद तोरा भेटि गेलह अछि। यश, प्रतिष्ठा एवं धनक कोनो कमी तोरा नहि छह।

मुदा पंडित जी, महादेव सचेत करैत कहैत छथि—पुत्र! ई सभटा उपलब्धि तोहर अज्ञानक झँपना थिकौ। तोँ एखनो तक अज्ञानिएँ छेएँ। तोँ भ्रमित नहि होए। ज्ञान अहि ठाम सँ आगाँ, बहुतो आगाँ छैक। ई त' कामकलाक प्रपंच मात्र थिक जे तोरा साहित्यकार, मूर्तिकार, संगीतकार आदि बना क' तोरा ठकै छौ। अहि उपमा, अलंकार मे अहंकार नुकायल रहैत छै। अहंकार एखनो तोहर तप कँ सत्यानाश करक लेल तैयार भेल छौ। पुत्र! कल्पना यथार्थक स्थान कथमपि ने ल' सकैत अछि। अस्तु, कल्पनाक परिधान कँ त्यागि भव-संसार सँ बाहर निकलि आगाँ बढ़। तोहर अभीष्ट छौ आत्म-दर्शन। तोँ एतहि जँ संतोष क' लेबएँ त' तोहर तपस्या व्यर्थ भ' जेतौ।

गुरुक गुरु महादेवक आदेश कँ शिरोधार्य क' मोन कामकलाक मोह सँ मोहित नहि भ' आगाँ बढ़ि पश्यन्ति मे पहुँचैत अछि। मोन कँ झटका लगैत छै। मनःशक्ति मे प्रचण्ड गति आबि जाइत छै। शरीर आ मोनक बीच प्राण सेतु बनल रहैत अछि। मुदा प्राण शक्ति त' क्षीण भ' रहलनि अछि। योगी जखन धारणा, ध्यानक बाद समाधि मे प्रवेश करैत छथि त' प्राण गौण बनि जाइत अछि। शरीर त' आब मृत्युक द्वार लग पहुँचि गेल हेएँ। मुदा मोन कँ की कहबै? हुनका त' पाँखि लागि गेलनि अछि। ओ प्राणक बिना परबाहि कयने स्थूल शरीर सँ एक डेग आगाँ जा सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश केलनि अछि। ई त' ज्ञानक संसार थिक। अहि अवस्था मे मोन कँ अनेकों सिद्धि सहजहि प्राप्त भ' जाइत छन्हि। जीव आ

निर्जीव सँ आदेश पालन करायब, शरीर पर कालक प्रभाव नहि पड़ देब, अपना कैँ सदैव निरोग राखब, हजारो कोस दूरक लोकक विचार कैँ प्रभावित क' ओकरा पर शासन करब, विपत्ति सँ ककरो मुक्ति क' देब आदि अनेकों सिद्धि मोनक चेरी बनि जाइत अछि।

मुदा अहि तमाम सिद्धि मे प्रलोभन छै। एकरा मे अनिष्ट करबाक प्रबल शक्ति छैक। सिद्धि प्राप्त क' उत्तम पुरुष मे स्थापित मोन सिंहासन सँ नीचा उतरै मे हन-छिन्न कर' लगैत अछि। एक बेर विवेकानन्द अपन गुरु रामकृ ष्ण कैँ कहलथिन जे ध्यानावस्था मे ओ दूरक संवाद सुनैत छथि आ दूरक दृश्य देखैत छथि। रामकृष् ण हुनक ध्यानबला काज कैँ किछु दिन लेल रोकबा देलनि आ कहलनि— ई सिद्धि प्रगति मे बाधक अछि। ई अहंकार कैँ पुनः जन्म दैत अछि। मायाक अगम अथाह सागर सँ निकलैत मोन स्वतः सिद्धि प्राप्त करैत अछि। मुदा ई सिद्धि मोन कैँ तप सँ च्यूत क' दैत अछि। एकरा सँ परहेज करब उचित अछि।

मोन सिद्धिक त्याग क' आगाँ बढ़ैत अछि। ओकर भौतिक संसारक बुद्धि, विवेक आ विचार पूर्णतः लोप भ' जाइत छै। ओकरा समयक संग एकत्व भाव स्वतः प्राप्त भ' जाइत छै। कतहु विरोध नहि, पूर्ण तादात्म्य। मोन कैँ प्रभुक ऐश्वर्यक दर्शन होइत छैक। शरीर मे व्याप्त इन्द्रिय प्रलोभन, बुद्धिक होशियारी आ अहंकारक स्वेच्छाचारिता सँ ओ सभ दिन लेल मुक्त भ' जाइत अछि। निर्मल आ पवित्र भेल मोन परम पिता मे समर्पित होयबा लेल इच्छुक भ' जाइत आछि। सौन्दर्य मे, प्रेम मे, भक्ति मे, श्रद्धा मे, सत्य मे मोन कैँ प्रभुक सत्ताक दर्शन होइत छैक। परम उत्कर्ष मे पहुँचि मोन आत्मविभोर भ' जाइत अछि। मोनक आत्म शक्ति मे एतेक ने गति आबि जाइत छैक जे ओकरा चहुँ दिस प्रकाशे प्रकाश भेटैत छैक।

पंडित जी, एहन अवस्था प्राप्त मोन स्वयं शुद्धतम ऊर्जा बनि परा मे प्रवेश करैत अछि। ओकरा जन्म-जन्मांतरक कर्म, कर्म भोग आ जन्म-मरणक चक्कर सँ मुक्ति भेटि जाइत छैक। मोन आत्मा मे लीन भ' स्वयं निराकार, निर्लिप्त, अशेष बनि विराट सत्य मे विलीन भ' जाइत अछि।

पंडित राज शेखर दत्त एकाग्रचित भ' कन्हाइ मंडलक उपदेश अपन कथा मे कहि रहल छलाह। मुदा हुनक कथा-प्रवाह मे व्यवधान भेलनि। पंकज चौकी सँ नीचा उतरि कने-मने हड़बड़ाइत कहलनि—पंडित कका, पच मिनटा बला काज हमरा पेरू कैँ फुला क' मूंगबा बनौने अछि। कने काल लेल खिस्सा कहब रोकि दिऔ। हम फारिग भ' अविलम्ब आबि रहल छी।

6.

अन्हार मे पंकज एक कात गेलाह। ओही काल वीर बाबू पंडित कका दिस तकैत कहलनि–पंडित कका, अहाँक मूल प्रश्न 'हम के छी'क थोड़-बहुत जानकारी भेटल। मुदा एखनहुँ हम अपना कैँ नीक जकाँ चिन्ह नहि पौलहुँ अछि। कन्हाइ मंडल जीवात्माक मोक्ष प्राप्तिक मार्ग बतौलनि अछि। मुदा जन्म-मरणक की चक्कर छियैक से त' कहबे ने केलनि। अहि प्रश्नक समाधान भेल की नहि, से त' कहू?

ताही काल पंकज पैजामाक नार मे गिरह दैत अपन चौकी लग पहुँचि आश्चर्य प्रगट केलनि–यौ भाइजी, एकर माने भेल अहाँ पंडित कका एवं पूज्यवर कन्हाइ मंडलक बीच भेल वार्तालाप कैँ बुझि रहलियनि अछि। हम त' जय सिया राम, एको आखर नै बुझलियै। मुदा सुन' मे नीक अवस्से लागल। सत्य मे पुछू त' हमर मोन स्वेता मे टाँगल अछि। कखन पंडित कका गोवर्धन लग पहुँचताह आ कोना क' गोवर्धन स्वेता कैँ बचौथिन से छोड़ि आन कोनो बात हमरा मोन मे अबिते ने अछि।

पंडित ककाक चेहरा पर कोनो कंपन नहि भेलनि। ओ वीर बाबू कैँ उत्तर देलनि–अहाँ ठीके कहलहुँ वीर बाबू। हमर मूल प्रश्न एखनो अनुत्तरिते छल। एकर जिज्ञासा हम कन्हाइ मंडल सँ कयल आ ओ जे किछु कहलनि से सुनू। अति साधारण लोकक भेष मे महाज्ञानी कन्हाइ मंडल कहलनि सभ सँ पहिने हम सरल मोक्षक मार्ग बतओलहुँ। अहि मार्ग मे सत्य सँ साक्षात्कार होइत छैक एवं शाश्वत आनन्द भेटैत छैक। मानि लिअ हमरा मोक्ष नहिओ भेटैत अछि तइयो मोनक एकाग्रता एवं स्वतंत्रता हमर आत्म शक्ति कैँ बढ़ा दैत अछि, आलोकित क' दैत अछि। जीवनक कष्ट सँ बचबा लेल जागृत भेल आत्म शक्ति परम आवश्यक। जनैत छियैक पंडित जी जे दुख सँ बचबाक सरल तरीका की छै? हम कहिओ सुखक इच्छे ने करी त' दुख हमरा कहियो हेबे ने करत। ई तखने संभव छै जखन हमरा आत्म संतुष्टि भेटि जाय। आत्म शक्ति सुखक कामना कैँ, इच्छा कैँ समाप्त

क' दैत छैक।

मुदा सभ किछु जनितहुँ मनुक्ख अज्ञानतावश, आलस्यवश मोन कैँ स्वतंत्र करक लेल तत्पर होइते ने अछि। माया जगत मे जीव कैँ एतेक ने रस भेटैत छैक, स्वाद भेटैत छैक जे ओ सत्यक सामना कर' मे डेराइत रहैत अछि। जीवन मे कतबौ ने कष्ट हौउक, जीवनक प्रति मोह ततेक ने प्रगाढ़ होइत छै जे ओ ने जीवन-मृत्युक चक्कर सँ मुक्ति पाब' चाहैत अछि आ ने मोक्षक अभिलाषा करैत अछि।

मनुक्ख मोक्षक अभिलाषा नहि करैत अछि से जानि आश्चर्य भेल। मंडल जी सँ एकर कारण जान' चाहलहुँ त' ओ कहलनि—कनेटा खिस्सा कहैत छी, सुनू। नेना मे खेलाइ-धुपाइत काल कृष्ण मुंह मे माटि राखि लेलनि। सदिकाल हुनका पर अपन दृष्टि रखनिहारि हुनक माता यशोदा से देखि लेलनि। यशोदा कृष्ण कैँ पकड़ि हुनका मुंह खोलक लेल कहलनि। कृ   ष्णक मुंह मे यशोदा माटि ताकए लगलीह। मुदा ओ देखैत की छथि? कृ   ष्णक मुंह मे सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक विराट रूप। यशोदा आश्चर्यचकित भ' गेली। हुनक आँखि चोन्हरा गेलनि। अपना कैँ सम्हारैत ओ कृ   ष्ण सँ पूछलनि—नेनहि सँ देखैत आबि रहल छी जे अहाँ साधारण बालक नहि छी। मुदा एखन जे किछु अहाँक मुंह मे देखलहुँ ताहि सँ हम आरो भ्रमित भ' गेलहुँ अछि। अहाँ के थिकौं से हमरा कहू। कृ   ष्ण सहज बाल स्वभाववश भेल उत्तर देलनि—माता, निराकार ब्रह्मक साकार रूप, साक्षात परमेश्वर हमहीं छी। पृथ्वीक कष्ट निवारण हेतु हम कृ   ष्णावतार मे अयलहुँ अछि। अपन पूर्ण परिचय देलाक बाद कृ   ष्ण यशोदा कैँ पुनः कहलनि—माता, जखन अहाँ हमरा चिन्हिए गेलहुँ त' अहाँक जे वरदानक इच्छा हो, माँगि लिअ। जँ चाही त' हम अहाँ कैँ मोक्ष प्रदान क'दी। यशोदा भाव-विह्वल होइत जवाब देलनि—अहाँ हमर पुत्र आ हम अहाँक माता, अहि मे वात्सल्य प्रेमक से ने रसधार बहि रहल अछि जे हम आनन्द धाम मे छी। अहि सुखक त्याग क' हम मोक्ष मांगी, से हमर इच्छा कहिओ ने होयत। हम सतत् अपना कैँ माता आ अहाँ के पुत्रक रूप मे देखबाक अभिलाषा करब।

तैँ कहल पंडित जी जे मनुक्ख केहनो दशा, महादशा तथा दुर्दशा मे रहत, ओकर जीवनक प्रति मोह, ओकर अपन बनाओल संसारक प्रति मोह, ओकर परिवार एवं संतानक प्रति मोह, ओकर धन-सम्पतिक प्रति मोह आदि एतेक ने प्रबल होइत छैक जे ओ कहिओ जीवन-मृत्युक परिधि सँ अपना कैँ फराक नै क' सकैत अछि। हमहू कहब, छोड़ू मोक्षक गप्प। कर्माधीन मनुक्ख नीक कर्म क' अपन अगिला जन्मक सुख-संसार मे पहुँचा त' सकैत अछि। मुदा सेहो नहि। ओ रजो गुण सँ प्रेरित भ' सदिखन इच्छा मे आकंठ डुबल रहैत अछि। ई त' भ' गेल,

आब ओहो भ' जाइत। आह! ओहो भ' गेल तखन आरोक बियोंत करबाक चाही। एवं क्रमे मनुक्ख जीवन भरि इच्छाक अधीन रहैत अछि। मनुक्खक योनि मे जन्म पाबि ओ अपन आत्म शक्ति कैँ विशाल करए, अपन मंगल करए ताहि लेल ओ प्रयास करिते ने अछि। मुदा अहि विषय कैँ एतहि विराम द दिऔक। जन्म-मरणक की चक्कर छै से त' सुनू।

अपन कथनक क्रम जोड़ैत कन्हाइ मंडल आगू कहलनि—एक बातक ध्यान अहाँ अवस्से राखब जे प्राप्त इन्द्रिय सँ अहाँ सृष्टिक सभटा कार्य-कलाप कैँ ने त' देखि सकैत छी आ ने बुझि सकैत छी। तैँ हम जे कहब तकरा अहाँ सत्य मानबैक। कारण महामायाक कृपा सँ हमरा ओ दृष्टि प्राप्त भ' चुकल अछि जे सृष्टिक कोनो टा गप्प हमरा सँ अबुझ नहि अछि। तैँ हम जे कहब से सत्येटा कहब। ब्रह्माण्ड मे सभसँ रहस्यमय छथि ईश्वर। मुदा मनुक्खक शरीर सेहो रहस्यक पिटारे थिक। मनुक्खक शरीर मे होइत छैक मस्तिष्क, जकर सूक्ष्म एवं जटिल संरचना अत्यन्त अद्‌भुत एवं विचित्र छैक। सम्पूर्ण ब्रह्माण्डक रहस्य भेदन सम्भव छै मुदा मानव मस्तिष्कक नहि। अपन पूर्वज लोकनि अथक परिश्रम क' कुण्डलिनी विज्ञान, षट्‌चक्र विज्ञान, ब्रह्माण्ड विज्ञान, नाद विज्ञान एवं तंत्र विज्ञान द्वारा मस्तिष्कक अध्ययन कयलनि अछि। हुनक अध्ययनक निष्कर्ष संक्षिप्त मे हम एखन अहाँ कैँ कहब। कारण, मस्तिष्क अरबो, खरबो तंत्रिका आ कोशिका सँ बनल अछि। तैँ एकर वृहत चर्चा सम्प्रति सम्भव नहि।

मोन जखन आत्म स्वरूप सँ बाहर आबि अपन अलग परिचय कायम क' लैत अछि तखन कर्म करब शुरू करैत अछि। सत्ते, मोन बिना कर्मक रहिए ने सकैत अछि। थोड़ेक कर्म ओ शरीर-धर्मक निर्वाह लेल करैत अछि। मुदा अधिकांश कर्म मोन अपना कैँ श्रेष्ठ बनेबाक लेल तथा अपन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल करैत अछि। मोनक सभ सँ पैघ कामना होइत अछि अधिक सँ अधिक सुख प्राप्त करब। ताहि लेल कोनो हर्ज नहि। मुदा भ्रमित भेल मोन सुख प्राप्तिक अभिलाषा मे जँ ककरो नीचा देखाबए, ककरो अपमान करए आ की ककरो अहित करब अपन अधिकार बुझि लिअय त' हर्जे हर्ज छैक।

मुख्यतः कर्म तीन प्रकारक होइत अछि। अहाँ जे सोचैत छी, बजैत छी तथा क्रिया करैत छी, सभटा कर्म भेल। तीनू प्रकारक कर्म मस्तिष्कक प्रथम प्रकोष्ठ मे जमा होइत अछि। एकर नाम थिकै अनुभव प्रकोष्ठ। कयल कर्मक अधिकांश भोग मनुक्ख कैँ अपनहि जीवन मे कर' पड़ैत छैक। मुदा जे कर्म-भोग बाँचि जाइत छै से मस्तिष्कक दोसर प्रकोष्ठ मे जमा होइत छैक। एकर नाम भेल स्मृति प्रकोष्ठ। जीवनक अन्तकाल मे मनुक्ख स्मृति प्रकोष्ठक कर्म-भोग करैत अछि। बाँकी

बचलाहा कर्म तथा जन्म-जन्मातरक अर्जल कर्म मस्तिष्कक तेसर प्रकोष्ठ मे जमा होइत छै जकर नाम भेल संस्कार प्रकोष्ठ।

जेना पृथ्वी पर कोनो भौतिक पदार्थ नष्ट नहि होइत अछि, मात्र ओकर स्वरूप मे परिवर्तन होइत छैक, तहिना उपार्जित कर्मक क्षय नहि होइत छैक। मोन कैँ अहि जन्म मे वा अगिला जन्म मे एकर भोग करहि टा पड़ैत छैक। कर्मक भोग केहन अनिवार्य होइत छै से सुनू। कर्मभोग अनुसारे निश्चित भेल जे अहाँ कैँ कुकुर काटत। आब अहाँ हाथी पर चढ़ि किएक ने बैसि जाइ, ओतहु कुकुर छड़पि क' काटि लेबे करत।

मृत्युक उपरान्त शरीरक अंग सँ एक-एक क' प्राण बाहर भ' जाइत छथि। मुदा मस्तिष्कक धनन्जय नामक प्राण सभ सँ अन्त मे बहिर्गमन करैत छथि। अहि बिलम्ब मे मोन कैँ फबि जाइत छैक। मोन मस्तिष्कक संस्कार प्रकोष्ठ मे जमा भेल सभटा कर्म कैँ आत्मा मे लपेटि मोटरी बनबैत अछि आ ढ़ोढ़ीक रस्ते शरीर सँ बाहर आबि सूक्ष्म शरीर मे पहुँचि जाइत अछि। स्वभाविके मोन कैँ मृत शरीर सँ मोह रहैत छै। तैँ मोन मृत शरीरक चारूकात ताबे तक घुमैत रहैत अछि जाबे तक की मृत शरीर कैँ जरा ने देल जाय अथवा माटि त'र गारि ने देल जाय अथवा समुद्र मे फेकि ने देल जाए अथवा आन कोनो विधि सँ ओकरा नष्ट ने क' देल जाय। शरीर कैँ नष्ट भेलाक बाद सूक्ष्मधारी मोन धरतीक एक निश्चित कक्ष मे पहुँचि कर्माधीन आत्माक मोटरी कैँ कारण शरीर मे समर्पित क' स्वयं नष्ट भ' जाइत अछि। एतय ध्यान देबै पंडित जी, जे कारण शरीर लग पहुँचि मोन ओहिना नष्ट भ' जाइत अछि जेना मुर्दा जरबैत काल अन्त मे खोंचरना कैँ जरैत अंचिया मे फेकि जरा देल जाइत अछि। यैह कारण थिक जे मोन कैँ अगिला जीवन मे पछिला जीवनक कोनो टा बात स्मरण नहि रहैत छैक।

कारण शरीर प्राप्त आत्मा अपन कर्मानुसार नव कोखि कैँ ताकब शुरू करैत अछि। कीट-पतंग, पशु-पक्षी अथवा मनुक्ख योनि कर्मानुसारे भेटैत छैक। जँ कर्म उच्च कोटिक होइ तथा आत्मबल मे पर्याप्त वृद्धि भेल होइ त' ओहन आत्माक नव जन्म अन्तरिक्ष मे पसरल आन-आन पृथ्वी पर सेहो होइत छैक। खास-खास आत्मा ईश्वरक आदेश पाबि सूक्ष्म रूप मे हिमालय पर्वतक शिखर पर मानसरोवर झील लग निवास करैत छथि। अहि तरहक आत्मा खास कारण सँ अल्प काल लेल पृथ्वी पर आबि पुनः अपन निवासक स्थान लेल घुमि जाइत छथि। अहि तरहक उदाहरण मे शंकराचार्य, संत ज्ञानेश्वर, विवेकानन्द आदि अनेकों महापुरुष कैँ देखि सकैत छी।

अही बीच हम कन्हाइ मंडल कैँ पूछि देलियनि—आत्मा त' अजर, अमर कहल

जाइत छथि। तखन फेर सँ हुनक जन्म कोना सम्भव होइत अछि?

मंडल जी स्पष्टीकरण दैत कहलनि–सही मे आत्मा अजर,अमर आ निर्लिप्त छथि। विराट विश्वक कण-कण मे परमात्मा समायल छथि। परमात्माक एक छोट अंश आत्मा बनि प्रत्येक जीव मे वास करैत छथि। मुदा एखन त आत्मा कर्मक मोटरी मे बान्हल छथि। हम कहि चुकल छी जे जीव भेलाह मोन। संस्कार मे बान्हल आत्मा मोन द्वारा एक ठाम सँ दोसर ठाम पहुँचैत छथि। अनगणित जन्मक अर्जल संस्कार रूपी वासना अहि मोनक परिचय बनल रहैत छैक। अहि वासनाक अन्त अथवा कर्महीन भेलोपरान्त मोनक परिचय समाप्त होइत छैक। तेहन अवस्था मे अयला पर आत्मा वासनाक जाल सँ निकलि परमात्मा मे लीन भ' जाइत अछि। एकरे कहैत छैक मोक्ष अथवा खिस्सा खतम। मुदा अहि स्थिति मे पहुँचब बड़ कठिन। मोन जे सही मे जीवात्मा छथि अपन संस्कारक मायाजाल सँ निकलिए ने पबैत छथि। तेँ हुनकर परिचय कायम रहैत छन्हि आ जन्म-मृत्युक चक्कर चलैत रहैत अछि।

एतेक कहि मंडल जी फेर कहलनि–आब अहाँ अपना केँ चिन्हलहुँ। अहि जगत मे कलाकार बनि अनेकों नाटक मे पाठ खेला रहलहुँ अछि से अहाँ बुझलहुँ। मोन अर्थात जीवात्मा सभ किछुक जिम्मेदार स्वयं छथि। तेँ हम कहने रही जे परम सत्यक साक्षात्कार सँ मोन सदिकाल भयभीत रहैत छथि। सोनाक सिंहासन पर बैसल अथवा नाली मे टुभकैत, सभटा त' जीवात्मे थिकाह। जीवात्मा नाटकक कोनो पाठ मे होथि जीवनक माया मे आनन्द मग्न भेल रहैत छथि। बस अपन परिचय कायम रहए ततबे मे हुनकर रुचि रहैत छन्हि।

मंडल जी सँ वार्तालाप कर' मे हम मस्त छलहुँ। एखनहुँ कइएक गोट प्रश्न हमर माथ मे छलहे जकर निराकरण हुनका सँ करेबाक जिज्ञासा छल। मुदा हमर तंद्रा भंग भ' गेल छल। टायरगाड़ी चलैत-चलैत एक पीपरक गाछ तर ठार छल।

7.

रातिक एग्गारह बाजल रहैक। आकाश मे मेघ लदल छलैहे। बाढ़िक पानि बढ़िए रहल छलै। मकानक नीचा जे ऑउटर हॉउस कहबै छल, जल मे डुबि चुकल छलै। डिबियाक इजोत मे एतेक सामर्थ नहि रहैक जे ओ रातिक कालिमा सँ लड़ि सकैत। मुदा पंडित राज शेखर दत्त आ कन्हाइ मंडलक बीच भेल अध्यात्मक चर्चा आत्म प्रकाश बनि स्थान कैँ आलोकित कयने छल। वीर बाबू पंडित ककाक उपदेशात्मक वार्तालापक गम्भीरता मे डुबल रहथि। मुदा पंकज ओहिना चंचले छलाह। हँ, हुनक थुथुन अवस्से लटकि गेल रहनि। हुनका देखैत वीर बाबू पूछि देलनि–की भेल अछि अहाँ कैँ? एकाएक जेना कोनो बातक अहाँ कैँ मलाल भ' रहल होअय?

पंकज एक घोंट जल पीबिकैँ कहलनि–सही मे गुरु बनबाक योग्यता कन्हाइ मंडल सन महापुरुष मे छलनि। सौभाग्य होति जँ हुनका सन गुरु भेटैत। सैह सोचि रहल छलहुँ आ की मोन पड़लाह अपन उपनयनियाँ गुरु, कोमल कका। उपनयन काल कान मे ओ की मंत्र देलनि से सुनब? ओ मंत्र देलनि–पोखरि मे नहेबा काल मूत्र त्याग नहि करिह', खजूरक गाछ मे लटकल कटिया कैँ नहि फोड़िह' ढेपा फेकि आम नहि तोड़िह'। कहू त' ई केहन मंत्र भेलै? ओ सभ मास एतए आबैत छथि। हमरा संगहि मूर्गीक अंडाक डबल आमलेट खाइत छथि आ हमरा ओकर दाम चुकेबाक लेल कहै छथि। संगहि इहो कहताह जे तोहर धर्म थिकौ हमर सेवा करब। हमरा नीक-निकुत खुआबैत रह, तखने तोहर अगिला जीवन नीक हेतौ। भाइजी, सैह सभ सोचि क' मोन एकटा बातक निश्चय केलक अछि। आब औताह त' कहबनि–ठामे घुमि जाउ, नहि त' टांग तोड़ि देब! कहू त', गुरुक नाम पर ई लोकनि कतेक टा कलंक छथि?

पंकज के आक्रोश कैँ शान्त करैत पंडित कका कहलनि–सुयोग्य गुरु भेटब सही मे कठिन अछि। तहिना सुयोग्य चेला बनब त' आरो कठिन अछि। व्यवस्था त' एहन छैक जे सुयोग्य चेला कैँ गुरु अपनहि ताकि लैत छथि, चेला लेल एकर

प्रयास करब आवश्यको नहि। एखुनका गुरु-चेलाक विधान परम्परा सँ आयल नियम एवं अवधारणा पर आश्रित अछि जाहि मे नाना तरहक दोष आबि गेल छैक। मुदा एखन जँ अहि विषय पर चिंतन करब त' हमर खिस्सा अधहे पर लटकल रहि जायत।

हड़बड़ाइत वीर बाबू बजला—से ठीके कहलहुँ पंडित कका। अहाँक खिस्सा मे अजीबे आकर्षण छै, जीवनक अनेक प्रश्नक सटीक उत्तर छै। तेँ हम आग्रह करब जे आन-आन गप्प सँ ध्यान हटा अहाँ खिस्सा कहैत रहियौ।

पंडित कका फेरो आरम्भ केलनि—टायरगाड़ी के ठार भेल देखि हम सकाँच भेलहुँ। मुदा मोन कें सही अवस्था मे आब' मे थोड़ेक समय लगलैक। मंडल जी हमरे दिस ताकि रहल छलाह। हमरा स्थिर होइतहिं ओ नम्र वाणी मे कहलनि—हम दुनू घेघिया पहुँचि गेल छी। सामने कतार मे बाँसक बीट आ गाछी कें देखियौ। एकर ओहि पार घेघियाक बाजार छैक। टायरगाड़ी परहक अन्न कें सेठ बनबारीक गद्दी पर उतारि हम घुमि क' आबि रहल छी। ताबे अहाँ हमर कुटिया मे विश्राम करियौ। अहाँक रात्रि विश्राम अही ठाम हमरे संगे होयत। जाबे हम घुरि क' आयब, अहाँ स्नान आदि क्रिया सँ निवृत्त भेल रहब। तखन भोजन काल संगे संग हमरा लोकनि गप्प-सप्प करब।

टायरगाड़ीक नीचा मे कल जोड़ने एक व्यक्ति ठार छलाह। हुनके दिस घुमि मंडल जी बजला—पंजा, पाहुन छथुन्ह। हिनका आदर सँ ल' जाहुन।

गोधुलिक बेला रहैक। यद्यपि सम्पूर्ण इलाका उजाड़ जकाँ छलै, मुदा ई स्थान अत्यन्त रमणीक छल। रस्ताक दुनू कात दू टा पीपरक गाछ जड़ि सँ छीप तक एकहि रूपक, जेना जौंआ होअय। ओकर डारि-पात स्थान कें छाँह सँ झँपने छलै। रस्ताक दुनू कात दू टा कुटिया, नव खर सँ छारल, नीपल-पोतल, साफ-सुथरा खूब पवित्र रहैक। एक कुटिया मे नादि देखल। तेँ बुझल जे ओ कुटिया माधव आ तिलकेसरक भोजन एवं विश्रामक स्थान भेल। दोसर कुटिया आगू सँ खुजल जाहि मे दू टा चौकी। चौकी परहक बिछौन उज्जर जाजिम स झाँपल। भीतर आंगन दिस जेबा लेल दुरुक्खा बाटे रस्ता।

पीठ परहक बैग कें एक चौकी पर राखि ओकरा खोलि साबुन निकालक प्रयास करिते रही तखनहि पंजा नामक सेवक टोकलनि आ अत्यन्त मधुर स्वर मे कहलनि—श्रीमान, हम अहाँक सेवक छी। अहाँक आगमनक सूचना गुरुजी दू घंटा पहिनहि पठा चुकल छथि। हुनक संदेशक अनुरूप अहाँ लेल प्रत्येक वस्तुक इन्तजाम हम क' चुकल छी। अपने अहि दुरुक्खा बाटे आंगन गेल जाए। साबुन, तेल, गमछा एवं पहिर लेल वस्त्र सभ किछु यथा स्थान भेटि जायत। अपने स्नान

आदि सँ निवृत भ' क' जाबे तक घुमबै ताबे गुरुजी सेहो आबि गेल रहताह। हमर कनियाँ, सुकुमारी अहाँ दुनूक लेल पनपिआइ तैयार क' रहलीह अछि।

पंजा कैँ खूब ठेकना क' देखल। ऊँचाइ तीन, सवा तीन फीट। ठोकल आ ठसगर कद-काठी। बहिक्रम द' की कहल जाय किछु भ' सकैत छल। तीसी तेल मे छानल पापड़ जकाँ घोंकचल आ चड़कल हुनक देहक चमड़ा, कौआ जकाँ दुनू आँखि दू दिस तकैत, उठल नाक, ठाम-ठाम पर उड़ल आ भुल्ल भेल मोंछ, थथुनक नीचा छिड़िआयल आ टेढ़ भेल दाँत, पीयर ढ़ाबुस भेल चेहरा आ कपार पर तेल पोचकारल जुल्फी। आब ककरा कहबै कुरूप? मुदा जिराफ छाप गंजी पहिरने पंजाक बाजब मे गजब के माधुर्य, विनम्रता ककरो अपना वश मे करक लेल पर्याप्त छलै।

हम चुपचाप आंगन मे प्रवेश कयलहुँ। ठीके सभ वस्तु अपन-अपन स्थान पर राखल छलै। एक घंटाक अभ्यन्तरे सभ तरहक काज सम्पन्न कयल। स्नान कर' काल जखन साबुन देह पर रगड़लियै त' एक पूर्व परिचित सुगन्धि नाक मे प्रवेश केलक। देह मे सनसनी होब' लागल। हँ यौ, वैह नैनीताल बला मादक सुगन्धि मोन कैँ भाव-विभोर क' देलक। रस्ता मे अबैत काल अध्यात्मक चर्चा बड़ी काल धरि भेल रहैक, ताही सँ ध्यान भटकि गेल छल। सुगन्धिक कारणें स्वेता साक्षात सामने आबि क' ठार भ' गेली तेहन अनुभूति भेल। यात्राक उद्देश्य फेर सँ प्रगट भ' गेल। ओना विचित्रता त' अहि यात्राक स्वभाव बनि चुकल छल। तखन परबाहे की?

नवका पैजामा आ कुर्ता पहिरि चौकी लग आबि क' हम ठार भेलहुँ। मंडल जी दोसर चौकी पर आराम सँ बैसल छलाह। हुनक व्यक्तित्व सँ सम्पूर्ण दलान सुशोभित भ रहल छल। कन्हाइ मंडलक चौकीक नीचा पंजा बैसल लालटेमक टेमी ठीक क' रहल छल। सामने रस्ताक ओहि पार दोसर कुटिया मे दुनू बड़द सानी खेबा मे लीन छल। हम चुपचाप चौकी पर बैसलहुँ। तखने पंजा हाँक लगौलनि– पाहुन आबि चुकलाह। पनिपिआइ ल' क'   आउ।

हम जाहि दुरुक्खा बाटे चलि क' एतए तक पहुँचल रही ओही दुरुक्खा सँ एकटा महिला प्रगट भेलीह। अध-बयसु मुदा सुन्नरि, जनिक चालि मे शालीनता टपकि रहल छलनि, वैह छलीह सुकुमारी। हुनका हाथ मे थार छलनि। थार मे फूल काढ़ल दू टा छिपली। छिपली मे दूधक खीर सँ भरल बट्टा। हम आ मंडल जी जाहि चौकी पर बैसल रही ओहि सँ सटल हमरा दुनूक सोझा मे छोटसन दू टा टेबुल राखल छलै। सुकुमारी खीर सँ भरल एक-एक बट्टा टेबुल पर राखि दुरुक्खा मे बिलीन भ' गेलीह। मुदा एकहि क्षण मे ओ पुनः अयलीह। हुनकर दुनू हाथ मे

जल भरल लोटा छलनि। लोटा कैँ टेबुल पर रखिते काल हुनक टुह-टुह, लाल-लाल बनारसी साड़ी माथ सँ छहलि क' कन्हा पर खसि पड़लनि। ओ धड़फरेली। मुदा ताहि सँ अधिक धरफरा क' पंजा उठलाह आ सुकुमारीक साड़ी कैँ सरिया हुनक घोघ कैँ दुरुस्त करैत बजला—श्रीमान, यैह हमर कनिआँ सुकुमारी छथि। एक बर्ख पहिने हमर बिआह भेल अछि। ई बिआह छल प्रेम विवाह। सुकुमारी हमरा थियेटर मे नाटक देखै काल देखलनि आ हमर अति मनमोहक छवि देखि प्रेम नामक क्षीर सागर मे ऊब-डूब कर लगलीह! सम्बाद पठौलनि जे जँ हिनका संग हम बिआह नहि करबनि त' कोनो पोखरि-इनार मे डुबि क' मरि जेतीह। प्राण रक्षाक प्रश्न उपस्थित भ' गेल। हम लाचार भ' गेलहुँ। गुरुजी सँ परामर्श लेल। ओ सहमति देलनि, आशीर्वाद देलनि। तखन हिनका संग हम प्रणय-सूत्र मे बन्हेलहुँ।

पंजाक गप्प सुनि हम फेर सँ ओहि महिला जनिक नाम सुकुमारी छल, दिस तकलहुँ। तखन 'अति मनमोहक छवि धारी पंजा कैँ देखल। अन्त मे मंडल जी दिस तकैत मनहिमन बिचारलहुँ—पंजा असत्य भाषण करताह तकर गुंजाइस नहि छै। तखन एहन बेमेल बिआह कोना संभव भेलै आ ताहू पर सँ प्रेम विवाह। संसार अजगुत आ विचित्रता सँ भरल छै। देखबाक बहुत किछु छै मुदा से देखबा लेल आँखि चाही।

स्पष्टीकरण मंडल जी देलनि—पंजा हमर सेवा मे छथि। हिनका पूर्ण आस्था हमरा मे छन्हि। हिनका मोन मे दबल कोनो इच्छाक विस्फोट भेलनि। हमर आशीषक अधिकारी पंजाक इच्छा पूर्ति त' होयबाके चाही। सैह भेलै। मुदा पंडित जी, आन-आन गप्प कैँ छोड़ि सुकुमारी द्वारा आनल पनपिआइ पर ध्यान दिऔक। ओहुना आइ भोरहि सँ अहाँ भूखल छी।

अरिघा सन तामक चम्मच सँ बट्टा मे परसल खीर कैँ मुंह मे देलियैक त' पुरना गप्प मोन पड़ि गेल। सही मे ई खीर नहि खुरचन रहैक। मथुरा मे हलुआइ धीपल लोहियाक चारूकात दूध पसारि दैत छैक। पसारल दूध पापड़ जकाँ पपड़ी बनि जाइत छै। हलुआइ ओकरा समेटि-समेटि एक बासन मे रखैत गेल। फेर ओहि पापड़ भेल छाल्ही कैँ मेवा एवं चीनीक पाक द' एक खाद्य पदार्थ तैयार केलक जकर नाम भेल खुरचन। खुरचनक सुगन्धि आ स्वाद अपूर्व होइत छै। यमुनाक घाट पर खुरचन खेने रही। टायरगाड़ी पर अबैत काल जखन भूख लागल छल तखन खुरचन पर ध्यान गेल छल। आब मंडल जी सँ पूछब व्यर्थ बुझना गेल जे ओ खुरचन नामक सुस्वादु पदार्थ सँ हमर स्वागत किएक केलनि। हुनक की सामर्थ छन्हि से बुझि चुकल रही। पंजा आ सुकुमारीक जोड़ी त' प्रत्यक्षे छलीह।

खुरचन खेला सँ भूख शान्त भेल, मोन तृप्त भेल। मंडल जी कहलनि—

टायरगाड़ी पर भेल वार्तालापक बाद अहाँ कँ आओरो कोनो जिज्ञासा होए त' पूछबा लेल स्वतंत्र छी। सुकुमारी हमरा दुनू लेल भोजन तैयार क' रहलीह अछि। पंजा दुनू बड़दक परिचर्या मे व्यस्त छथि। हमहुँ सभटा काज सम्पन्न क' विश्राम मे छी।

मंडल जी सँ बहुत किछु जनबाक इच्छा त' हमरा लेल स्वभाविके छल। तँ पूछि देलियनि–रस्ता मे अपने माधव आ तिलकेसर कहि दुनू बड़द कँ सम्बोधन कयने रहियनि। एकर रहस्य गाथा हम जान'चाहब।

मंडल जी चौकी पर राखल मसनद सँ ओंगठैत कहब शुरू केलनि–कोनो विशेष नहि, अत्यन्त साधारण गाथा दुनूक छन्हि। माधव आ तिलकेसर प्रेत योनिक सदस्य छथि। दुनू कँ प्रेत योनि किएक आ कोना प्राप्त भेलनि तकर खिस्सा सुनू।

वायु छाती मे प्रवेश केलक। ताही सँ छातीक पसरब आ सिकुरब क्रिया आरम्भ भेल। अही क्रिया सँ विद्युत उत्पन्न होइत छैक जकरा प्राण कहल जाइत अछि। प्राण मे गति छै। तँ प्राण शक्तिक दोसर नाम भेल जीवन। पंचभूत प्राण एवं मोन मिलि क' सम्पूर्ण जीवनक निर्माण करैत अछि। शरीरक सम्बन्ध प्राण सँ, प्राणक मोन सँ तथा मोनक अति निकटक सम्बन्ध आत्मा सँ छैक। प्राण जखनहि शरीर सँ बाहर भेल तखनहि भेल मृत्यु अर्थात सभ किछुक अन्त। मुदा मनुक्खक मृत्यु मे ई उक्ति सत्य नहि छैक। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे पशु सँ देवता तक कँ भोग करक लेल शरीर भेटैत छन्हि। मुदा मानव शरीर त' कर्म आ ज्ञानक यज्ञ स्थली थिकै। यैह कारण छैक जे पशु सँ देवता तक मानव शरीर लेल उत्कट अभिलाषी रहैत छथि। तँ मनुक्ख कँ मृत्यु भेलोक बाद सभ किछुक अन्त नहि होइत छैक। सर्वश्रेष्ठ कर्ता अर्थात मोन, चेतना सँ प्रज्वलित, मृत्युक उपरान्तो कायम रहिए जाइत अछि। मोन मृत्यु भेलोपरान्त मात्र स्थूल शरीर त्यागि सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश टा करैत छथि।

मानव जीवन भरि कर्म एवं ज्ञानक यज्ञ में संलग्न रहैत छथि, तँ मनुक्ख कँ अहि तरहक शक्ति प्राप्त छन्हि। मृत्यु भेला पर मोन मस्तिष्क मे सुरक्षित संस्कार प्रकोष्ठ सँ कर्मक मोटरी मे आत्मा कँ लपेटि स्थूल शरीर त्यागि सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश करैत अछि आ तखन हुनक अगिला यात्रा शुरू होइत छन्हि। आब मोन कँ सूक्ष्म शरीर त्यागि कारण शरीर मे प्रवेश करबाक छन्हि। मुदा अहि घड़ी मे एक विरामक स्थिति आबि जाइत अछि। जन्म सँ अन्तकाल तक मोन नायक बनल रहैत छथि। कारण शरीर मे प्रवेश करितहिं हुनक अन्त भ' जायत, ई देखि मोन एक विकट द्वन्द मे फंसि जाइत छथि। खास क' मृत्युकाल जँ मोन तीव्र तृष्णाक

अधीन होथि, वासनाक पूर्ति मे बेहाल होथि, पुत्र मोह, धन मोह, यश मोह, कीर्ति मोह अथवा ककरहु सँ बदला लेबाक लालसा हुनका मे बाँकिए बाँचल रहि गेल होइन्हि त' मोन सूक्ष्म शरीर कैँ कारण शरीर मे परिवर्तन करबा मे बाधा उत्पन्न क' दैत छथि। एहन स्थिति मे सूक्ष्म शरीर कारण शरीर नहि बनि प्रेत बनि जाइत अछि। प्रेत कैँ शरीर नहि होइत छैक, मुदा कर्माधीन मोटरी मे बान्हल आत्मा संग मोन कायमे रहि जाइत छैक। अर्थात प्रेत बनल मोन अशरीरी होइतो अपना वासनाक पूर्ति मे बेकल हजारों, लाखों, करोड़ों बर्खक लेल अभिशप्त बनि जाइत अछि। तँ कहबी छै जे तृष्णाक त्याग करू, लोभ-मोह सँ हटले रहू एवं वासनाक तिरस्कार करु नहि त' पड़ि जायब फेर मे। फेर मे अर्थात प्रेत बनि जायब।

हम अधीर होइत कन्हाइ मंडल कैँ पुछलियनि-प्रेत योनि अही संसार मे छैक?

मंडल जी उत्तर देलनि–हँ यौ, अहि धरती पर बहुत तरहक संसार छैक। जीवात्माक संसार सँ बहुत पैघ प्रेतक संसार छैक। दया, ममता आ करुणा सँ भरल प्रेत होइत छथि जे निर्दोष होइतहुँ मृत्युकाल मोह-ग्रस्त भ' प्रेत बनैत छथि। दोसर कात दुष्ट, कामुक एवं अनका कष्ट देबा मे प्रवीण जीवात्मा प्रेत बनि अपन वासनाक पूर्ति करैत छथि। सूक्ष्म लोक मे कतेको स्तर मे प्रेतक निवास अछि। मुदा पंडित जी, प्रेत लोकक विस्तृत वर्णन छोड़ि एखन हम माधव आ तिलकेसर कोना प्रेत बनला तकर खिस्सा कहब।

माधव पछिलो जन्म मे माधवे रहथि। सरल, शांत, सज्जन आ धर्मक प्रति समर्पित माधव जन्महि सँ टुअर छलाह। माधवक माता-पिता एतेक सम्पत्ति छोड़ि गेल रहथिन जे माधवक जीवन-यापन लेल पर्याप्त छल। माधव कैँ आर्थिक चिन्ता नहि रहनि आ ओ अविवाहित रहितहुँ संतुष्टिक जीवन जीवैत छलाह। साधु-संतक सेवा मे सुख पबैत रहथि।

एक दिन हुनका गाम मे एकटा महात्मा अयलथिन। असल मे ओ महात्मा नहि धूर्त छल आ छल ठक। रटल संस्कृतक श्लोकक धारा-प्रवाह पाठ करैत लोक कैँ ओ अपन जाल मे फंसबैत छल। ओकर वेतन-भोगी चेला-चाटी द्वारा ओकर नीक जकाँ प्रचारक काज होइत छलैक। लोक कैँ एकर विश्वास दिआओल गेल रहैक जे महात्मा सालक दस माह अयोध्या मे रहैत छथि, फलाहार टा लैत छथि आ राम-भजन मे मगन रहैत छथि। मात्र दू मास घुमि-घुमि लोकक कल्याणार्थ ओ मंत्र-दीक्षा दैत छथि। अहि तरहें हजारो मनुक्ख कैँ ओ कपटी महात्मा अपन चेला बना चुकल छल। चेला द्वारा अर्पित नैवेद्य सँ महात्मा कैँ प्रचूर धन प्राप्ति होइत छलनि! ओही व्यवसायी महात्मा सँ माधव सेहो मंत्र लेलनि।

माधवक गुरुक प्रतिए भक्ति असीम छलनि। ओ गुरु कैँ साक्षात परमेश्वर

बुझि पूजा-अर्चना कयल करथि। एक दिन गुरुक मृत्यु भ' गेलनि। गुरुक मृत्युक समाचार पाबि माधव मूर्छित भ' गेलाह। माधव कैँ प्राणान्तक क्लेश भेलनि। भाव-सिंधु मे ऊब-डूब करैत माधव आवेश मे आबि प्रण ल' लेलनि। प्रण ई छलनि जे माधव ठाम-ठाम पर एग्गारह मंदिरक निर्माण क' गुरुक प्रतिमा मे प्राण प्रतिष्ठा करौताह। अपन सभटा अचल सम्पति बेचि माधव एक मंदिरक निर्माण करा क' गुरुक प्रतिमा स्थापित केलनि। दोसर मंदिरक निर्माण हेतु माधव गामे-गाम भीख माँगब शुरू केलनि। यद्यपि गुरुभाइ सेहो सहयोग देलथिन तथापि दोसर मंदिरक निर्माण होइत-होइत तीस बर्खक समय बीति गेल। अत्यधिक परिश्रमक कारणें दोसर मंदिर मे प्राण-प्रतिष्ठा काल माधवक शरीर हिया हारि देलकनि आ हुनक मृत्यु भ' गेलनि। मृत्यु काल माधवक मोनक समस्त चेतना एग्गारह मंदिर नहि बनबा पौलनि तकर असीम व्यथा सँ व्यथित रहनि। ताही स्थिति मे सृष्टिक नियमानुसार माधव प्रेत योनि मे पहुँचि गेलाह।

आब तिलकेसरक कथा सुनि लिअ। अँग्रेज भारत मे अपन एकक्षत्र साम्राज्य स्थापित क' नव-नव प्रथाक जन्म देलक। ओही मे छल जमीन्दारी प्रथा। जमीन्दारक एक नव जाति अँग्रेजक गुलामी मे सिरमौर्य बनल। छल-बल सँ मालगुजारी असूल क' जमीन्दार अँग्रेजक खजाना भरब शुरू केलक। मुआबजा मे जमीन्दार कैँ सभ तरहक शक्ति आ सुविधा प्राप्त भेलैक। जमीन्दारक अपन स्वभावक अनुसारे अनेक तरहक मनोरंजन करबाक अधिकार सेहो भेटलै। बाइजीक नाच, थियेटर, कुस्ती, फुटबॉल मैच आदि संगहि एकटा नव मनोरंजन आरम्भ भेल छलै आ से छलै भोजन भट्टक मुकाबला।

ओना त' तिलकधारी 'सर्वसोख' अपन समयक विख्यात भोजन भट्ट छलाह। मुदा हुनक पुत्र तिलकेसर 'रजोखड़ि' प्रसिद्धि मे अपन पिता कैँ पछाड़ि देलनि। श्राद्ध, एकोदिष्ट, जनउ एवं आन-आन पावनिक अवसर पर तिलकेसर 'रजोखड़ि' कैँ जमीन्दारक ओहिठाम सँ नोत भेटनि। हजारोक संख्या मे तिलकेसरक हराशंखी भोजनक दृश्य देख' लेल लोक एकत्र होइत छल आ आश्चर्य करैत तथा निमंत्रण देनिहार जमीन्दारक यश कैँ बखान करैत घुमैत छल।

तिलकेसर 'रजोखड़ि' कइएक टा मुकाबला जीतलनि। फुनगी झा 'भूतही बलान', भुलाइ मिसिर 'हराही', धमदाहाक कारी चौधरी 'डिग्गा' सनक आरो अनेक नामी-गरामी भोजन भट्ट कैँ परास्त क' तिलकेसर 'रजोखड़ि' अपन विजय पताखा फहरौलनि। नाम, यश, प्रतिष्ठा संगहि ओ धन सेहो उपार्जन केलनि। तिलकेसर 'रजोखड़ि' तीस गोट क्वीन विक्टोरिया बला चानीक टाका जीति चुकल छलाह। ओहि समय मे दू अन्ने एक सेर घी बिकैत छलहि। तीसो चानीबला टाका

सँ तिलकेसर कैँ बड़ मोह भ' गेल छलनि। ओ अपन डाँड़ महक जलखरी मे ओहि टाका कैँ रखैत छलाह। तथापि ओ अहि तीसो चानीबला टाकाक सुरक्षा लेल सदिकाल चिन्तित रहैत छलाह।

एक दिन कोशी-कनहाक नामी जमीन्दार बटेश्वर ठाकुरक धर्म पत्नी लाल दाइ दिस सँ तिलकेसर 'रजोखड़ि' कैँ भोजनक मुकाबलाक नोत भेटलनि। मुकाबला केनिहार छलाह झौआ राउत 'पहाड़'। मुकाबला मे पाँच चानीक रुपैया राखल गेल रहैक। तिलकेसर 'रजोखड़ि' अपन भातीज बिकौआ 'डबरी' संगे बटेश्वर ठाकुरक दलान पर पहुँचलाह। गामे-गाम ढोलहो पड़ि चुकल छलै। तीन दिनक बाद मुकाबला रहैक। मुकाबला दिन लोकक भीड़ दलान कैँ ठसाठस भरि देलक। लाल दाइ सिड़कीक अढ़ सँ मुकाबला शुरू करैक इशारा केलनि। एक-एक पसेरी अरबा चाउरक भात, डोलभरि राहरिक दालि, पाँच-पाँच ओरिका घी, एक्कैस तरहक भूजिया आ रसदार तरकारी, तीन-तीन बट्टा बड़ी, आ एक-एक कस्तारा दही दुनूक आगाँ परसल गेल। दुनू भोजन भट्ट एतबा वस्तु कैँ आँखिक पल खसैत मे उदरस्त क' गेला। तखन सकरौड़ी परसब शुरू भेल। एक, दू, तेसर डोल सकरौड़ी खाइत-खाइत तिलकेसर 'रजोखड़ि' पछर' लगला। ओ झौआ राउत 'पहाड़' दिस तकलनि। तत्काल तिलकेसर 'रजोखड़ि'क मोन मानि गेलनि जे कहिओ ने भेल से आइ हैत। मुदा ओ हिम्मत नहि हारलनि। आब लड्डु आ खाजा गनि-गनि क' दुनूक पात मे आब' लागल। लगे मे बैसल छल बिकौआ 'डबरी'। ओ बुझि गेल जे काका लटपटा रहल छथि। ओ काकाक गट्टा पकड़ि लेलनि आ कहलनि—सभ दिन तोंही जितबहक से कतौ भेलैए? काका हौ, पहिने प्राण त' बचाबह।

परास्त भेल तिलकेसर 'रजोखड़ि' अपन भातीज संगे गाम बिदा भेलाह। मुदा कोस भरि रस्ता जाइत-जाइत अफरि क' भूमि पर पड़ि रहलाह। अजीर्ण भोजन हुनक पेट कैँ छत्ता बना देने छलनि। हुनक भातीज बिकौआ 'डबरी' कैँ बुझ' जोकरक भ' गेलै जे आब काका नहि बंचता। ओ गमछा कैँ बियनि बना तिलकेसरक मुंह कैँ हौक' लागल। ओहि काल तिलकेसर कैँ मृत्युक चिन्ता नहि रहनि। अरे! आगाँ आ की पाछाँ, मृत्यु त' हेबे करैत छैक। असली चिन्ता हुनका रहनि डांड़ महक तीसो चानीबला टाकाक। हुनका विश्वास त' भगवानो पर नहि छलनि तखन भातीज पर कोना होइतनि। ओही मनोदशा मे तिलकेसर 'रजोखड़िक' प्राण छुटि गेलनि आ ओ प्रेत लोकक बासी भेलाह।

कान्हाइ मंडल निःसांस छोड़ैत कहलनि —माधव आ तिलकेसर सँ हमर भेंट सीतामढ़ीक बड़दक हाट पर भेल छल। दुनू बड़दक शरीर मे रहथि आ आतुर भेल हमरा दिस तकैत रहथि। हमरा सभटा माजरा तुरंते बुझ' मे आबि गेल।

दुनू कैँ कीनि अपन सेवा मे अनलहुँ। दुनूक प्रेत योनि सँ मुक्त होयबाक समय लगचिआयले छन्हि।

एतेक कहि मंडल जी फेर हमरा पुछलनि—किछु आरो जिज्ञासा?

हमर जिज्ञासा त' अनन्त छले। पुछि देलियनि—अपने सेठ सियाशरण झुनझुनबाला एवं सेठ बनबारी लाल कैँ धर्मात्मा कहि सम्बोधन कयने रहियनि। व्यवसाय मे बनिआँ केवल नफाक चिन्ता करैत अछि। लाभ लेल ओ लोकनि शोषण कर' मे कहिओ कंजूसी नहि करै छथि। फेर ओ धर्मात्मा कोना भेलाह?

मंडल जी उत्तर देलनि—दरिद्रक परिभाषा कैँ परिभाषित कर' बला ई सम्पूर्ण क्षेत्र पानि मे डुबल, लाचार, विभिन्न प्रकारक रोग सँ ग्रसित एतुका मनुक्ख कैँ दरिद्रतम अवस्था मे पहुँचा देने अछि। किनको ने उहि छन्हि आ ने उत्साह। मात्र जीवन रक्षार्थ एक मुट्ठी अन्न आ पोठी मांछक झोर हिनका सभहक मांग छन्हि। दुनू सेठ भारतक विभिन्न भाग सँ सस्ता चाउर, मकइ आ कखनहुं काल जनेर आनि बहुत कम मूल्य मे एतुका लोक कैँ उपलब्ध करबैत छथि। दुनू सेठक आन-आन ठाम बहुत तरहक व्यवसाय छन्हि जतए ओ नफा कमाइत छथि। मुदा एतए ओ दुनू सेठ मात्र मानव सेवाक भाव सँ प्रेरित भ' व्यापार करैत छथि। तीन पुरखा सँ दुनू सेठक चाउर, मकइ आ जनेर कैँ हमही धर्मकांटा सँ घेघिया तक उघि रहलहुँ अछि। हम हिनकर सभहक सेवा-भावक साक्षी छी। तैँ अहि दुनू सेठ कैँ हम धर्मात्मा कहि सम्बोधन कयल। हिनकर सभहक निःस्वार्थ भाव सँ कयल कर्म कैँ बुझि अहाँ कैँ आश्चर्य भ' रहल अछि ने? सभटा विधिक विधानक अनुरूपहि काज भ' रहल छैक। अहि मे किछुओ अतिशयोक्ति नहि अछि। आब देखिऔ, अहीँक एखुनका यात्राक की उद्देश्य अछि? अहाँ चननपुरा पहुँचि स्वेताक सम्बाद गोवर्धन तक पहुँचा देबनि, सैह ने? भ' सकैत अछि जे विधाताक नियोजन किछु आरो होनि? भ' सकैत अछि जे अहि यात्राक कारणेँ अहाँ कैँ ओ तत्त्व प्राप्त भ' जाए जकरा प्राप्त कर'लेल मनुक्ख अनेकों जन्म मे तप करैत रहैत अछि। किछुओ भ' सकैत अछि। सभ किछुक सम्भावना अहि जगत मे छैक।

मंडल जीक अन्तिम किछु वाक्य सँ हम विस्मित होइतहुँ, से नहि भ' सकलहुँ। कारण 'भोजन तैयार भ' गेलैक' सूचना संगे पंजा कल जोड़ने आगाँ मे ठार छलाह।

8.

दोसर दिन भोर मे आँखि खुजल। नजरिक सामने ठार छलाह पंजा। सूचित केलनि–गुरु टायरगाड़ी ल' धर्मकांटा लेल प्रस्थान क' चुकल छथि। अहाँक टहल-टिकोराक भार हमरा द' गेलाह अछि। श्रीमान, अपने स्नान आदि सँ निवृत्त होइ। सुकुमारी जलपान तैयार क' रहलीह अछि। अहाँक अगिला यात्राक लेल घाट पर नाव प्रतीक्षा मे अछि।

हमर अगिला मंजिल छल भँभरा नामक स्थान। स्वेताक पत्र अनुसारे चननपुरा ओतए सँ मात्र एक कोस पूर्व। जखन पंजा संगे घाट लेल बिदा भेलहुँ त' सभ दिस तकलहुँ। प्रभात बेला अपन विलक्षणता मे गमकि रहल छल। आकाश शान्त छल आ हवा मे शीतलता रहैक। मोन मे नव उत्साह आ ताजगी भरि गेल छल। राति मे घेघियाक भूगोल ठीक सँ नहि देखने रही से एखन देखि रहल छलहुँ। गाछ-बृक्ष एंव बाँसक बोन सँ घेरल करीब एक मील लम्बा आ आध मील चौड़ा टील्ला जकाँ उच्च स्थान, सैह भेल घेघिया। बाजारक शुरूए मे पोस्ट ऑफिस आ ग्रामीण बैंक। तकर बाद धर्मकांटा थानाक एकटा नाका। तकर बगल मे छोट-छोट दोकानक कतार। एतय सेनुर-टिकली सँ ल' सूति, डरकस तक भेटैत छल। पानि मे घेरल तीस-चालीस गामक सभटा जरूरियात अही ठाम भेटैत छलै। तकर आगाँ सेठ बनबारीलालक पक्का मकान आ हुनक गद्दी। सकाल रहितो ओतए कर्मचारी अपन-अपन काज मे व्यस्त छलाह। किछु खाली स्थानक बाद हलुआइक दोकान पतियानी मे। सभ दोकान मे बहुत रास चौकी पसरल। आम मुसाफिर जनिका घेघिया मे राति क' रुक' पड़ैत छन्हि ओ सभ अही दोकान मे भोजन आ विश्राम करैत छथि।

तकर बाद टूटल-भांगल अस्पताल। पंजा कहलनि–डाक्टर बाबू स्वयं दुखित भ' पलायन क' गेलाह। हुनक दायित्व कैँ सम्हारने छथि हुनक कम्पाउन्डर। दबाइ-दारू सँ ल'क' चीर-फार तक सभटा काज ओ पेन्ट-टाइ पहिर क' करैत छथि। रोगीक जीयब-मरब त' उपरबलाक हाथ मे, अहि मे कम्पाउन्डर कइए की

सकैत अछि।

फेर बड़ी दूर तक खाली स्थान। तखन थियेटरक बड़ी टा सामियाना देखल। अगल-बगल कलाकारक आवास लेल छोट-छोट राउटी। सामियानाक उपर बाँस मे एकटा पताखा टांगल छल। ओकरा देखि पंजा भाव सागर मे डुबि गेलाह। थोड़ेक डुबकीक बाद ओ अपन मोनक उद्गार कहलनि—अही थियेटर मे सुकुमारी हमरा देखने छलीह आ हमर प्रेम मे अपन सभ किछु न्योछाबर क' देने छली।

हम त' पंजा कैँ देखिए रहल छलहुँ। हुनका की जवाब दितियनि, चुपे रहलहुँ। पंजा फेर कहलनि—अहि सँ आगाँ जायब ठीक नहि होयत। एखनहुँ पसिखाना मे लोक कैँ ताड़ी पिबैत देखबै। घुरि जाउ। ओ देखिऔ, गाम-गाम जेबा लेल फुट-फुट घाट। अहाँ जेबै भँभरा। अहाँक नाव सुथरा घाट सँ खुजत।

नाव पर बैसा क' पंजा उचिती-मिनती केलनि आ कहलनि—श्रीमान, सभ किछु ठीक रहल त' तीन बजिते अहाँ भँभरा पहुँचि जायब। ओतए सँ चननपुरा छैहे कतेक दूर? चलि क' जेबैक तइयो चिराग-बत्ती सँ पहिने पहुँचि जेबैक। अरे हँ! मोन पड़ल। गुरुजी औंठी देलनि अछि। कहलनि हेएँ जे जाहि आंगूर मे अंटनि पहिर लेथि। विपत्ति मे सुरक्षा करतनि।

पंजा औंठी द' वापस गेलाह। हम नाव दिस ताकल। नाव छोट, मजबूत आ सुन्दर बनल छलै। नाव मे बैसक स्थान बनल रहैक। ओतहि सुभ्यस्त होइत बैसि रहलहुँ। जीवन मे नावक यात्रा कयने नहि रही, तैँ उत्सुक्ता आ गुदगुदी, दुनू छल।

समय करीब आठ बाजल हेतैक। नाव ससरलै। सूर्यक ताप सँ हवा गर्म होब' लागल रहै। पैघ-पैघ कास-पटेरक बीच बाटे रस्ता। पानि कम्मे गहींर, ठाम-ठाम पर उथर। हम चुपचाप अपन मोनक भाव मे निमग्न रही। कन्हाइ मंडलक सत्संग सँ अर्जित अध्यात्मक अनुभव ज्ञान पाबि मोन संतुष्ट जकाँ छल। स्वेता सेहो मोनक दरबज्जा बाटे ताक-झाँक क' रहल छलीह। सभ किछु नीक लगैत छल। पछिला सभ घटना कैँ सोचि रहल छलहुँ। ताही काल कोनो युवतीक पातर आ खनकल ध्वनि सुनाइ पड़ल—दुनू हाथे नावक दुनू कोर कैँ पकड़ि लिअ। पानि मे डुबल बहुतो नदी बहैत छैक। ओही मे सँ एकटा मे नाव प्रवेश केलक अछि। डुबलाहा धारक गति बहुत तेज होइत छै। खतरा छै, तैँ सावधान क' देलहुँ अछि। ओना अहाँ कैँ हेल' त' अबिते हैत?

अबाज सुनि अकबका गेलहुँ। दुनू हाथे नावक बिचला पाटन देल बल्ला कैँ मजबूती सँ पकड़ि घुमि कैँ पाछाँ तकलहुँ। बाप रौ बाप! नाव त' एकटा माधुरी खेबि रहलीह अछि। नाव मे यात्रीक नाम पर हम एसगरे छी। नाव खेबनिहारि युवतीक रूप लावण्य देखि आँखि चोन्हरा गेल। माथ मे सनसनी पैसि गेल। चेतना

उधिया लागल। हम विस्मित आ आश्चर्यित टकटक तकैत रहि गेलहुँ। एहन उजरल स्थान मे एहन रूपसुन्दरि कोमहर सँ अयलीह?

सही मे नाव तेज धार मे प्रवेश कयने छल, किएक त' पूरा नाव डगमगा रहल छलै। संगहि हमर शरीर मे कंपन भ' रहल छल। छातीक धुकधुकी कान मे सुनाइ पड़ि रहल छल। युवती नाव कैँ सम्हार' मे अत्यधिक परिश्रम क' रहल छलीह। परिणाम छल जे हुनक सौन्दर्य बहसीक रूप धारण क' हमरा ललकारब शुरू क' देलक। उद्दण्डता पुरुषक स्वभाविक गुण थिकै। अवसर पाबि ई गुण निर्लज्ज बनबा मे संकोच नहि करैत अछि। ओहुना भुखायाल लोकक आगू लड्डूक थार राखि देला सँ जे ने होअय? हमहुँ ओहि बालाक रूप-माधुर्यक पान कर' मे कंजूसी करब छोड़ि एकटक हुनका निहार' लगलहुँ।

धिपाओल सोनाक सूर्ख रंगबला हुनक कांति, छिड़िआयल पैघ-पैघ केशक लट, कान मे झुमैत चानीक झुमका, नाक मे सटल नथिया, मींचल ठोर, पसीना मे भीजल लाल-लाल गाल, लहंगा आ ब्लाउज मे अपसियाँत हुनक यौवन। युवती गजब कैँ सुन्नरि छलीह। लग्गा सँ नावक संतुलन सम्हारक लेल एक पयर कैँ नावक मांग पर टेकने छलीह। पयर अलता सँ रंगल छलनि। पयर मे पायल, पायल मे बिछिया आ बिछिया मे खनक सोझे हमर मति कैँ भसियाब'क लेल बहुत छल।

हुनक काजर सँ पोतल आँखि मे हमर आँखि ठक्कर मारलक आ ताही क्षण हमर सत्यानाश भ' गेल। जहिना मंडलजीक सम्पर्क मे अबिते हमर चित मे अध्यात्म प्रवेश क' गेल छल, तहिना युवतीक चुम्बकिए परिधि मे अबिते हमर मोन चटपट-चटपट कर' लागल। बिना हमर अनुमतिक हमर मोन चहक सेहो लागल। बहुत पहिने रफीक गाओल एकटा हिन्दी गीत मोन पड़ि गेल—'ये रेशमी जुल्फें, ये शरबती आँखें'। शरबतीक अर्थ अपन भाषा मे की होइत छै से तखने बुझा गेल छल।

संसारक सभटा नीक लोक एहन बहसल मोन कैँ दुतकारैत छथि। मुदा हालत सँ बेहाल भेला पर एकरे छाती मे सटैत छथि। ई कोनो एना-ओना गप्प नहि भेलै। मात्र मनुक्ख मनुक्खे अछि तकर परिचायक भेलै। यथार्थ मे हम ने कोनो संन्यासी रही आ ने त्यागी। हम अपंग आ निर्बल सेहो नहि रही। तैँ बुझि पड़ल जे सभटा अत्याचार भगवान हमरे लेल गढ़ने छलाह। ओना हमर बयस ओतबे छल जाहि बयस मे सभटा गलती क्षमा योग्य होइत छैक। ताइ पर सँ नाव निर्जन रहै आ युवती मादा। हमर आदर्शक आवरण वस्त्र पर पड़ल गर्दा जकाँ उड़िया गेल। तेज धाराक कारणेँ नाव करोंच-बेरोंच भ' रहल छलै। लग्गा

कैँ चारूकात घुमबैत युवतीक सौन्दर्य लहकि रहल छलै आ से देखि-देखि हमर होश रसातल दिस जा रहल छल। सभटा मर्यादा एकहि संग उधिया गेल आ एकहि टा शैतान मोन पर सबारी कसि देलक–चढ़ि जो बेटा सूली पर, राम तोहर भला करथुन। हम उठि कैँ ठार भेलहुँ। हमरा ठार भेल देखि आ की भ' सकैत अछि हमर उदण्ड मनोभाव कैँ परखैत, रूपकुम्मरि हमरा दिस तकैत कहलनि–हँ, हँ। ठार जुनि हौउ। डगमगाइत नाव कैँ संतुलन मे राखब, सैह भेल धीरता। धीर बनू, वीर बनू आ चुपचाप नाव मे बैसल रहू। अन्यथा डुबि क' अहाँ प्रेत बनी आ हम प्रेतनी, से की नीक बात हेतै?

छड़पैत कुकुरक पिल्ला कैँ कान पकड़ि कियो उठा क' पटकि दैक तखन जेना ओ किकिया उठैत अछि, तहिना हमर मोन किकिआय लागल। ओना त' कहबी छै जे मेघ कैँ बरस' दिऔ, कोयल कैँ कुहक' दिऔ, फूल कैँ गमक' दिऔ नहि त' अनर्थ भ' जेतै। मुदा से किछु ने भेलै। भेलै ई जे कोनो अनर्थ होइतै से नहि भेलै। हम धधकैत रक्ताभ आँखि सँ ओहि रूपवती कैँ देखल। कामक ज्वाला मे बड़ बेसी ताप होइत छै। ओ ताप सहबा लेल मूर्खता चाही। हम मूर्ख नहि छलहुँ। साधारण, अति साधारण मनुक्ख रही। तैँ ज्वाला मे धधकि रहल छलहुँ। आब कयल की जाय? युवतीक कठोर आ निर्मम निर्देश सँ हमर कल्पित फूलक एक-एक पंखुरी टूटि-टूटि नाव पर छिड़िया गेल। बिर्रो उठल हमर उमंग मे विराम लागि गेल। युवतीक बिपरीत दिशा मे घुमि माथक पसिना पोछलहुँ।

भटकल चित कैँ स्थिर करबाक प्रयास करिते रही की एक बातक ध्यान आयल। मोन मे झटका जकाँ लागल। कोनो नियोजित कार्यक्रमक अधीने हमरा मोहरा बना कियो खेल त' ने खेला रहल छथि। किएक त' एसगर नाव मे मेनकाक संग? मोनक दर्पण मे पहिने मंडल जीक छवि आयल। फेर पंजाक विकृत चेहरा मे दाँत निकालि क' हँसब देखल आ अन्त में सुकुमारिक बिहुँसैत ठोर। हौउ बाउ। जे व्यवस्था केलहक ओहि मे हमर कोन दोख। आगिक देवता, पानिक देवता संगहि काम देवता। अवसर देबहुन त' कामदेव खुराफात करबे करताह। मनुक्ख कैँ फुटल ढोल कहिऔ आ की बज्र सिलौट। अछि त' देवतेक अधीन। काम बेगक तीव्रता मे बुद्धि आ विवेक चौपट भ' जाइत छैक। खैर, जे भेलै से भेलै। हम धरि बाँचि गेलहुँ। धन्यवाद देल ओही युवतीक वाणी कैँ जे हमरा सचेत क' देलक। हम चुपचाप अपन स्थान पर बैसि रहलहुँ।

कनेकालक बाद पीठ मे गुदगुदी होब' लागल। युवती हमरे दिस ताकि रहल छथि आ हमर पीठ कैँ अपन नजरि सँ छेदि रहल छथि तेहन अनुभव भेल। हम तखनहुँ भीतरे-भीतर अचैन रही। कने-काल पहिलुका भ्रमित मनोदशा कैँ संजत

बनेबाक प्रयास मे लागल रही। ओहि युवती नामक मरीचिका मे फंसब उचित नहि। हमर यात्राक उद्देश्य मे व्यवधान पड़ब ठीक नहि। प्रचण्ड काम पीड़ाक प्रलयंकारी प्रकोप सँ व्यथित, डगमगाइत, भसिआइत अपन चेतना कैँ सही मार्ग पर आन' मे यद्यपि हमरा बड़ मेहनत भेल छल, तथापि हर्ष छल जे हम सफल भ' गेल रही। आगाँ मोन कैँ ठेकान मे राखी ताहि लेल प्रतिबद्ध भ' गेल छलहुँ।

ठीक ओही काल रूपक जादुगरनीक आबाज सुनल–खतरा टलि गेल। नाव धार कैँ पार क' गेल। आब शान्त भेल पानि मे आगाँ बढ़ि रहल अछि।

हम हुनका दिस ने ताकल आ ने उत्तर देल। कारण, तुरंते हमहुँ धार पार कयने रही। मुदा ओ मान'बाली होथि तखन ने? झहरैत फुलझड़ी नावक पछिला मांग सँ अगिला मांग पर आबि गेलीह। एतए लग्गा नहि नाव खेबक लेल छोट-छोट चप्पू छलै। ओ पलथी मारि ठीक हमरा सामने बैसि गेलीह। चप्पू कैँ हाथ मे पकड़ि आ ओकरा घुमबैत हमरा पुछलनि–अहाँक नाम प्रीतम अछि?

आगि मे जरैत झोपड़ी सँ पड़ा क' बाहर त' भेल जा सकैत अछि, मुदा अहि नाव पर सँ पड़ा क' हम जैतहुँ कत'? अकबकाइत जबाब देलियनि–नहि त', हमर नाम प्रीतम नहि अछि। अहाँ एहन प्रश्न किएक पुछलहुँ?

युवती खिलखिला क' हँसि पड़ली। हुनकर मोती सन दाँत चमकि उठल? कामदेव पुनः हमर माथ मे सूल्फा भोंक' लगलाह। मुदा हम पूर्ण सतर्क रही। युवती अपन नजरि हमरा आँखि मे ओंगठबैत कहलनि–प्रीतम हमर होइबला पतिक नाम थिक।

जन्म कुंडली बनाब' बला ज्योतषी 'हिनकर कतेक औरदा हेतनि, ई कतेक टा हाकिम बनताह' आदि भखै छथि। मुदा अहि रूपबाला कैँ कोनो पहुँचल ज्योतषी भेटि गेलथिन्ह जे हिनक होइबला पतिक नाम तक भाखि देलनि, आश्चर्य।

मुरझायल आ हारल हमर मुखाकृति देखि ओ पुछलनि–अहाँक एहन झमारल मुंह किएक अछि? पिआस लागल हो त' बाजू? सभ किछुक इन्तजाम क' क' हम रखने छी।

हम धरफराइत उत्तर देलियनि–नहि, नहि। हमरा पिआस-तिआस नहि लागल अछि। अहाँ अपन बात कहू।

युवती कहलनि–जखन अहाँ सन सुन्दर युवक भँभरा जैबा लेल नाव भाड़ा करैत छथि त' हमर बाबा हमरे नाव खेबैक काज मे नियुक्त करैत छथि। काल्हि राति पंजा सेठ बनबारीलालक गद्दी पर हमर बाबा कैँ कहने रहथिन–राम भज्जू, काल्हि भोरे गुरुजीक पाहुन भँभरा जेथिन। ओ सज्जन, सुशील आ नवयुवक छथि। हुनका भँभरा सँ आगाँ चननपुरा तक जेबाक छन्हि। तँ सकाले तौँ नाव

तैयार रखिह जे दिन अछैते पाहुन भँभरा पहुँचि आगाँक यात्रा सांझ तक पूरा क' लेथि। नावक भाड़ा गुरुजीए देथुन। पंजा सँ सूचना पाबि हमर बाबा पुलकित भ' गेलाह। आंगन आबि पुचकारैत कहलनि—उलपी, काल्हि सकाले तोँ ही नाव ल' क' भँभरा जेबहिन। रातिए बटखर्चाक इन्तजाम क'ले।

उलपी ठीक हमर सामने बैसल छलीह। हुनक दुनू हाथ चप्पू चलबै मे दुनू दिस गोल-गोल घुमि रहल छलनि आ हुनक छाती ऊपर-नीचा डोलि रहल छलनि। हुनक रूपक पसाहीक ताप सोझे हमर शरीर कँ तपा रहल छल। अमृतक एक बुन्न पर्याप्त होइत छैक। मुदा जँ ककरो अमृतक कुंड मे ठेल देल जाए त' निश्चय ओ डुबि क' मरि जायत। हम तेहने अवस्था मे उब-डूब क' रहल छलहुँ। ताही काल उलपी अपन जीवनक इतिहास कह' लगलीह—हम एक बर्खक रही तखने हमर माय मरि गेली। बाप दोसर सम्बन्ध क' लेलनि आ सतमाय जरे हुनके गाम जा क' रह लगलथिन। फेरो घुमि क' कहिओ ने एलथिन। हमर पालब-पोसब सभ किछु केलनि हमर बाबा। जखन हम जवान भेलियै त' हमर बाबा कँ हमर बिआहक चिन्ता भेलनि। ओ हमरा गुरुजी के पास ल' गेला आ हमर बिआह द' गुरुजी सँ पुछलनि। गुरुजी कहलथिन—घबड़ाइक कोनो बात नै छै। उलपीक बिआह प्रीतमक साथ होतै। प्रीतम एकरा भँभराक रस्ते मे नावे पर भेटतै। प्रीतम उलपी कँ देखतहि एकरा पर मोहित भ' जेतै आ एकरा संगे बिआह क' अही ठाम रहि जेतैक। आब गुरुजीक बात झूठ त' नइ हेतै?

गुरुजी भेला मंडल जी। उलपी अहि युवतीक नाम भेल। बाबा भेलथिन राम भज्जू। मुदा प्रीतम के भेलाह? आब बुझल सभटा गप। उलपी कँ दोख देनाइ कोनो तरहें उचित नहि।

उलपी चप्पू चलेनाइ छोड़ि हमरा दिस नजरि टिका क' कह' लगलीह—पछिला तीन बर्ख सँ हम प्रीतमक प्रतीक्षा मे छी। आधा संसार प्रीतमे देखाइए। ओकरे नाम भजलियै आ जरलाहा जवानीक दुर्गति सहलियै। जखन अहाँ कँ देखलहुँ त' मोन मे सोचलहुँ जे एहन रूपकुमार अबस्से प्रीतम होयताह। मुदा अहाँ कहैत छी जे अहाँ प्रीतम नइ छी। तखन अहीं बताउ, ओ सरधुआ छै कतए? हमरा कहू जे हम की करी?

उलपीक पीड़ा सँ त' पंचकन्या सेहो काँपि उठल होयतीह। हमरा लेल विकट परिस्थिति छल जे हम उलपी कँ कहियनि की? हम त' हुनक संगति मे स्वयं सहानुभूतिक पात्र बनि गेल रही। उलपीक यौवनक उद्दीपन, नारी-पुरुषक निकटता, प्रकृतिक अनमोल खेल आ भूखल मनुक्खक विवसता सभ किछु हमर समक्ष आबि सम्मलित रूपें आक्रमण क' देने छल। हम परास्त भ' रहल छलहुँ। उलपी सँ

अधिक सहायताक हमरा जरूरी छल। मोनक भाव कैँ दाँत किचने रोकि हुनका दिस ताकि रहल छलहुँ।

उलपी अपन आँखिक डिम्भा कैँ नचबैत कहलनि–हम व्रत, उपास किछु नै करैत छी। दुनू सांझ मांछ-भात खाइत छी। तैँ हम जे कहब सभटा सत्य कहब आ बिना घुरछी-फिरछी के कहब। हम अहाँ सँ एकटा विनती कर' चाहैत छी।

अहि कली कैँ मददि अवस्से होयबाक चाही। ताही हुलास मे उलपी कैँ कहलियनि–विनती नहि, आदेश दिअ। अहाँक मददि कर' लेल हम सभ तरहें तैयार छी। बाजू, बाजू ने? अहाँ कैँ केहन मददि चाही?

उलपी पहिने निःसांस छोड़लनि। थोड़े काल तक हमरा अजमाइस केलनि। फेर दाँत पर दाँत बैसा, ठोर पटपटबैत कहलनि–घेघिया मे थियेटर देखैत-देखैत हमरा पुरना बहुत रास खिस्सा बुझल भ' गेल अछि। तैँ हमर विनती अछि जे कने काल लेल अहाँ पराशर मुनि बनि जाउ। हम त' सत्यवती बनले छी। नावक सवारी छैहे आ चारूकात निर्जन सेहो छै। अहि तरहें अहूँक ताप मेटा जैत आ हमरो किछु कालक लेल प्रीतम सँ भेंट भ' जायत।

लोटा-डोरी दुनू इनार मे खसि पड़ल। युवतीक मनोविज्ञान सँ त' परिचय नहि छल मुदा अपन भीतरका लोभक जानकारी त' अवस्से छल। हृदय-कूप मे पिपही बाज' लागल। संसारक सभटा वस्तु मे सुआद आबि गेल। उलपी प्रणय निवेदन केलनि, आब त' अन्दाजे टा कयल जा सकैत अछि जे हम केहन स्वप्निल संसार मे पहुँचि गेल होयब। ओना त' बैशाख मास रहै। गर्म लू क थापर, डूबल, सड़ल, नरकीय वातावरण, काश-पटेर सँ भरल, थमकल पानिक दुर्गन्ध, सभटा परिवेश पूर्णतः दुषिते छल। मुदा उलपीक सौन्दर्य आ बजबाक छटा मे एतेक ने मादकता रहै जे हमर ओ क्षण रसमय बनि गेल छल। हवा मे सुगन्धि पसरि गेल, गर्म रौद मे इन्द्र-धनुषी जलवाष्प भरि गेल, काश-पटेर मे रंग-बिरंगी तितली उड़' लागल आ दिशा-दिशा मे मुरलीक प्रेम-धुन पसरि गेल। हम आत्म-विभोर भ' गेलहुं। हमरा अपन सौभाग्य पर अपनहि इर्खा होब' लागल। तथापि हम अपन हर्षक भाव कैँ झँपैत उलपी कैँ पुछलियनि–एहन विनती अहाँ किएक केलहुं जाहि सँ मोन खुशी सँ बताह बनि रहल अछि?

उलपीक नजरि सोझ नहि रहलनि, बक्र भ' गेलनि। ओ कात-करोट दिस तकैत कहलनि–कनेकाल पहिने नाव पर ठार भ' अहाँ चिल्होरि जकाँ हमरा पर झपटा मारक लेल तैयार भ' गेल रही ने?

–अच्छा! मुदा हमर मोनक भाव कैँ अहाँ कोना परेखि लेलियै?

–आँखि त' मोनक खिड़की होइत छै। पुरुषक आँखिक भाषा पढ़बाक लेल

पाठशाला जाए पड़ैत छै की?

—मुदा से भाव की आब बैसले छै? ओहुना पराशर मुनि आ सत्यवतीक संयोग त' विशेष कारणे भेल छल। वेदव्यास कैं पृथ्वी पर जन्म लेब अनिवार्य भ' गेल छलनि तैं प्रकृति ओहेन बन्दोबस्त केलनि।

—सभटा फूसि। एहन बात बाजि यथार्थक मुंह नहि दुसियौ। पाप होयत। ओ आन किछु नै छलै, एकाएक जागल काम वासनाक पूर्तिक निमित्ते दुनूक मिलन भेल छलै। परिणामस्वरूप किनको त' आबैए पड़ितनि। अवसर देखि वेदव्यास आबि गेलाह। हम पहिने कहि चुकल छी जे झाँपि-तोपि क' बजबाक हिस्सक हमरा नै अछि।

हमरा मोन मानि गेल छल जे कन्हाइ मंडलक अध्यात्मिक प्रवचन सँ हमरा जीवन-रहस्यक परिचय भेटि गेल अछि। मुदा ताहू सँ आगाँ उलपीक कथन मे प्रकृति-रहस्यक उद्घाटन नीक जकाँ भ' रहल अछि से स्पष्ट रूपे बुझाय लागल। हम फेर सँ उलपीक आँखि मे तकलहुँ। ओतए समर्पणक टेमी लहलहा रहल छल। हमरा बर्दास्त नहि भेल, हम नजरि हटा लेलहुँ। की तखने उलपी कहलनि—अहींक बात कैं सत्य मानि लेलहुँ जे पराशर मुनि आ सत्यवतीक मिलन वेदव्यासक जन्मक अनिवार्यताक कारणे भेल छल। मुदा ओहने अनिवार्यताक त' एखनो आ की ओहू सँ बेसी आवश्यकता छैक।

—से की?

—आन्हर छी? देखाइ नै पड़ैत अछि एतुका दशा। कनहा, कोतरा राजाक गद्दी पर बैसल अछि तखन जे ने होए? अयँ यौ, मात्र गंगा तक एक नहर चीर देल जाइक त' एतुक्का खेत-खरिहान जागि जेतैक। खुशहाली पसरि जेतैक। मुदा एकरा लेल चाही कोनो युग-पुरुषक जन्म जे अपन कल्पना सँ, अपन शौर्य सँ एतुका भाग्य कैं पलटि सकए। हमरा अहाँक संयोग सँ भ' सकैत अछि जे एहन महान आत्मा धरती पर आबि जाथि। तखन त' हमरा-अहाँक संग डुबने अहि डुबलाहा परगनाक कल्याण भ' जेतैक।

उलपीक प्रस्तुतीकरण निरामिष छल। हुनक तर्क सेहो अकाट्य रहैन। हमर दुनूक विचारक विधिवत एकीकरण भेल। सिल्लीगुड़ी सँ दार्जिलिंग जेबा लेल गाड़ी तैयार भ' गेल। भिसील सेहो बाजिगेल।

पंडित राज शेखर दत्तक खिस्सा वाचन मे एकटा लय छलनि, एकटा गति छलनि आ कम वयसक दुनू भातीज लेल पर्याप्त रोमांस छलनि। मुदा खिस्सा वाचनक अहि बिन्दु पर थोड़ेक व्यवधान भेलै। सत्य घटनाक वर्णन मे थोड़ेक

अतिक्रमण त' हेबे करैत छै। मुदा वीर बाबू सनक संयत विचारधाराबला युवक कैँ स्थिति कोनादन लगलनि। पंडित ककाक ध्यान बहटारैत ओ पंकज दिस घुमि कैँ बजला–बड़ी काल सँ अहाँ परबा जकाँ घुटकि रहलहुँ अछि, से किएक?

पंकज भभा क' हँसि पड़ला आ कहलनि–भाइजी, नुका क' प्रेम कर' मे मजे किछु आउर छै?

–से की? अहाँ के एकर अनुभव कत' भेल?

पंकज फेर सँ ठिठिआयब शुरू केलनि आ ठिठिआइते बजबो केलनि-खी खी, पछिला दुर्गा पूजाक मेला मे। खी... खी..., जेबी मे थोड़े ढौआ चाही, भाइजी... खी... खी..., बजैत लाज होइए।

वीर बाबू आ पंकजक वार्तालाप सँ पंडित राज शेखर दत्त कैँ ने सहजता भेटलनि आ ने हुनक खिस्सा कहबाक गति मे रुकाबट भेलनि। ओ त' भूतकालीन संसार मे डुबल रहथि। हुनक खिस्सा चालुए रहल–यद्यपि भिसील बाजि चुकल छलै मुदा गाड़ी खुजि नै सकल। कारण ताही घड़ी मे उलपी चिचिया उठलीह–जुलुम भ' गेल। नाव त' दलदल मे फंसि गेल अछि।

–हम किछु मददि करू?

–अहाँ चुपचाप अपन स्थान पर बैसल रहू। जे किछु करबै से हमही करबै। भ' सकैए, घंटा भरि लागि जाइक तखन कहूँ जा क' नाव दलदल सँ बाहर निकिलय।

ओहने झील बनल इलाका मे जेठ-बैशाख मे पानि कम भेला पर ठाम-ठाम दलदल बनि जाइत छैक। उलपी नावक पाछिला मांग पर आबि लग्गा उठौलनि। हम धरि अपन स्थाने पर बैसल रहलहुँ। हमर उत्तेजना थोड़ेक दम धेलक। ओना उलपीक बेकलता, हमर दुनूक बयसक अधीरता, नावक निर्जनता आ मनोनुकूल तर्कक विवशता, सभ किछु रहितो हमरा मे डर पैसि गेल छल। किएक त' हम नीक लोक रही। नीक लोकक माथ मे बुद्धिजीबि नामक एकटा कीड़ा, माँफ करब कीड़ा नहि, भायरस रहैत छैक जे संसारक प्रत्येक ओ तत्त्व जतए स्वाद छै, आनन्द छै, कोमलता छै, माधुर्य छै सँ ओकरा फराक क' देने रहैत छैक। बुझल की नहि, ई नै करु, ओ नै करु। समाज की कहत? लोक की कहत? धर्म एकर अनुमति नहि दैत अछि। ओहने नीक लोकबला शून्य मनोरथ हमरो नसीब मे छल।

उलपी नाव कैँ दलदल सँ बाहर करबा मे ओझड़ा गेलीह। हम मोनक भाव कैँ निचोरै मे क्लान्त भेल नावक बल्ला पर माथ टिका आँखि मुनि लेने रही। मोन कैँ थोड़ेक आराम भेटलै। आँखि मुनले छल, निन्न भ' गेल, निन्न मे सपना देखलहुँ।

सपना मे देखैत छी आजुक संसार सँ एकदम फराक एक विशाल चौरस, खलखल हँसैत, हरीतिमा सँ परिपूर्ण समतल भूमि खण्ड। दूर-दूर तक पसरल मैदान

आ तकर बाद आम्रकुंज। मैदान मे चरैत हजारों गाय, बड़द, बाछा आ बाछी। फेर देखल एक बड़ी टा फूलबाड़ी। फूलबाड़ी मे एहनो फूल कैँ देखलियै जकरा पहिने कहिओ ने देखने छलियैक। फूलबाड़ी अत्यन्त सुन्दर आ सजाओल, मह-मह करैत फूलक सुगन्धि पसारने। बगीचाक मध्य एकटा सरोबर, पक्का घाट बनल। बीच पोखरि मे जाठि आ ताही पर बैसल मयूर सदृश पंक्षी, पांखि पसारने, जकर बड़ी-बड़ी टा आँखि दूर तक देखैत।

फेर नजरि जाइत अछि बगीचा सँ सटल विशाल भव्य राजभवन दिस। चानी सदृश चमकैत राज-भवन ऊंच-ऊंच छहरदेवाली सँ घेरल। तकरा सँ थोड़ेक हटल छोट-पैघ पतियानी मे घर, प्रायः कर्मचारीक निवास स्थान। चारूकात झुण्डक झुण्ड सिपाही घुमैत। सिपाहीक परिधान धोती, छाती पर कबच, डांड़ मे लटकल तलवार, हाथ मे भाला आ चेहरा पर दृढ़ता, विश्वास आ इमानदारी। राजभवनक प्रांगण महिला-पुरुष सँ खचाखच भरल जेना कोनो उत्सवक अवसर मे होइत छैक। महिला रंग-बिरंगी कोरदार साड़ी आ आँगी पहिरने तथा उपर सँ नीचा तक सोना आ चाँदीक गहना सँ गछारल। पुरुष मात्र धोती पहिरने आ कन्हा पर गमछा रखने छलाह। राजभवनक प्रांगणक मध्य मे वेदी बनल छल। ओतए एकटा आसन पर रेशमी वस्त्र मे सज्जित मुकुट पहिरने महाराजा आ महारानी बैसल छलीह। वेदीक चारूकात कने हटल तीर-कमान सँ लैस सुरक्षाकर्मी छल। वेदी लग महिला समूहक भीड़ स्थान कैँ छेकने छल। अजीब अहि बातक लागल जे महाराज, महारानी, सिपाही आ अन्य सभ महिला-पुरुषक आँखि सँ उदासी टपकि रहल छलै।

तखन देखलहुँ जे वेदीक एक कात भयावह आकृतिबला, कारी चोंगा पहिरने, लाल-लाल आँखि, कपार पर सिन्दूरक ठोप आ देखिते भय उत्पन्न होइक तेहन एक व्यक्ति जानवरक छालक आसनी पर बैसल अछि। ओ निश्चय कोनो कापालिक अथवा अघोरी छल। ओकरा आगाँ नर-मुण्ड पर दीप जरि रहल छलै। कापालिकक शिष्य मंडली ओकर पाछाँ कारी वस्त्र पहिरने पाँत मे ठार छलै। कापालिक छोट-छोट लकड़ी कैँ कोनो द्रव्य मे सिक्तक' वेदीक बीच ठाम बनल कुंड मे आहुति दैत छल आ क्षणहिक्षण हुँकार करैत छल। कापालिक चेहरा सँ क्रूरता बरसि रहल छलै।

तकर बाद सभ सँ आश्चर्यबला दृश्य देखलियै। वेदीक एक कात महिला सँ घेरल एक सुन्दर बालिका बैसलि छलीह। हुनक दुनू हाथ कूशक जौर सँ बान्हल छल आ ओहि पर लाल अरहुलक फूल राखल छलै। बालाक बयस चौदह-पन्द्रह बर्खक आ वस्त्र एहन पहिरने जेना राजकुमारी होथि। हमर नजरि ओहि बाला पर

स्थिर भ' गेल। सपनहुँ मे शरीर काँपि गेल। ओ बालिका आन कियो नहि, स्वेता छलीह। हुनक समस्त मुख मंडल सँ क्षोभ आ घृणाक कुत्सित भाव झहरि रहल छलनि। स्वेता कँ एहन अवस्था मे देखि आश्चर्य आ दुःख, दुनू भेल।

कुंड लग जेना कापालिक पूर्णाहुति कयने होअय, तेना ओ द्रव्य सिक्त लकड़ी कँ कुंड मे आहुति द' भयंकर गर्जना केलक जकर ध्वनि प्रतिध्वनि बनि समस्त राजभवन कँ झनझना देलकै। ठीक ओही काल कोनो अदृश्य शक्ति सँ प्रेरित भ' अपन हाथक जौरक रस्सी कँ तोड़ि, अरहूल फूल कँ भूमि पर फेंकि स्वेता उठलीह आ राजभवनक फूजल सिंहदरबज्जा दिस दौड़ि पड़लीह। आब स्वेताक संग हमहुँ दौड़' लगलहुँ। स्वेता राजभवनक मुख्य दरबज्जा कँ पार करैत एक दिस दौड़ि रहल छलीह। हुनक शरीर मे लेपटायल नुआ फरफरा रहल छल। हुनकर पयर मे अन्हरक गति आबि गेल छलनि। हुनकर दौड़ैत कालक तेजी कँ देखि हम विस्मित छलहुँ। स्वेता तूफानक गति सँ दौड़ि रहल छलीह आ हुनक पाछाँ कापालिक, ओकर शिष्य मंडली, महाराज, महारानी, सेनापति, सेना, कर्मचारी आ स्त्री-पुरुषक झुण्ड सभ दौड़ि रहल छल। मैदान मे चरैत सभटा पशु बाँय-बाँय करब शुरू क' देने छल। स्वेताक दौड़' मे तेहन ने तीव्र गति रहनि जे पाछाँ अबैत भीड़ सँ ओ बहुत आगाँ बिहारि बनल उधिया रहल छलीह।

हमर नजरि स्वेता मे टाँगल रहल। आब ओ बड़की टा खर सँ छाड़ल बाड़ा लग पहुँचैत छथि। ओतए पहिने सँ ठार एक युवक स्वेता दिस ताकि रहल छलाह। स्वेता ओहि युवक लग पहुँचि हुनका देह मे लेपटा गेलीह। हम युवक कँ स्पष्ट देखि रहल छी। लम्बा, गौर वर्ण, स्वस्थ्य शरीर, औंठिया केश, चेहरा पर देवताक सुन्दरता। अएँ! ई त' स्वेताक पत्र मे वर्णित गोवर्धन थिकाह। हिनका हाथ मे पुजारीक देल अष्ट धातुक मंत्र सिक्त मट्ठा सेहो छन्हि। हमरा पक्का विश्वास भ' गेल जे ओ गोवर्धने छलाह।

आब देखैत छी जे स्वेता भरि पाँज क' गोवर्धन कँ पकड़ने छथि आ हुनक आँखि सँ दहोबहो नोर बहि रहलनि अछि। ओ हिचुकैत आ चिचियाइत गोवर्धन सँ कहि रहल छथिन–हमरा बचाउ हे हमर प्राणनाथ! हमर पिता राजा होइतहुँ कापालिकक भय सँ भयभीत छथि। हमर कापालिकक संग बिआह करा रहल छथि। हम अहाँ कँ अपन स्वामी मानने छी। अहाँक हाथ मे पुजारी बाबाक देल मट्ठा अछि। अहाँ पर दुष्ट कापालिकक कोनो तंत्र नहि चलतैक। हमर प्राण रक्षा करु हे हमर स्वामी।

हम सपना देखिए रहलहुँ अछि। देखैत छी जे स्वेता आ गोवर्धन दुनू एक दिस दौड़ि रहल छथि। बुझायल, प्रेम अपन उत्सर्ग लेल, अपन त्याग लेल जेना दुनू

बालक-बालिका मे एतेक ने ऊर्जा भरि देने होथि जाहि सँ दुनू हवा मे उधिया रहल छथि। आब दुनू भादवक अन्हरिया बनल एकटा बोन मे प्रवेश करैत छथि। शीघ्रहि दुनू ओहि घनघोर बोन सँ बाहर निकलैत छथि। दुनू एक बेगबती नदीक तीर पर पहुँचैत छथि। नदीक पाट चौड़ा छैक आ ओकर धारा चंचल एवं उछाल लैति बहि रहल छै।

नदीक प्रचण्ड बेग देखि हमर हृदय धकधक कर' लागल। हे ईश्वर! दुनू नदीक पार कोना हेताह? नदी मे नावक स्थान पर छैक फरस आ एकटा रस्सा नदीक एक कात सँ दोसर कात तक बान्हल छैक। स्वेता आ गोवर्धन फरस पर चढ़ैत छथि। ओही घड़ी दुनूक पाछाँ दौड़ैत पाछू करैत अपार भीड़ सेहो नदीक तट पर पहुँचैत अछि। भीड़क कोलाहल आ नदीक गर्जना मिलि सभ दिस कोहराम मचा देने छल। गोवर्धन मजबूती सँ रस्सा कैँ पकड़ने-पकड़ने पयरक जोर सँ फरस कैँ आगाँ बढ़ा रहल छलाह। स्वेता सकदम भेल गोवर्धनक शरीर मे लेपटायलि छलीह।

तखने कालरूपी कापालिकक अट्टहास सुनाइ पड़ल। ओम्हरे ताकल। आह! ई दुष्ट त' बान्हल रस्सा कैँ एक छुरा सँ काटि रहल अछि। बुझि पड़ैत अछि जे गोवर्धन अति उत्साह मे पयरक संतुलन बले फरस कैँ नदीक आधा पार क' चुकलाह अछि। हमरा संशय होइत अछि। की राक्षस बनल कापालिक नदीक एक छोर सँ दोसर छोर तक पसरल रस्सा कैँ काटि देतैक? ताबते देखल जे स्वेता आ गोवर्धन नदी पार क' चुकल छथि। हँ यौ, तखन कोनो भय नहि रहल। मुदा से नहि भेलै। हुनकर दुनूक नदीक पार करै मे मात्र एक लग्गा रहि गेल रहनि तखने कापालिक रस्सा काटि देलक आ भयंकर गर्जना केलक। रस्साक संतुलन समाप्त होइतहिं गोवर्धनक पयरक नीचा फरस नदीक बेग संग नाचि उठल। स्वेता आ गोवर्धन आलिंगनबद्ध भेल धार मे खसलाह। धारक तीब्र वेग मे दुनू किछु काल तक उब-डूब केलनि। तकर-बाद दुनू धार मे बिलीन भ'गेलाह। स्वेता आ गोवर्धन धार मे डुबि गेलाह।

स्वेता आ गोवर्धन कैँ डुबैत देखि धारक कतबहि मे महारानी कलोल क' उठली आ स्वेता, स्वेता क' चिकरैत नदी मे कुदि पड़लीह। फेर महाराज नदी मे कुदैत छथि। तकर बाद समस्त सेना आ स्त्री-पुरुषक जन समूह एक-एक क' नदी मे कुदि अपन-अपन प्राणक अन्त क' लेलक। सभहक क्रन्दन सँ एक क्षण तक आकाशक छाती विदीर्ण होइत रहलै, फेर सभ किछु शांत भ' गेलै। एकहि घड़ी मे ओ स्थान जन-शून्य बनि गेल छल।

एकाएक निन्न टुटल। हे भगवान! ई केहन सपना देखलहुँ? ताही काल उलपीक चिचियायब सुनल—जागू, हयौ जागू। सपना देखि अहाँ एना किएक

कराहि रहलहुँ अछि। की अहाँक प्रेमिका नदी मे डुबि मरलीह? स्वेता अहाँक के छथि? स्वेता, स्वेता चिचियाइति अहाँ तेना ने आक्रोश कयलहुँ जे एखन तक नाव काँपि रहल अछि। जागू, निन्न तोडू।

नावक बल्ला पर माथ टेकल छल। उलपीक हाथ हमर पीठ, माथ आ चेहरा कैँ छुबैत हमर छाती कैँ थपथपा रहल छल। हम नीक जकाँ निन्न सँ जागि चुकल छलहुँ। सपना त' सपने होइत छैक, एकरा लेल अधिक माथा-पच्ची करब ठीक नहि। उलपीक स्वर मे स्नेहक अभाव भ' गेल छलनि। ओ क्रोधित होइत कहलनि–कहू ने ई स्वेता के छथि? की स्वेता हमरो सँ अधिक सुन्नरि छथि? हम अपन सभ किछु अहाँ लग अर्पण केलहुँ से की व्यर्थ भ' गेल? हमर अहाँक बीच स्वेता कत' सँ टपकि पड़ली?

उलपीक बहुत रास प्रश्न मे नारी जातिक इर्षा झहरि रहल छलनि। हुनका रंजे फुफकारैत देखि हमरा अंदेशा होब लागल। कालीदास कैँ सराप रहनि जे ओ प्रेमिकाक हाथे प्राण गमौताह। की हमर नसीब मे उलपीक हाथे मारि खायब लिखल अछि? जँ सैह त' हम कइए की सकैत छलहुँ? उचकपनियों त' कर्मे भेल। जँ मंडलजीक कथन सत्य त' अहि कर्मक आ कि कुकर्मक भोग हमरा छोड़ि आन के भोगतैक?

मुदा हमर कपार नीक छल। उलपी नरम भेली। पछतावा आ वेदना भरल स्वर मे कहलनि–हमरा दोख नहि दिअ। प्रीतमक प्रतीक्षा मे आकुल रही तैँ मोनक पिआस कैँ अहाँक आगाँ देखार कर' पड़ल। मुदा, अएँ यौ! अहाँ त' पहिने सँ स्वेताक प्रेम मे उन्मत छी। आह! अहाँक दुख कैँ त' हमही बुझि सकैत छी ने?

उलपीक व्यवहार मे बहुत नम्रता आबि गेल रहनि। ओ नावक एक कात सँ पोटरी निकाललनि। ओहि मे रोटी आ तरकारी छलै। एक पात पर रोटी-तरकारी हमरा देलनि आ दोसर पात पर अपना लेल ल' क' नावक मांगि पर बैसैत कहलनि–अहाँ भँमरा पहुँचि चुकल छी। रोटी खा' क' अगिला यात्रा लेल बिदा भ' जाउ।

फेर उलपी सान्त्वना देलनि–प्रेमक संग विरह, जीवनक संग मृत्यु आ हँसीक संग छाती फाट' बला दुख त' अहि जगतक व्यवहार छै। अहाँ घबड़ाउ नहि। चननपुरा पहुँचि अहाँ के स्वेता सँ अवस्से भेंट होयत तकर एक छीट्टा आशीर्वाद हमहुँ दैत छी। बचलहुँ हम? हम जेना-तेना प्रीतम कैँ ताकिए लेबै, एकर लूरि हमरा अछि। एकटा बात पुछू? जखन पहिने सँ अहाँ कैँ प्रेमिका छलीहे तखन हमरा पर झपट्टा मारक लेल किएक तैयार भ' गेल रही अहाँ?

इच्छा भेल जे उलपी कैँ सभ किछु कहि दियनि जे स्वेता ककरहु अनकर

प्रेमिका छलीह। हुनके कापालिक सँ रक्षा निमित्ते हम यात्रा पर निकलल छी। मुदा अपन भावना कैँ जप्त करैत हुनका कहलियनि—जँ दोखक गप्प करैत छी त' दोख दुनूक बरोबरि अछि।

हमर उत्तर सुनि उलपी भभा क' हँसि पड़लीह। एखुनका हुनकर हँसी निर्दोष आ पवित्र छलनि। हुनकर सौन्दर्य परागक सुगन्धि फेर सँ नाव मे पसरि गेल। ओ रोटी खा पत्ता कैँ फेकि हमरा लग आबि कहलनि—अहाँ ठीके कहैत छी। अहाँ कैँ असगरे दोख देब उचित नहि। हमरा प्रीतमक लेल आ अहाँ कैँ स्वेताक लेल प्रतीक्षा से ने कमल प्रस्फुटित कयलक जे जे नहि भेल सैह थोड़। मोन त' होइए जे एहन कमल फुलाइते रहअय आ प्रेम अनुरागक अनेकों रूप मे शोभा देखाबिते रहय। जाय दिऔ पछिला गप्प कैँ। अहाँ हमरा सभ दिन मोन रहब से धरि पक्का।

हम बैग उठा पीठ पर लदलहुँ आ उलपीक आँखि में तकलहुँ। उलपीक आँखि मे त' जेना प्रेमक मनोकामना मेघक एकटा छोट टुकड़ी बनि अनन्त आकाश मे उड़िया रहल छलनि।

9.

बाहर मे बर्खा रुकल रहै। दरिभंगा शहर शान्त आ अन्हार मे कलपि रहल छलै। बाढ़िक लहरि पक्का मकान मे ढाही मारैत बहि रहल छलै। पंकज स्टोभ पर चाह बनौलथि आ सभहक आगाँ चाहक कप रखलनि। ओ पंडित कका दिस घुमैत बजला—क्षमा करब कका। बयस मे छोट रहितहुँ बाज' पड़ि रहल अछि। अहाँक उलपी संग मिलाप बड़ रुचिगर लागल। अहूँक उमेर त' कमे छल। ओहन उमेर मे सम्मोहन, प्रीति आ उद्‌गार त' होइते छैक। उलपीक संग संगियारीक लेल कपार चाही। इर्षा भ' रहल अछि। मुदा एखन हमर माथ दोसरे कारण सँ भनभना रहल अछि। चननपुरा मात्र एक कोस दूर रहि गेल छैक। आब अहाँक भेंट गोवर्धन सँ होयत। गोवर्धन चंडाल कापालिक कैँ कोना पछाड़लनि आ स्वेता कैँ मुक्त करौलनि से जानक लेल मोन बेचैन भ' रहल अछि। तैँ खिस्साक अगिला भाग कैँ कहियौ।

वीर बाबू सेहो बजला—चाह पीबि हम सभ फेर सँ फ्रेस भ' चुकल छी। निन्नक नामोनिशान नै अछि। उत्सुकता त' चरम पर अछिए। तैँ हमहुँ पंडित कका सँ निवेदन करबनि जे बचलाहा खिस्सा कहि हमरा दुनूक कौतहुल कैँ शान्त करथि।

दू गोट अजोह आ नवसिखुआ भातिज लग उलपीक संग भेल प्रेमालापक सही-सही वर्णन करब यद्यपि पंडित राज शेखर दत्त लेल महा असोकर्यक बात भेल, मुदा ओ करितथि की? एखुनका खिस्सा खिस्सा नहि, हुनक जीवन मे घटल सत्य घटना छल। थोड़ समय लेल हुनक उलपीक संग मिलन भेल छल। ओहि मे जागल कामक भूख। ओ भूख त' सदिकाल सँ नैसर्गिक रहलैक अछि। हुनक इच्छा भेलनि जे दुनू भातीज कैँ चिचिया-चिचिया क' कहियनि—रे बच्चा! वैह भूख त' जीवन थिकै, जीवनक सिंगार थिकै, सत्य थिकै आ सृष्टिक आधार थिकै। मुदा ओ किछु नहि बजला। अपन भाव कैँ घोंटि गेलाह आ खिस्सा कहब शुरू केलनि—दलदल मे नाव कैँ फंसबाक आ हमर नाव पर सुति रहलाक दुआरे भँमरा पहुँचै मे बिलम्ब भेलै। सूर्यास्त मे मात्र घंटा भरिक देरी रहैक, तैँ हम नमहर-नमहर डेग

उठबैत जा रहल छलहुँ।

धर्मकांटा सँ भँमरा तकक रस्ता मे निर्जनता रहैक। मुदा एखुनका रस्ता मे लोकक चहल-पहल भरल छलै। चहुँ दिसि कलमबाग, खेत-खरिहान, झुण्ड मे चरैत पशु, नेना-भुटकाक कुदब-फानब, पक्षीक कलरब, बाट चलैत बटोहीक चेहरा पर छिलकैत उमंग, सभ किछु रहैक। सभ किछुक अवलोकन करैत हम हाँइ-हाँइ डेग उठा रहल छलहुँ। एक तिमोहानी लग पहुँचि दुविधा मे ठार भ' गेलहुँ। एकटा बटोही जखन समीप एलाह त' पुछलियनि—महाशय, हमरा चननपुरा जेबाक अछि। कोन बाट चननपुरा जेतैक से देखा दिअ।

बटोही रुकला आ कनेकाल तक हमरा ठेकानैत रहला। फेर उत्तर देलनि—दाहिना हाथक रस्ता चननपुरा जायत। मुदा ई रस्ता निरापद नहि अछि। कनिए आगाँ जेबै त' काश-पटेरक बोन भेटत। बनैया सुग्गर आओर नील गाय सँ भरल रस्ता सूर्यास्तक बाद अति बिकट बनि जाइत छै। चेता देलहुँ, कारण सूर्यास्त भ' रहल छै। अन्हार होइतहिं जंगली जानवरक साम्राज्य स्थापित भ' जेतैक। तेँ जतेकशीघ्र ई रस्ता पार करब ओतेक नीक। बोनक ओइ पार कीरती टोल, तखन कनेटा चर आ बड़ी टा गाछी। तकर बाद चननपुरा।

बटोहीक कहब अक्षरशः सही छल। कनिए आगाँ गेला पर छह-सात फीट ऊंच काश-पटेरक घनगर बोन। बोनक बीच बाटे रस्ता। एकरा रस्ता कहब ठीक नहि। टेढ़-मेढ़ एकपेरिया पगडन्डीक आकार मे। झुण्डक झुण्ड बनैया सुग्गर ठार आ हमरा दिस तकैत। पहिले-पहिल देखि रहल छलहुँ नील गाय कैँ, समूह मे। हम सावधान रही। खास क' ओहन स्थान जतए पगडंडी काश-पटेर सँ छेकल छल, खूब साकांच होइत आ पूर्ण बेग सँ दौड़ि क' ओकरा पार क' जाइ। अही तरहें आगाँ बढ़ल जा रहल छलहुँ। पाछाँ सेहो घुमि कैँ ताकी। कोन ठेकान कोनो सुग्गर चोट करैक लेल धपाइत ने होअय। रस्ता ऊबर-खाभर आ ठाम-ठाम पर खाधि सेहो रहै। तेँ हम चलि नहि रहल छलहुँ, झटकि रहल छलहुँ, कूदि रहल छलहुँ।

पश्चिम आकाश दिस नजरि गेल। आकाश मे कारी-कारी मेघक थक्का देखलियै। ओ उमरैत-घुमरैत, हहाति आबि रहल छल। मोन मे चिंता पैसि गेल। कारण जेठ-बैशाखक मेघ कैँ त' रंज चढ़ले रहैत छै। निश्चय भ' गेल जे अन्हर अओतै। पशु कैँ प्रकृतिक ज्ञान अधिक होइत छै। सभटा सुग्गर आ नील गाय अपन-अपन परिवारक संग निर्विकार जंगल मे ठार छल। तकर कारण आब'बला बिहारि रहै से आब बुझलियै। अर्थात आब ओहि पशु दिस सँ कोनो खतरा नहि छल। मुदा हमरो त' अन्हर सँ बँचबाक लेल कोनो सुरक्षित स्थान चाही? से कत' भेटत? बामा कात दूर मे एकटा घर देखलियै। बटोहीक कहल कीरती टोल यैह ने

होइक? ओम्हरे दौड़लहुँ।

बीघा, दू बीघा मे पसरल आ हटल-हटल दस-बारह गोट घर रहै। जेना भूस्सा राखक लेल पैघ-पैध गोल-गोल ठेक होइत छै तहिना गोल-मटोल, काश-पटेर सँ बनल सभटा घरक बनाबट एकहि तरहक छलै। एकटा घर लग पहुँचि फरकी कैं जोर-जोर सँ झमारैत चिचियाति बजलहुँ—यौ घरबारी, अन्हर आबि रहल छै, हमरा आश्रय दिअ। हम एतुका लेल अनठिया छी। अन्हर शान्त भेला पर चलि जायब।

कोनो जवाब नहि भेटल। घर मे नुकायल मनुक्ख त' छै अवस्से, तकर अनुमान क' फेर चिकरलहुँ। मुदा फेर वैह चुप्पी। तेसर बेर भोकारि क' निवेदन कयलहुँ। तखन कियो पातर स्वर मे उत्तर देलक—हींयाँ जगह नै भेटत, आगू जाउ।

असमंजस मे आकाश दिस तकलहुँ। मेघक रौद्र रूप डेराओन छलै। कारी-कारी उधियाति मेघ ठीक कपारक उपर पहुँचि गेल छल। तखने बिजलौका से चमकलै आ कड़ाक बला आबाज मे मेघ गर्जना केलक। हम दोसर घर लग जा कैं चिचिएलहुँ। मुदा कोनो जवाब नहि भेटल। तेसर, चारिम अहि तरहें सभटा घर लग जा क' अहुछिया कटलहुँ। मुदा आश्रय कियो नहि देलक।

थोड़ेक आगाँ बिना जाठिक आ कुम्भी सँ भरल एकटा पोखरि देखलियै। ओकर उत्तर-पूब कोनबला मोहार पर एकटा बूढ़ आ गत्तर-गत्तर सँ झहरल बड़क गाछ रहै। गाछक जड़ि मे उजरल-फूजरल एक चारी बला घर रहै। ओ घर गह्वर छलै। गह्वर मे थोड़ेक माटिक घोड़ा आ तकर उपर सुखायल फूल। कोनो आन उपाय नहि देखि ओही गह्वर मे शरण लेल। गह्वरक देवाल मे नोनी लागल, चारक बाँस आ बत्ती मुंह बौने, आकाश ओहिना देखइत आ नीचा माटि मे चालीक भूरभूरी।

सांझक अन्हार आरो गहींर भेल जा रहल छलै। स्थान निर्जन आ नीरब त' रहबे करै। ताही क्षण मेघ ताल ठोकलक। तड़ाकबला कनफोड़ा अबाज भेलै। बुझि पड़ल जे ठनका कपारे पर खसल होअय। बुन्न पड़ब शुरू भेलै। फेर बुन्न रुकि गेलै आ भरभरा क' पाथर खस' लगलै। माथ पर बैग राखि लेलहुँ। सुपारी साइजक पाथर, मुदा बन्दुकक गोली जकाँ धरतीक माटि कैं छेदि रहल छलै। बैगक दुआरे हमर माथ फुट' सँ बाँचि गेल। लगले चारूकात गोल-गोल पाथरक पथार लागि गेलै। गह्वरक भितरी चारक सड़ल बाँसक बाती आ खर टूटि-टूटि क' माटिक घोड़ा कैं झाँपि देलकै।

आध घंटा तक मेघ तरतराइत रहलै। पाथरक बर्खा होइत रहलै। कखनो काल अन्हार मे बिजुलीक इजोत छिड़िया जाइ, किछु देखाइ पड़ि जाइ आ फेर घुप्प अन्हार। अन्हार एतेबे जे अपन हाथो ने सुझै। टॉर्च बैग मे छल। मुदा बैग कैं त'

माथ पर रखने रही। भय होइत छल जेँ कहू गह्वरे टूटि क' ने माथ पर खसि पड़य। हे ईश्वर! तो हीं रक्षा कर'। तेहन परिस्थिति मे घेरा गेल रही जे किछु भ' सकैत छल।

कनेकाल तक करिया मेघ तमसाइत रहल, बरसैत रहल आ पाथर सँ धरतीक चानि कँ फोड़ैत रहल। तखन जेना हहाइत आयल छल तहिना हहाति पूब दिशा मे पलायन क' गेल। थोड़ेक काल लेल आकाश स्तब्ध जकाँ भ' गेल। चन्द्रमा नहि छलाह मुदा आकाश मे तरेगन पसरि गेल रहै जकर प्रकाश मे चारूकात इजोत भ' गेलै। बड़क गाछ सँ पाथरक चोट सँ घायल किछु चिड़ै नीचा खसल फरफरा रहल छलै। हम बैग सँ टॉर्च निकाललहुँ। तीन सेलबला टॉर्च मे रोशनीक कोनो कमी नहि। चहुँदिशि टॉर्चक फोकसिन कँ घुमाओल। गह्वरक नीचा सामने कने हटल एकटा मतंगा रहै। मतंगा माटिक आ नीपल-पोतल। टॉर्चक प्रकाश जखन मतंगा पर पहुँचलै तखन जकरा देखलियै ताहि सँ अंतरात्मा काँपि उठल। समग्र शरीर मे कँपकँपी होब' लागल। सिनेमा मे देखने छलियै आ किताब मे सेहो फोटो देखने रहियै, आइ ओकरा प्रत्यक्ष देखि क' देहक रोइयाँ भुलकि क' ठार भ' गेल छल। ओ अजोध आ जुआयल गहुमन साँप रहैक। साँपक फन उठल आ जिह्वा लपलपा रहल छलै।

साँप कँ देखतहि छातीक धुकधुकी बन्न होब' लागल। हे परमेश्वर! आब अहि विपत्ति सँ कोना बाँचब? गह्वरक नीचा हेबाक हिम्मत त' नहिए भेल, साँप दिस तकबाक सेहो साहस नहि होअय। टॉर्च कँ हड़बड़ा क मीझा देलियै त' भय दुगुन्ना भ' गेल। बंचल-खुचल प्राण शरीर सँ बाहर निकल' लागल। फेर टॉर्च बारलहुँ। साँप ओहिना मतंगा पर फोंफिया रहल छल।

गह्वरक भीतर टॉर्चक रोशनी इजोत कयने छलै। सामने माटिक घोड़ा जकर कान टुटि गेल रहै, टुकुर-टुकुर हमरा दिस ताकि रहल छल जेना कहि रहल होए फंसि गेलह ने बच्चू! आब विषधर सँ तोहर बाँचब असभंव। मनुक्खक दुश्मन ई साँप बिना मतलबे की मतंगा पर आसन जमौने अछि? एकरा त' एतेक विष छैक जे जँ गाछ मे दाँत गड़ा दैक त गाछ जड़ि क' भस्म भ' जायत, तखन मनुक्खक कोन बिसात। बिन विचारने जे काज करए, नीक लोकक स्वागं रचए तकर यैह गति होइत छैक। इच्छा भेल जे बफारि तोड़ि क' कानी। मुदा ने कंठ मे अबाज छल आ ने आँखि मे नोर। धैर्य गह्वरक माटि पर माथा कुटि रहल छल। निस्तब्ध भेल राति सिसकि रहल छल। हमर मोनक फतिगाँ यद्यपि एखनो फरफरा रहल छल, मुदा पलपल बितैत समयक हिसाब रखै मे असमर्थ छल।

अहि हालत मे बड़ी काल धरि हमर नसीब कुहरैत रहल। वातावरण मे शांति

बज्जर भेल पसरल रहल। मतंगा पर साँप ओहिना झुमैत रहल। भयक कारणे हम चुक्की-माली भेल सतर्क बैसल रही। टॉर्चक प्रकाश मे थोड़ेक सहूलियत अबस्से छल, किएक त' साँपक गतिविधि कैँ देखि सकैत छलियैक। मृत्यु लगे मे ठार अछि से जनितहुँ अपना कैँ कहुना सम्हारने रही।

एकाएक कान मे घूर्र-घूर्रक अजीबे ध्वनि प्रवेश केलक। साकांच भेलहुँ। साँप दिस ताकल। साँप सेहो स्थिर भ' प्रायः ओही ध्वनि कैँ ठेकना रहल छल। घुमड़ै बला ध्वनि अवश्ये कोनो जानवरक छी, मुदा ओ नजरि मे आबि नै रहल छल। आरो ठेकनौलहुँ। तखन निश्चय भेल जे बड़क गाछक जड़ि मे, परोछ मे कोनो जानवर अछि जे घुमरि रहल अछि। साँपक चंचलता आ ओकर जिह्वा लपलपेनाइ बन्द भ' गेल रहै। ओहो गाछक जड़ि मे देखि रहल छल।

ताही काल विस्मयकारी आ हृदय कैँ दहलाब' बला दृश्य उपस्थित भेल। बड़क जड़ि के ओहि पार सँ एकटा बनैया सुग्गर बहरायल। ओ विशालकाय छल आ ओकर गलफरक दाँत बक्र भेल बाहर दुनू दिस निकलल रहै। बनैया सुग्गर हमर सोझा-सोझी दौड़ल। ठीक जतए हम बैसल रही आयल आ जबरदस्त ढाही मारलक। गह्वरक जमीन तीन-चारि फूट ऊंच रहैक। तँ सुग्गरक ढाही जतए हम बैसल रही तकर लगभग एक फूट नीचा बजरलै। बित्ता भरि माटि धंसि गेलै। सुग्गर जामे थुथुन कैँ सोझ करए ताबे हमर दाहिना हाथक आँगूर मे पहिरल कन्हाइ मंडलक देल औंठी सँ पातर, गोल आ लम्बकार तेज निकलि सुग्गरक थुथुन मे ठक्कर मारलक। सुग्गर चिंघारैत नीचा भूमि पर खसि पड़ल। औंठीक तेज जेना ओकरा सूल्फा भोंकि देने होइक तहिना ओ बफारि कटैत ओंघराय लागल। मुदा ओकर ई अवस्था थोड़बे काल तक रहलै। सुग्गर तुरंते ठार भ' गेल आ खूर सँ जमीनक माटि कैँ नोच' लागल। हम उठि क' ठार भ' गेल रही आ भयाक्रांत सुग्गर दिस ताकि रहल छलहुँ। हमरा मोन मानि गेल छल जे आब सुग्गर समधानि क' दोसर ढाही मारत आ अहि बेर ओकर निशाना नहि चुकतै।

मृत्यु बहुत समीप छल आ हम थरथर काँपि रहल छलहुँ। तखने एकटा दोसरे आश्चर्यजनक बात भेलै। मतंगा परहक साँप भयंकर फुफकार मारैत सुग्गर पर झपटल, सुग्गरक मूड़ी मे लेपटा गेल आ ओकर थुथुन मे दाँत गरा देलक। सुग्गर हमरा पर आक्रमण करब बिसरि साँप मे ओझरा गेल। महिसक पर्ड़ू जकाँ भोकरैत सुग्गर साँपक फन्दा सँ निकलयक प्रयास कर' लागल। मुदा ओकर यत्न व्यर्थ भ' गेलै। देह मे लेपटायल साँपक संगहि सुग्गर गोलाकार चक्कर काट' लागल।

धिया-पूताक किताब मे कतउ पढ़ने रही जे संसार मे मात्र साढ़े तीन टा वीर छथि। पहिल गहुमन साँप, दोसर बनैया सुग्गर, तेसर भैंसा आ नुका क' बालि कैँ

मारलनि तँ आधा रामचन्द्र। एखन दू टा वीर युद्ध मे एक दोसरा कँ पछाड़क लेल भीरल छल। संक्षेप मे एतबे बुझू जे आब साँप-सुग्गरक प्रलयंकारी मल-युद्ध भ' रहल छलै। हमर आँगूर मे पहिरल औंठीक विशिष्ट गुण दिस ध्यान गेल। सही मे औंठी हमर प्राण बचौने छल। संगहि साँप सेहो हमर रक्षार्थ ओतए आयल छल सेहो प्रमाणित भेल। सभटा त' रहए आश्चर्येबला गप्प, मुदा हमर दशा सोचनीए छल। हम कहुना ओहि स्थान सँ मुक्त हेबाक लेल रस्ता ताकि रहल छलहुं। मुदा पड़ाउ कोना? गह्वरक ठीक नीचा साँप-सुग्गरक बिकराल युद्ध भ' रहल छलै। साँप प्राणपन सँ सुग्गरक प्रचण्ड शक्ति कँ रगड़ने छलै। सही मे, जँ साँप ओहि स्थान पर नहि रहितैक त' कखन ने सुग्गर हमर पेट फाड़ि देने रहितय।

साँप आ सुग्गरक युद्ध अपन चरम पर पहुँचल रहै। दुनूक मुंह सँ खों-खों आ फों-फों ध्वनि निकलि स्तब्ध भेल राति कँ भयावह बना देने छलै। हम अपन धक्धक् करैत करेज कँ यत्नपूर्वक दाबि कहुना ओहि प्रलयंकारी लड़ाइ कँ देखि रहल छलहुं। हे ईश्वर! जँ कहूँ साँप पराजित भ' जेतै त' सुग्गर सँ हमरा के बचाओत? रहि-रहि क' भय सँ समूचा देह सिहरि उठैत छल। बहुतो अनिष्टक विचार सँ ओध-बाध त' भइए गेल रही, सांस कखनहुँ तेज भ' जाए त' कखनहुँ बन्न होब' लागय। मुदा आँखि खुजल छल आ सभ दृश्य कँ देखि रहल छलहुं। साँप आ सुग्गर मे सँ एकक मृत्यु भेनहि युद्ध रुकतै, कारण युद्ध बिरामक कोनो टा गुंजाइश नहि रहैक।

आब साँप आ सुग्गरक निर्णायक युद्ध पोखरिक मोहार पर भ' रहल छलै। हमर नसीब जागल। दुनू उनटैत-पुनटैत मोहार सँ नीचा पोखरीक पनिझाव दिस ओंघरायल। हम ताक मे रहबे करी। टार्च आ बैगक सुधि बिसरि सोझे गह्वरक नीचा फनलहुं। फेर पूर्ण शक्ति सँ एक दिस पड़ेलहुं। मोन के एकेटा विचार प्रेरित कयने छल-भाग, पंडित भाग। साँप आ सुग्गरक युद्ध स्थली सँ जतेक दूर भागि सकबएँ ततेक तोहर बचबाक आश जगतौक। तँ आरो किछु ने सोच, केवल भाग, भगिते रह।

जमीन बर्खाक पानि आ बर्फ बला पाथर सँ भीजल रहैक, पिच्छड़ रहैक। मुदा हमर पड़ेबाक रफ्तार ततेक ने अधिक छल जे पिछड़ैक अथवा आन तरहक बाधाक प्रश्ने नै रहै। शरीर मे जतबा शक्ति बाँचल छल हम भगितहि रहलहुँ।

प्रायः ओहि दारुण दुख सँ परिपूर्ण रातिक अन्तिम पहर भ' गेल रहै। सामने पूर्व दिस जखन हम एक सघन गाछी सँ बाहर अयलहुँ त' आकाश फरिछ होब लागल रहै। ठीक सामने दू टा माटिक खम्भा देखलियै। खम्हा विभिन्न रंग मे रंगल रहै आ ओकर मेहराब पर झंडा फहराइत रहै। खिन्न भेल मोन मे आश जागल।

घर भेटत, लोक भेटत आ साँप-सुग्गर सँ प्राण बाँचत, अही विश्वास मे दुनू खम्हाक बीच मे हम प्रवेश कयल। मुदा थाकि क' चूर-चूर भ' गेल रही, हमर पयर सेहो जवाब द' देलक। हम अचेत होइत जमीन पर खसलहुँ आ बेहोश भ' गेलहुँ।

10.

पंडित कका जमीन पर खसला आ बेहोश भ' गेला, एतबा कहि चुप भ' गेल रहथि। अतीत मे डुबल बड़ी काल धरि ओ चुपे रहला। वीर बाबू आ पंकज सेहो चुपचाप पंडित कका दिस देखि रहल छलाह। दुनूक विस्फारित आँखि आ मुंह खुजल रहनि। सक्षात मृत्युक मुंह सँ पंडित कका बाहर भेल रहथि, तेँ किछु पुछथिन अथवा संतोष देथिन्ह, ताहि मनःस्थिति मे दुनू नहि रहथि। पंडित ककाक कथा सँ उपजल संवेदना मे दुनू ओझरायल रहथि। भय आ आश्चर्यक मिश्रण सँ उपजल संबेग दुनूक कंठ केँ अवरुद्ध क' देने छल। एहना मे बकार कोना फुटैत। एमहर दरिभंगा शहर बाढ़ि मे डुबल कुहरि रहल छल। राति कहुना केँ बीतिए रहल छल।

थोड़े कालक बाद पंडित कका स्वयं पर काबू केलनि, खखसि क' गला साफ केलनि आ खिस्सा कहब शुरू केलनि–होश एला पर हम अपना केँ पलंग पर चीत सुतल पौलहुँ। आँखि खुजल त' एहन अनुभव भेल जेना प्रगाढ़ निन्न सँ जागल होइ। यद्यपि मानस पटल पर रातुक साँप-सुग्गरक अति विकट युद्ध ओहिना अंकित छल, मुदा कहि ने किएक मोन मे भयक स्थान पर नव उत्साह आ स्फूर्ति भरि गेल छल।

आँखि केँ पुनः बन्न क' मोलायम ओछाओन पर करौट लैत फेर सँ पलक उठौलहुँ। सामने एकटा युवक आ एकटा युवती ठार छलीह। युवती समीप एलीह। टटका यौवनक सौन्दर्य मे दमकैत हुनक चेहरा, पाड़ीदार छपुआ नुआ पहिरने, छाती केँ कंचुकी मे समेटने, बयस पन्द्रह-सोलह बर्खक, ललाट पर टुह-टुह लाल बिन्दी सटने युवतीक रूप सुन्दर छलनि। युवक कद-काठी मे नमहर, धोती पहिरने, स्वस्थ्य शरीर, उघार छाती पर यज्ञोपवीत पहिरने, करीब बीस बर्खक दमकैत दृष्टि सँ हमरा देखि रहल छलाह।

युवती जिज्ञासाक दृष्टिए हमरा देखलनि जेना पूछि रहल होथि जे हम कोना छी। युवतीक प्रश्नक उत्तर हम युवक केँ देल–हम सभ तरहें ठीक छी।

युवक परिचय देलनि—महानुभाव, हमर नाम चन्द्रकांत आ हिनकर नाम पार्वती छन्हि। सम्प्रति अहाँ आचार्य प्रभुक आश्रम मे छी। प्रभु अहाँ कैँ जमीन पर खसल बेहोश देखलनि। प्रभु वनोषधि उपचारक परम आदरणीय गुरु सेहो छथि। औषधि एवं मंत्र शिक्त जलक छिड़काव सँ अहाँक उपचार क' प्रभु निश्चिन्त भेलाह आ अहाँक पूर्ण विश्राम हेतु एतय अनबाक लेल आदेश देलनि। अहाँ भरि दिन शयन केलहुँ अछि। आब जँ अपनेक थकान हटि गेल होअय, त' हम निवेदन करब जे उठियौ। हमरा संग स्नान आदि आवश्यक शारीरिक कार्य हेतु चलियौ। समीपहि निर्जन एवं सभ तरहक व्यवस्था सँ युक्त स्थान छैक।

हम पलंग सँ उतरि ठार भेलहुँ। कन्हाइ मंडलक कुटिया मे पंजाक देल पैजामा-कुर्ता पहिरने रही तकरा निहारलहुँ। सौंसे माटि, थाल लेपटायल, घोंकचल, मस्कल, फाटल अपन वस्त्र कैँ देखि मोन कोनादन भ' गेल। पार्वती सोझहि मे ठार छलीह तैँ लाज सेहो भेल। तखने चन्द्रकांत पार्वती सँ कहलनि—जाबे पाहुन स्नान आदि सँ निवृत्त भ' घुमि क' आओताह ताबे अहाँ जलपानक व्यवस्था क' क' राखू।

हम चन्द्रकांत संगे कुटिया सँ बाहर एलहुँ। कनेकाल नजरि चारूकात घुमबैत रहलहुँ। सभ किछु बदलल-बदलल जकाँ देखाय पड़ल। कुटियाक बनाबट किछु विचित्रे रहैक। बाहरी देबाल चिकनी माटि सँ छछारल आ ओहि मे पशु-पक्षीक अद्भुत चित्र बनाओल रहैक। अति साधारण चित्रकलाक अलौकिकता एवं सजीवता कोनो सभ्यता कैँ मुखरित क' रहल छल। बगड़ा, मैना एवं आन-आन परिचित, अपरिचित चिड़ै चुनमुनी कैँ देखल। सभहक आकार पैघ-पैघ। लता-बृक्ष, फूल-पत्ती सँ सभटा स्थान पाटल रहैक। मुदा सभटा फूल-पत्ती नमहर-नमहर। पश्चिम आकाश मे अस्त होइत सूर्य कैँ देखल। सूर्यक आकार ओतबे टा मुदा लालिमा स्वच्छ धरती कैँ ओहिना छपने जेना माय अपन नवजात शिशु कैँ आँचर सँ झँपने होथि। ने कतहु प्रदूषण देखल आ ने प्रकृतिक कुटिलता। सभ किछु सहज, सरस, नैसर्गिक एवं पवित्र।

छोट सन सरोवर सँ स्नान क' बाहर एलहुँ। चन्द्रकांत पहिरबाक लेल वस्त्र देलनि। पीयर रंग मे रंगल धोती तथा रेशमक बटन सँ सुशोभित चंपइ रंगक मिरजइ। मिरजइ पहिरबा मे एक विशेष तरहक गुदगुदी होइत छैक तकर अनुभव भेल छल। चन्द्रकांत हमर शरीर मे धारण कयल मिरजइ कैँ देखि बजला—सरिपहुँ मिरजइ बनौनिहार विशिष्ट कलाकार छथि। अनुराग त कला कैँ उत्कृष्ट बनाइए दैत छैक पर्वती जलपानक इन्तजाम कयने ठार छलीह। केराक बीर पर परसल खीर-पुड़ीक दर्शने भूख कैँ जगा देलक। नाव पर उलपीक देल रोटी खेने रही।

तकरबाद सँ एक घोंट जलो कंठ तर नहि गेल छल। भूखक मांग होए अथवा पार्वतीक निर्मल आचरण, जलपान स्वादिष्ट लागल।

जलपान सम्पन्न भेल, मोन स्थिर भेल। यैह अवसर उचित बुझना गेल जे चन्द्रकांत सँ पुछियनि जे हम कत' छी? चननपुरा केमहर छैक? हमर एतेक स्वागत किएक भ' रहल अछि? यात्रा मे ततेक ने तीत-मीठक सामना कर' पड़ल छल जे अंतर मोन मे आशंका फन उठौने छल। मुदा चन्द्रकांत तकर अवसर नहि देलनि। कहलनि—महानुभाव, आब हम सभ प्रभुक कुटिया लेल प्रस्थान करब। ओ अबस्से प्रतीक्षा मे होयताह।

मुनहारि सांझ भ चुकल छलै। मुदा रस्ता सुझ' मे बाधा नहि रहैक। आकाश मे पहिने सँ चन्द्रमा उपस्थित भ' इजोतक प्रबन्ध क' चुकल छलाह। रस्ता निर्जन रहै आओर पयरक नीचा माटि मे कोमलता छलै। आगाँ आम, कटहर, जामुनक घनघोर जंगल रहै। पार्वती सभ सँ आगू, बीच मे हम आ चन्द्रकांत पाछु-पाछु चलिते जा रहल छलहुँ।

जंगल समाप्त भेल। आब दूर-दूर तक समतल धरती आ पसरल मैदान। मैदानक अंत मे कोनो बेगबती नदीक हहाइत धार। नदीक तीर पर आचार्य प्रभुक आश्रम। छोट-छोट अनगिनित कुटिया। चारूकात फूल सँ भरल बागीचा। एक कात नदीक कछेर मे एक ऊँच आ पैघ चौचारा सँ बनल आचार्यक आश्रम। चकचक-चमचम चहु दिस दीप जरि रहल छलै जे रात्रिक प्रथम पहर मे प्रकाश कैँ छिड़िऔने छल। फूलक सुगन्धि एवं पवनक स्पर्श सँ मोन विभोर होब' लागल छल। आचार्यक आश्रम निरव शान्त छलनि। कारण जे हौउ, मुदा हमर मोन प्रसन्न भ' गेल छल।

आश्रमक बड़का कुटिया लग ठीक गुलाबक किआरीक कात मे हम आ चन्द्रकांत ठार भेलहुँ। पार्वती बगलक कुटिया सँ एक लोटा जल आ एक जोड़ा खराम अनलनि। पयर धो क' हम खराम पहिरलहुँ। ताहीकाल चन्द्रकांत कहलनि—महानुभाव, हमरा दुनूक जिम्मा देल गेल सेवाक कार्य समाप्त भेल। अहाँ प्रभुक दर्शन लेल आश्रमक भीतर गेल जाउ।

पार्वती आ चन्द्रकांत घुमि क' गेला। हम आश्रमक प्रवेश दुआर दिस डेग बढ़ौलहुँ। भीतरक कक्ष मे पहुँचलहुँ। आचार्य प्रभु पदमासन मे बैसल रहथि आ हुनकर आँखि मुनल रहै।

आचार्यक दर्शन रोमांचित क' देलक। हम एक महान तपस्वी, महामुनी एवं दिव्यात्मा लग पहुँचि गेलहुँ अछि तकर बोध सहजहि भ' गेल। एहन महान आत्माक दर्शन होयत तकर जीवन मे कहिओ कल्पनो ने कयने रही। खराम सँ

पयर निकालि, दू डेग आगाँ बढ़ि, हाथ जोड़ि ओहि महामानव कैँ प्रणाम कयल आ सावधान भ' ठार भ' गेलहुँ। चारूकात दीप जड़ि रहल छलै आ आश्रमक ओहि कक्षक कण-कण सँ ज्योति निकलि रहल छलै। तत्काल एक बात दिस ध्यान आकृष्ट भेल। पयरक तरबा सँ माथ धरि शरीर मे सिहरन होब' लागल रहए। लागल जेना ओहि दिव्य पुरुषक दर्शनक प्रभाव सँ कोनो शक्ति तरल ऊर्जा बनि हमर सम्पूर्ण शरीर मे प्रवेश क' रहल होअय। ई किएक भ' रहल छै से बुझब त' कठिन छल, मुदा शरीर मे विशेष प्रकारक परिवर्तन भ' रहल छैक से धरि स्पष्ट छल। आब हम किछु देखि नहि रहल छलहुँ, स्वयं आचार्यक एक आज्ञाकारी पात्र बनि हुनक समक्ष ठार भ' गेल छलहुँ।

एकाएक आचार्यक पिपनी मे स्पन्दन भेलनि। ओ हमरा दिस तकलनि। पहिने अंदेशा स्वरूप भय जकाँ भेल आ शरीर मे कँपकँपी सेहो होमय लागल। साहस क' आँखिक कोन सँ आचार्य दिस तकलहुँ। आश्चर्य! हुनक सौम्य एवं तेजस्वी मुखमंडल सँ आशीष झहरि रहल छल, स्नेह बरसि रहल छल। मोन हर्षित भेल।

जेना क्षितिजक ओहि पार सँ कोनो ध्वनि आबि रहल होअय, तहिना दूर, अति दूर सँ आयल कोनो स्वर कान मे प्रवेश केलक। आचार्य कहि रहल छलाह–पंडित राज शेखर दत्त, आसन ग्रहण करु।

हम फेर हाथ जोड़ि आ शीश झुका आचार्य कैँ प्रणाम केलहुँ। तखन चुपचाप आगाँ बढ़ि खाली पड़ल कुशक आसन पर बैसि रहलहुँ। ठीक हमरा सोझा मे आचार्य पद्मासन मे बैसल रहथि। ओ कहलनि–दुविधा एवं अविश्वास मे जीअब प्राणी मात्रक लेल आ विशेष क' मनुक्खक लेल अति पीड़ादायक होइत छैक। आब अहाँ दुविधा मे नहि रहू। जाहि उद्देश्य सँ अहाँ चननपुरा लेल यात्रा आरम्भ केलहुँ अछि से पूर्ण भेल। अहाँ ओतहि पहुँचि चुकल छी जत' की अहाँ कैँ पहुँचबाक चाहैत छल।

हम अपन मुंह खोलल–गुरुवर, हम त' स्वेताक कष्ट निवारण लेल यात्रा आरम्भ केलहुँ। हमर एकमात्र अभीष्ट रहल अछि जे गोवर्धन लग पहुँचि स्वेताक संदेश पहुँचा अपन कर्तव्यक अन्त करी। मुदा, हम छी कत', चननपुरा गाम छै कत' तथा गोवर्धन भेटता कत' किछु बुझिए ने रहलियै अछि।

आचार्यक ठोर पर हँसी पसरि गेलनि। ओ शिशु सदृश वाणी मे जवाब देलनि–हमर आश्रम चननपुरे गाम मे अछि, तैँ अहाँ चननपुरा मे छी। काल्हि प्रातः काल अही ठाम अहाँ कैँ गोवर्धन सँ सशरीर भेंट होयत। आब त' अहाँ सहज भ' जाउ।

छोट-छोट घीक दीप सँ निकलल प्रकाश मे आचार्यक कांति एवं दिव्यता कैँ हम स्पष्ट देखि रहल छलहुँ। हुनकर कहब मात्र सत्येटा भ' सकैत छल तकरो

विश्वास भ' गेल छल। तथापि यात्रा मे घटल उटपटांग घटना दुआरे मोन चैन नहि छल। हमर मोनक ओझरौट कैँ आचार्य बुझि गेलाह। कहलनि—मानसिक आ शारीरिक, दुनू तरहे अहाँ प्रताड़ित भेलहुँ अछि। अहाँक विवशता कैँ हम बुझि रहल छी। कोनो कारणवश अहि तरहक आयोजनक जरूरी भ' गेल छलैक ताहि लेल अहाँ कैँ कष्ट देल गेल। बड़ी टा भूमिका देबा सँ नीक जे अहाँ कैँ साफ-साफ वस्तुस्थिति सँ अवगत करा दी। आइ सँ तेरह सय बर्ख पूर्व अही स्थान पर एक भयंकर दुर्घटना भेल रहैक। सभ किछु ओही दुर्घटना सँ सम्बन्धित छैक। आब आउरो सत्य जानू। अहाँ एतय स्वयं नहि अयलहुँ अछि, अहाँ कैँ एतय आनल गेल अछि।

आचार्य की कहि रहल छथि तकर कोनो टा अनुमान हमरा नहि भ' रहल छल। सत्य मे हम आरो भ्रम मे पहुँच गेल रही। चननपुरा पहुँचलाक बाद पशु-पक्षी, गाछ-बृक्ष, लता-पुष्प सभ मे भिन्नता देखि रहल छलियै। पार्वती आ चन्द्रकांतक पोशाक मे, आचरण मे सेहो फर्क छलनि। एखन जे आचार्य एवं हुनक आश्रम कैँ देखि रहल छलहुँ ओ त' निश्चिते अहि युगक भैइए ने सकैत छल? हम किछु बिचारैत आचार्य कैँ पुछलियनि—त' की हमरा तेरह सय बर्ख पूर्वक संसार मे आनल गेल अछि? की हम तेरह सय बर्ख पूर्वक संसार मे छी?

आचार्य आश्वस्त करैत कहलनि—आवश्यकताक अनुसारे तेरह सय बर्ख पूर्वक संसारक एक छोट अंश कैँ आनल गेलै अछि। एखुनका चननपुरा तेरह सय बर्ख पूर्वक चन्दनपुर थिकै, जतय अहाँ बैसल हमरा सँ गप्प-सप्प क' रहलहुँ अछि। पंडित! अहि अति विचित्रताक दुआरे अहाँक असमंजस मे पड़ि जायब जायज एवं स्वभाविक अछि। मुदा अहाँ मे पर्याप्त ऊर्जा भरल गेल अछि जाहि सँ अहाँ तेरह सय बर्ख पूर्वक संसार कैँ देखि सकियैक, ओकर सभटा विधि-विधान कैँ बुझि सकियैक तथा अहाँ लेल जे काज अछि तकरा क' सकियैक। अहाँ अधीर नहि होउ। कार्य सम्पन्न क' अहाँ पुनः अपन संसार मे पहुँचि जायब। अहाँक कोनो टा क्षति नहि होयत तकर हम विश्वास दिअबैत छी।

विभिन्न तरहक प्रश्न माथ मे उपजल। तत्काल आचार्य सँ प्रश्न कयल—गुरुवर, की तेरह सय बर्ख पूर्वक संसार कैँ फेर सँ प्रगट करब सभंव छैक? की अहाँ तेरह सय बर्ख पूर्वक संसार मे सशरीर उपस्थित रहियैक? जँ हँ, तखन जीवनक आरम्भ आ ओकर अन्तक की अर्थ भेलै?

आचार्य प्रशान्त बनल उत्तर देलनि—अहाँक सभटा प्रश्न स्वभाविक अछि। हम एक-एक क' अहाँक प्रश्नक जवाब देब, सुनू। अहाँक पहिल प्रश्न, की तेरह सय बर्ख पूर्वक संसार कैँ प्रगट करब संभव छैक? उत्तर अछि, हँ छैक। कोना? तकर

ज्ञापन अहाँ प्राप्त करू।

लाखों, करोड़ों, अरबों बर्ख पूर्व समय छलैक, समय एखनो छैक आ समय आगूओ अहिना रहतैक। समय अचल अछि। समयक खण्ड नहि भ' सकैत अछि। जीव जकाँ पृथ्वीक आयु निर्धारित अछि। पृथ्वीक आयुक गणना कल्प द्वारा कयल जाइत अछि। जहिना परमात्माक एक छोट अंश आत्मा प्रत्येक जीवन कर्म में बान्हल अछि आ जन्म-मृत्युक चक्कर में पड़ल रहैत अछि। तहिना अचल समयक एक छोट अंश कल्प मे बान्हल रहैत अछि। ओही समयक एक छोट अंशक छाती पर चढ़ि जीवात्मा अपन जगतक निर्माण करैत अछि। अपन सुविधा लेल ओ समय कैँ खण्ड सेहो करैत अछि। ताहि अनुसारे भूत, वर्तमान आ भविष्य समयक तीन खण्ड भेल।

एतुका सूर्य मंडल मे तीन परत छैक जकरा तीन टा जगत कहल जाइत छैक। ओ जगत अछि स्थूल जगत, सूक्ष्म जगत तथा कारण जगत। अहि मे स्थूल जगत सभ सँ छोट जाहि मे स्थूल शरीरधारी बास करैत छथि। सूक्ष्म जगतक विस्तार बड़ पैघ। अहि मे अशरीरी मुदा मनः प्रधान जीवात्मा सूक्ष्म शरीर मे निवास करैत छथि। प्रेतात्मा सेहो सूक्ष्मे जगतक निवासी अछि। जखन सूक्ष्म जगतक जीवात्माक मोन लुप्त भ' जाइत छन्हि तखन हुनक आत्मा कर्मक मोटरी उठौने कारण जगत मे प्रवेश क' कर्मानुसारे पुनः स्थूल जगत मे जन्म लैत छथि।

स्थूल जगत मे घटल विशेष घटना जाहि सँ जीवात्माक आ संगहि विधाताक बनाओल नियम-कानूनक अतिक्रमण भेल होअय तथा जाहि सँ अचल समयक छाती मे खरोंच पड़ि गेल होअय त' ओ सभटा घटना सूक्ष्म जगत मे धरोहर बनि जाइत छैक। पृथ्वीक सूर्य परिक्रमाक कारणे बनल बर्ख, मास, दिन एवं तिथि मे घटल एहन विशेष घटना जाहि सँ प्राणी समूह मर्माहत भेल होथि, ओ घटना ओही बर्ख, मास, दिन एवं तिथि कैँ पृथ्वीक ओही स्थान पर पुनः प्रगट होइत छैक।

एखन हम जाहि विशेष घटनाक चर्चा करब तकर फेर सँ प्रगट हेबाक तिथि उपस्थित भ' चुकल अछि। घटना घटल रहैक तेरह सय बर्ख पहिने। मुदा ओहि घटनाक पुनरावृत्ति आब फेर सँ हेतैक। स्थूल शरीरधारी मनुक्ख ओकरा अपन चर्म चक्षु सँ देखि पाओत से सभंव नहि। तैँ अहाँ मे ओ विशेष शक्ति आरोपित कएल गेल अछि जाहि सँ अहाँ तेरह सय बर्ख पूर्वक घटल घटनाक चीत्कार सुनि सकियैक, किछु राक्षस द्वारा कयल कुकृत्य कैँ देखि सकियैक।

विधाताक इच्छानुसारे ओहि घटना मे भेल अनर्थक परिमार्जन होयन जरूरी छैक। ओहि घटनाक कारणे बिना कोनो दोखक अनेकों जीवात्मा प्रेत योनि मे अपार कष्ट भोगि रहलाह अछि तनिकर उद्धार करबाक समय आबि चुकल अछि।

अहि कार्यक सम्पादन मे अहाँक सहमति एवं सहयोग जरूरी छैक। तैं हम कहल जे अहाँ स्वयं नहि अयलहुँ अछि, वरन अहाँ कैं आनल गेल अछि। पंडित! विधाताक कार्य मे तर्कक कोनो टा गुंजाइश नहि होइत छैक। पात्र बनि अपन कर्तव्यक निर्वहन करी से सभ सँ उत्तम।

हम किंकर्तव्यविमूढ़ बनि आचार्यक बात कैं सुनि रहल छलहुँ। ओ बिना विरामक कहैत रहलाह—आब अहाँक दोसर प्रश्न जे तेरह सय बर्ख पूर्व घटल घटनाकाल हम सशरीर उपस्थित रही अथवा नहि? उत्तर अछि हँ, रही। हिमालय पर्वतक शिखर पर एकटा झील छै जकर नाम भेल मानसरोवर झील। ओ स्थान भेल शिवक तपोभूमि। मानसरोवर झीलक चारूकातक स्थान शिव तत्त्व सँ परिपूर्ण अछि। ओतए हिम-मिश्रित वायु बेग सँ बहैत रहैत अछि। झीलक जल निर्मल आ स्वादिष्ट अछि। हम आ हमरा सन अनेकों तपस्वी मानसरोवर झीलक समीप सूक्ष्म रूपे निवास करैत छी। हजारों बर्ख सँ हम समाधिक विशेष अवस्था मे रहि रहलहुँ अछि। ओतुका सभ तपस्वी विधाताक आदेशाधीन छथि। परमेश्वरक आदेश पाबि हम सभ अल्प अवधि लेल पृथ्वी पर जन्म लैत छी आ कार्य समाप्ति पर अपन सूक्ष्म जगतक आश्रम मे वापस होइत छी। शंकराचार्य, संत ज्ञानेश्वर आ अहि युगक विवेकानन्द ओहि सूक्ष्म-जगतक तपस्वी रहलाह अछि। ओहि ठामक तपस्वी कैं तपबलक कारणें आत्मा जागृत अवस्था मे रहैत छन्हि। परकाया प्रवेश, आन-आन सूर्य मंडलक धरती पर विचरण, आवश्यक भेला पर अहू धरती पर सशरीर आयब तथा औरो विभिन्न तरहक काज सृष्टिकर्ता हमरा सभ सँ करबैत छथि। एतुका राजाक पुरोहित एवं भैरवी मंदिरक पुजारीक प्रार्थना पर हम आइ सँ तेरह सय बर्ख पूर्व चननपुरा सशरीर आयल रही। मुदा हमरा अयबाक किछुए घड़ी पहिने जे हेबाक रहै से घटित भ' चुकल रहैक। पंडित! हम उचित समय देखि हजारों प्रेतात्माक मुक्तिक लेल एखन एतय आयल छी।

आब बचल अहाँक तेसर प्रश्न जे जीवनक आरम्भ आ एकर अन्त सम्बन्धी अछि। अरे! जीवन त' सभ दिन रहलै अछि आ सभ दिन रहतैक। एकर ने आरम्भ छैक आ ने अन्त। परमात्मा छथि निराकार, अजर, अमर एवं अविनाशी। बाँकी ब्रह्माण्ड मे जे जीव आ निर्जीव अछि सभटा निराकार ब्रह्मक साकार रूप। परमात्मा मे परिवर्तन नहि होइ छन्हि। हुनका छोड़ि सभटा परिवर्तनशील अछि। राम होथु अथवा कृष्ण, हम होइ अथवा अहाँ, पृथ्वी पर जन्म लेनिहार सभ मे परिवर्तन हेबेटा करतैक। वाल्यावस्था, यौवनावस्था, वृद्धावस्था आ तखन मृत्यु। मृत्यु भेला पर सूक्ष्म शरीर मे प्रवेश, फेर कारण शरीर मे आयब आ तखन कर्मानुसारे नव जन्म लेब। मुदा ई त' जीवनक आरम्भ नहि थिकै आ ने अन्त।

ई भेल मात्र परिवर्तनक प्रक्रिया जाहि सँ जीवन-मृत्युक चक्कर होइत रहै छैक। ई परिवर्तन त' आदि काल सँ चलि रहल छै आ अनन्तकाल तक चलैत रहतैक।

दलदली भूमि पर पसरल कुम्भीक बीच एकांकी फूल कैँ देखलियै अछि, निस्तब्ध राति मे दूर, अतिदूर सँ अबैत ढोलकक अबाज सुनलियै अछि, पहाड़ सँ झहरैत झरना कैँ देखलियै अछि, कोनो मधुर संगीत सुनि अहाँक हृदय मे टीस उठल अछि, गाछक डारि पर लोल रगड़ैत कोनो पक्षी कैँ देखलियै अछि, आओर त' आओर फूलक माला पहिरने आ अक्षतक चाउर चिबबैत छागर कैँ बलि वेदी दिस जाइत देखलियै अछि। एकांकी फूल, ढोलकक अबाज, झहरैत झरना, हृदय मे उठल टीस, लोल रगड़ैत पक्षी आ की बलिक वेदी दिस जाइत छागर सभटा त' जीवने थिकै ने? कखनहुँ अहाँ मनुक्ख छी आ कखनहुँ छिम्मीक एकटा दाना। मुदा अहाँ छी अबस्से। ई जीवन त' सभ दिन छैक आ सभ दिन रहतैक। आत्माधारी जीवनक जँ अन्त भ' जेतै त' स्वयं परमात्मा मरि जेताह। से की संभव छैक? तैँ कहल जे जीवनक ने आरम्भ होइत छैक आ ने अन्त।

तप सँ, भक्ति सँ अथवा गुरु कृपा सँ जीव जखन अपना मे पूर्णताक अनुभव करैत अछि त' ओकरा होइत छै जे ओ मोक्ष प्राप्त केलक। आब ओकरा फेर सँ जन्म नहि लेब' पड़तैक। मुदा ई सत्य नहि थिकै। परमात्मा जँ समुद्र छथि त' जीवात्मा जलक बून्द। कोनो कारणे जलक बून्द समुद्र मे मिलि गेल त' पाखण्ड चिचिया उठल—आह! मुक्ति भेटि गेल। ई उक्ति अज्ञानक चरम भेल। किएक त' तप्त वायु समुद्रक जल कैँ सोखि आकाश मे मेघ बना देलक। मेघ धरती पर बरसि गेल आ जलक बून्द फेर समुद्र सँ फराक भ' गेल। सैह ने भेलै जीवात्माक रूप आ जीवनक स्वरूप।

आचार्य पद्मासन पर बैसल छलाह। हुनक वाणी मे ने आरोह छल आ ने अवरोह। ओ प्रत्येक हमर उठाओल प्रश्न कैँ सरल भाषा मे बुझा रहल छलाह। हुनक वाणी कैँ श्रवण कर' मे हमरा तृप्ति भेटि रहल छल। आचार्य कहलनि-पंडित! जीवनक खोज छोड़ि दिऔ। जिन्दगी कैँ पाँखि बना क' समयक बिसात पर उड़ैत रहू, विचरण करैत रहू आ प्राप्त जीवन कैँ भरि इच्छा जीबैत रहू। कहिओ मृत्युक भय अहाँ लग ऐबे ने करत। प्रबल जिज्ञासा जीवन मे ठहराब आनि दैत छैक आ तखन त' मृत्यु-भय यथार्थ बनि जाइत छैक।

वीर बाबू पंडित ककाक कथा सुन' मे एकाग्र छलाह। मुदा पंकज कैँ कछमछी भ' रहल छलनि। ओ अपन चौकी सँ उतरि वीर बाबू कैँ केहुनी सँ खोंचारैत आहिस्ते सँ हुनक कान मे कहलनि—पंडित कका की कहैत छथिन से हमर बुद्धि मे आबिए ने रहल अछि। हमर मोन त' टाँगल अछि स्वेता मे। हुनका कष्ट मे

छोड़ि हमरा लोकनि आध्यात्मक पन्ना फाड़ि रहलहुँ अछि, से की न्यायबला बात भेलै? पंडित कका चननपुरा पहुँचि चुकल छथि। भाइ जी, हुनका पुछियनि जे गोवर्धन भेटलखिन आ कि नहि? फरिछा कँ कहथु। आब हमरा सबुर नहि अछि। पंडित कका कँ खिस्सा कह' लेल की कहलियनि जेना बुझि पड़ैत अछि जे ससरफानी मे फँसि गेलहुँ अछि।

11.

वीर बाबू आ पंकज बेराबेरी जल पिलनी, आँखि धोलनि आ अपन-अपन चौकी पर बैसलाह। पंडित ककाक भाव-भंगिमा मे कोनो टा फर्क नहि भेल छलनि। खिस्साक आरम्भ काल ओ जाहि पोज मे बैसलाह ताही पोज मे एखनो छलाह। मुदा अन्तर आबि गेल छलनि बजबाक शैली मे। उत्साह संग आवेशित भ' ओ कहलनि—हम पंकजक अधीरता कैँ बुझि रहल छियनि। मुदा एखन तक हमहुँ त' अनिश्चए मे रही। मानलहुँ हम चननपुरा पहुँचि गेल रही, मुदा गोवर्धन सँ भेंट त' नहि भेल छल। आचार्य कहने रहथि जे हम चननपुरा गाम अपनहि नहि आयल रही, आनल गेल रही। आचार्य आरो कहलनि जे हजारो जीवात्मा केर प्रेत-योनि सँ मुक्ति लेल हमर सहमति एवं सहयोगक आवश्यकता छैक। मोन मे स्वभाविक प्रश्न छल—किएक? उत्तर नदारद तेँ मोन उदिग्न छल। आचार्यक कहल गप्प कैँ अविश्वास करब असम्भव छल। तकर माने ई थोड़बे भेलै जे विश्वासक पहाड़ तर पीचा जाइ, थकुचा जाइ? कोनो बातक सीमा त' हेबेक चाही? हमर निजक ने कोनो मांग छल आ ने चाह। मात्र स्वेताक सम्बाद गोवर्धन तक पहुँचेबाक दायित्व। तखन ई की भ' रहल छलै? बिना कसूरक हम सीक पर किएक टंगा गेल रही?

वीर बाबू सहानुभूति प्रगट करैत बजला—पंडित कका, अहाँ व्यथा मे छी। हम अहाँक कराहब बरोबरि सुनैत रहलहुँ अछि। ई खिस्सा त' अहाँक जीवनक बितल एक सच्चाइ थिक। अहाँ कहियौ, तकर उपरान्त आचार्य की कहलनि?

पंडित कका अपना कैँ सम्हारैत बजला—तखन आचार्य जे किछु कहलनि से सुनि अच्चभित भ' गेलहुँ। हमर यात्राक उद्देश्य एवं ओकर सार्थकता मे आमूल परिवर्तन भ' गेल। आब सुनू जे आचार्य की कहलनि।

आचार्य कहलनि—तेरह सय बर्ख पूर्व मिथिलांचलक अहि भाग मे कोनो राजा नहि रहथि। राजा नहि रहला सँ व्यवस्था मे शून्यता आ अराजकता पसरल रहैक। एतय तीन-चौथाइ भाग मे जंगल छलै। जंगल मे जंगली जातिक बहुतो समुदाय

रहैत छल। ओकर अपन नियम आ अपन कानून छलै जे सभ्य समाजक लेल अभिशाप बनि चुकल छल।

ओमहर सम्पूर्ण भारत मे धर्म संघर्षक युग बितल छलै। बौद्ध धर्मक उदय एवं प्रचार-प्रसार सँ वैदिक धर्म सैकड़ों बर्ख तक संकट मे पड़ि गेल छल। बौद्ध मतावलम्बी वैदिक धर्म मे स्थापित वर्ण व्यवस्था कँ नकारि देने छलाह। न्याय कँ आगाँ आनि श्रुतिक प्रामाणिकता कँ अमान्य बना देने छलाह। ओ लोकनि वेदक श्रेष्ठता कँ ध्वंस क' ब्राह्मण कँ हीन कहि, आर्यावर्त्तक आध्यात्मिक, सांस्कृतिक आ सामाजिक परम्परा एवं विश्वास कँ नष्ट कर' मे कोनो टा कसरि बाँकी नहि रखने रहथि। बौद्ध धर्मक छह-सात सय बर्खक प्रचार-प्रसारक समय मे मध्य एशिया सँ अनेकों जाति भारत मे आबि जहँ-जहँ बसि गेल छल। मिथिला मे सेहो ओहि खानाबदोसी जातिक प्रवेश भ' चुकल छलै। ई आब' बला जाति जतय अवसर पौलक एतुका जाति मे सनिहा गेल। जतय एकर सम्भावना नहि बनलै फराक जातिक नामकरण क' रह' लागल। अहि जातिक लोक स्वभाव सँ खूंखार, हिंसक, अशिष्ट, संकीर्ण, आतंकबादी एवं संस्कार सँ हीन छल। बौद्ध-धर्मक चलते ब्राह्मण विरोधी बसात त' बहिए रहल छलै। तँ अहि जातिक लोक ब्राह्मणक आश्रम मे उपद्रव करब, ब्राह्मण कँ अपमान करब अपन मुख्य धंधा बना लेने छल।

मिथिला मे सरल शांत, मृदुभाषी, थोड़ मे संतुष्ट रह' बला मैथिल पंडित नदीक तीर पर आश्रम मे रहि दर्शनक विभिन्न शाखा यथा मीमांसा, सांख्य, न्याय, भाष्य, काव्य आदि ग्रंथक रचना मे व्यस्त रहैत छलाह। मुदा कारी वर्ण, चपटल नाक, गोल-गोल आँखि, बेडौल शरीर आ उज्जट स्वभाव बला विदेशी जातिक प्रवेश सँ मिथिलाक अहि भाग मे अशांति पसरि गेल छलै। मैथिल पंडितक ध्यान अहि असुर स्वभावक जातिक दमन हेतु आकृष्ट भेल। तदनुसार पुरोहित राम बल्लभ उपाध्यायक अध्यक्षता मे मिथिलाक एक प्रतिनिधिमंडल खंडबा पहुँचल।

खंडबा चन्द्रवंशी क्षत्रियक गढ़ छल। भारतक अनेक भाग मे अही ठामक राजपूत राजा राज्य करैत छलाह। अही वंशक एकटा प्रतापी राजा कर्नाटक प्रदेशक राजा रहथि जनिक नाम छल महाराज राम सिंह देव। पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय अपन मंडली संग महाराज राम सिंह देवक सभा मे पहुँचि मिथिलाक लेल एक सुयोग्य राजाक मांग केलनि। पर्याप्त सैन्यबल एवं धन द' कर्नाटकक महाराज अपन छोट भ्राता रुद्र प्रताप सिंह देव कँ पुरोहित संग मिथिला हेतु बिदा केलनि।

रुद्र प्रताप सिंह देव मिथिलांचलक अहि भाग मे अपन साम्राज्य स्थापित

केलनि। चननपुरा हुनक राजधानी बनल। महाराज मे राजाक सभटा गुण विद्यमान रहनि। पूर्व मे समुद्रक ओहि पार श्याम नामक एक देश छल जकर राजा वैदिक धर्माबलम्बी रहथि। हुनकहि पुत्री राजकुमारी हेमाबती सँ महाराज रुद्र प्रताप सिंह देबक विवाह भेल रहनि। महारानी हेमाबती महाराजक संगहि आयल रहथिन। महारानी-सुन्दरि, सुशीला एवं पतिब्रता छलीह। खंडबा सँ महाराजक संग हुनक सेनापति शूर सेन गणपति सेहो आयल छलाह। ओ वीर, योद्धा एवं महाराजक आज्ञाकारी छलाह। सभहक आग्रह एवं योग्यताक कारणे पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय महाराजक महामंत्री बनला। पुरोहित महाराजक महामंत्रीक अतिरिक्त हुनक मित्र एवं परामर्शदाता सेहो छलाह।

राजाक आगमनक थोड़बहि समय मे चारूकात व्यवस्था कायम भ' गेल। सभ तरहक उपद्रवक दमन कयल गेल। जंगली जाति सेहो मधु एवं चमड़ाक ढ़ाल कर स्वरूप द' महाराजक अधीनता स्वीकार केलक। मध्य एशिया सँ आयल उत्पाती जातिक लोक विभिन्न प्रकारक सेवा कार्य मे नियुक्त भ' स्थिर भ' क' रह' लागल। महाराज पौराणिक राजतंत्र एवं वैदिक धर्मक अनुरूप राज-काज चलाब' लगलाह। साम्राज्य मे शांति एवं व्यवस्था मे कतहु कमी नहि रहलै। मिथिलाक पंडित निर्विघ्न पठन-पाठन एवं पूजा-अर्चना मे व्यस्त होब' लगलाह। जंगल आ कृषि सँ पर्याप्त अन्न, फल तथा आन-आन वस्तुक आमदनी होब' लगलै। पशु-धनक वृद्धि भेलै। दूध, दही धृत आदि सभ ठाम प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध रहै। शूर सेन गणपतिक प्रशिक्षित सेना चननपुरा साम्राज्यक रक्षाक लेल सदिखन तत्पर रहैत छल। सुख आ समृद्धि चननपुरा साम्राज्यक चेरि बनि गेल छल। महाराज रुद्र प्रताप सिंह देवक राज्य मे यश आ प्रतिष्ठा चारूकात परिलक्षित होब' लागल छल।

ओहुना मिथिलाक माािटक कोमलता मे ई गुण छैक जे प्रेम आ स्नेह एतुका प्राकृतिक गुण बनि क' रहल अछि। ओहने मंगलमय वातावरण मे महारानी हेमाबतीक कोखि सँ एक कन्याक जन्म भेलनि। पहिल संतानक आगमन माता-पिताक लेल अनमोल त' होइते छैक। ताहि पर सँ महारानीक पुत्री गुड़िया सन कोमल आ सुन्दरि छलथिन। कन्याक सुन्दरता सँ मुग्ध भेल पुरोहित हुनक नामक चयन केलनि-स्वेता। स्वेता अपन माता-पिताक संग चननपुराक समस्त प्रजाक लेल प्रिया बनि गेलीह। स्वेताक सुन्दर छवि देखक लेल सभ आतुर रहैत छल।

स्वेता दू बर्खक भेली। बच्चा कैँ हुनक माता-पिता कतबो दुलार किएक ने करथु ओकरा अपन तूरक नेना-भुटका संग खेलेबा मे अधिक प्रसन्नता भेटैत छैक। सभ दिस सँ धिया-पूता कैँ आनल गेल। पुरोहित कैँ मात्र एकटा संतान, हुनक पुत्र गोवर्धन। गोवर्धनक माता स्वर्गवासनी भ' गेल छलथिन्ह। यद्यपि

गोवर्धन बयसमे स्वेता सँ चारि बर्खक पैघ छला, तथापि पुरोहित हुनकहुँ, स्वेताक संग खेलाइ-धुपाइ बला मंडली मे सम्मलित क' देलथिन।

कोनो अनहोनी होयबाक रहैत छैक त' ओकर सूत्र पहिने सँ कायम भ' जाइत छै। बहुतो बच्चा कँ रहितो स्वेता कँ गोवर्धन सभ सँ बेसी पसिन्न छलथिन्ह। स्वेताक गोवर्धनक प्रति तीव्र आकर्षण आन-आन बच्चाक लेल इर्षा बनि गेल। मुदा महाराज-महारानीक पुत्री स्वेता कँ एकर कनिकबो परबाहि नहि छलनि। ओ सदिकाल गोवर्धन मे सटल हुनकहि संग खेलाइत छलीह। राति मे सुतल स्वेता चेहा क' जागि जाथि आ गोवर्धनक नाम रटैत-रटैत कान' लागथि। जखन महाराज-महारानी कँ आन कोनो उपाय नहि सुझलनि त' राजमहलक एक कक्ष मे गोवर्धनक आवास बना देलनि। तकर बादे स्वेता निश्चिन्त भेलीह। दिन-राति गोवर्धनक समीप रह' मे ओ स्वतंत्र भ' गेली।

समय बितल गेल। समयक संग स्वेता मे यौवन प्रस्फुटित भेल। यौवनक प्रस्फुटन विकासोन्मुख भेल। स्वेता पूर्ण युवती बनि गेली। हुनक यौवनक सुगन्धि सँ चननपुरा साम्राज्यक कण-कण गमकि उठल। यौवनावस्था प्राप्त भेलो पर स्वेताक स्नेह गोवर्धनक लेल ओहिना बनल रहल। गोवर्धन अधिक काल महाराजक गौशाला, चरागाह अथवा आम्रकुंज मे घुमैत रहैत छलाह। स्वेता ओतहु पहुँचि गोवर्धनक संग गाछ पर चढ़ि चिड़ै-चुनमुनी सँ गप्प-सप्प करथि, आम तोड़थि, खोप महक अंडा कँ गनथि आ गाछ पर सँ उतारि देबा लेल गोवर्धन सँ गोहारि करथि। गोवर्धन जखन बाँसुरी बजाबथि त' स्वेता बेसुध भ' जाथि आ गोवर्धन कँ एकटक निहारैत रहथि। गोवर्धन हुनक प्राण बनि गेल रहथिन। स्वेता कँ लोक-लाजक कोनो टा फिकिर नहि रहनि। गोवर्धनक प्रेम मे स्वेता सभटा मर्यादा कँ तोड़ि देने छलीह।

गोवर्धनक प्रति स्वेताक अगाध प्रेम नुकायल नहि रहल। महाराज-महारानी एकरा देखलनि, बुझलनि आ आत्मसात करैत रहलनि। महाराज आ महारानी स्वेता सँ ततेक ने स्नेह करैत छलीह जे पुत्रीक इच्छा दुनूक अभिलाषा बनि चुकल छल। ओहुना गोवर्धन सेहो सर्वगुण सम्पन्न छलाह। ओ परम पूज्य पुरोहित राम बल्लभ उपाध्यायक पुत्र रहथि। ताहि पर सँ गोवर्धनक व्यक्तित्व मे अद्भुत आकर्षण छलनि। गौरवर्ण, स्वस्थ्य एवं पुष्ट शरीर, औंठिया केश, तरासल मूर्तिक लावण्यता सँ भरल चेहरा, कोमल आ शिष्ट आचरण। गोवर्धनक बाँसुरीक मधुर धुन त' महाराज-महारानी कँ पहिने सँ मंत्र-मुग्ध कयने छल। स्वेता जँ गोवर्धन कँ पति रूप मे वरण क' लेथि, ताहि मे हर्जे की? दिन त' पुरोहित तकताह, मुदा अगिला अग्रहण शुक्ल पंचमीक विवाहक दिन त' तकले रहैत छैक। हँ, जँ भ'

जाए ई विवाह त' खुशिए टा आनत।

पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय महाराज एवं महारानीक विचार सँ असहमत कोना भ' सकैत छलाह? ओहुना विधाताक विधान मे अड़चन देनिहार ओ के रहथि? सेनापति शूर सेन गणपति ओहि शुभ घड़ीक लेल उताहुल रहथि जहिया गोवर्धन स्वेताक मांग मे सिन्दूर भरि देथिन।

चननपुराक समस्त प्राणीक संग पशु-पक्षी सेहो अपन-अपन कामना कँ स्वेताक उद्दाम प्रेम मे मिला एकटा अनुपम एवं मनोरम वातावरण बना देने छल जतए उमंग मे सभ नाचि रहल छलाह। मात्र गोवर्धन एसगरे अहि तरंगित कर' बला भाव सँ अनभिज्ञ रहथि। हुनक बाल्यावस्था सँ एखन धरिक स्वेताक संग खेलायब-धुपायब मात्र एकटा औपचारिकताक निर्वहन मात्र छल। बाँसुरी बजेनाइ, गायक बाछाक संग मैदान मे दौड़नाइ, गाछी-बिरछी, परती-परांत मे घुमनाइ आ एकांत भेला पर आकाश दिस एकाग्रचित भ' तकनाइ हुनक मनपसंद काज छलनि। स्वेता सँ ओ स्नेह अवश्ये करैत छलाह। मुदा प्रेम, प्रेम ककरा कहैत छै? पता नहि जेना गोवर्धनक प्रेमिका कोनो आन लोक सँ अओथिन? जाए दिऔ। अग्रहण मे जखन विवाहक शुभ घड़ी अऔतैक त' गोवर्धन महाराज आ महारानी सहित अपन पिताक आज्ञाक अवहेलना की क' पौताह? कथमपि नहि। तखन चिन्ता कथीक? एखन दुनू कँ मान-मनौअलिक प्रेम सुधा रस पिब' दिऔन।

एक पलक लेल पंडित राज शेखर दत्त वीर बाबू आ पंकज दिस तकलनि। जेबी सँ जेना बटुआ हेरा गेल होनि तेहने भाव दुनूक चेहरा पर झिलमिला रहल छलनि। दुनू कँ सम्बोधित करैत पंडित कका कहलनि—आचार्य द्वारा वर्णित स्वेता आ गोवर्धनक जीवन-चरित सुनि हम अबाक भ गेल रही। आब स्वेताक संदेश गोवर्धन तक पहुँचेनाइक की औचित्य रहि गेल रहैक? सभ किछु छलावा छल आ हमरा चननपुरा तक पहुँचेबाक एक प्रकारक साजिश छल। मुदा से किएक? आचार्य बाजल छलाह जे हमर सहयोग आ सहमतिक आवश्यकता रहै। मुदा कथी लेल? आचार्य इहो कहने रहथि जे हम चननपुरा अपने नहि आयल छलहुँ, वरण हमरा आनल गेल छल। मुदा फेर प्रश्न ठारे छल-किएक? किछु स्पष्ट नहि रहैक। मुदा हम किछु बजलहुँ नहि, धैर्य सँ आचार्यक गप्प सुनैत रहलहुँ।

आचार्य कहैत रहला—ओहने सुखद घड़ी मे पुरोहित राम बल्लभ उपाध्यायक कँ एकटा महा विध्वंसकारी संदेश भेटलनि। दक्षिण भारत सँ चण्डचूर नामक एक गोट कापालिक अपन शिष्य मंडली सहित पुजारी बाबा भजनानन्दक भैरवी मंदिर मे खंती गारलक अछि। दक्षिण भारतक कापालिक केहन उद्दण्ड, भयंकर आ पापाचारी होइत अछि से पुरोहित कँ नीक जकाँ बुझल छलनि। संदेश पबितहि

अनिष्टक आशंका सँ हुनक अतंरात्मा काँपय लगलनि।

महाराज रुद्र प्रताप सिंह देवक राज्यक अन्दरे, चननपुरा राजधानी सँ दस कोस उत्तर-पूब कोण मे, तारा भगवतीक विशाल मंदिर छलै। मंदिर सभ दिस सँ हत्ता सँ घेरल छलै। ओतए अनेक देवी-देवताक मंदिर छलनि जे पूजा-अर्चना कर' बला जन समुदाय सँ सदिखन भरल रहैत छल। ओही मंदिरक हत्ताक भीतरे तंत्र मार्गीक उपासना हेतु भैरवी मंदिर छल जकर पुजारी बाबा भजनानन्द छला। बाबा भजनानन्द स्वयं तांत्रिक रहथि आ हुनका अनेकों सिद्धि प्राप्त रहनि। पुजारी बाबा वेद सम्मत दक्षिण मार्गी तांत्रिक छलाह। ओ कत' कँ बासी रहथि, हुनक गोत्र-मूल की रहनि तथा ओ कहिआ सँ भैरवी मंदिरक पुजारी रहथि से ने ककरो बुझल रहैक आ ने कियो जनबाक इच्छे कयने छल। पुजारी बाबा लोक कल्याणार्थ भैरवीक आराधना करैत छथि से धरि सभ कँ बुझल रहैक। पुजारी बाबाक यश सम्पूर्ण चननपुरा साम्राज्य मे व्याप्त छलनि। हुनक दर्शन मात्र सँ दुःख-संताप ओहिना मेटा जाइत छलैक, तँ हुनक दर्शन लेल लोक तारा मंदिर जाइत छल।

चण्डचूर वाम मार्गी अघोर पंथी कापालिक छल। दक्षिण भारतक श्रीशैल पर्वत पर कापालिकक मुख्यालय रहैक। ओतहि द्वादश ज्योतिर्लिंग मल्लिकार्जुन महादेवक मंदिर छन्हि। बौद्ध धर्म सँ च्यूत वज्रयानी अनुयायी जे प्रायः भ्रष्ट आ दुष्ट आचरणक मनुक्ख होइत छल, तंत्र कँ अपन वासना पूर्ति अनुरूप परिभाषित क' वाम मार्गी तांत्रिक बनि श्रीशैल पर्वत पर सिद्धि पीठ बनौने छल। चण्डचूर ओही सिद्धि पीठक उच्च कोटिक तामसी साधक छल। तंत्रक विशेष कोनो सिद्धि प्राप्त करबाक उद्देश्य सँ ओ मिथिलाक तारा मंदिरक परिसर मे भैरवी मंदिर मे अपन शिष्य मंडली संग स्थान पकड़ने छल। जखने ओ भैरवी मंदिर मे आसन जमौलक पुजारी बाबा ओहि मंदिर कँ त्यागि सटले दोसर विशम्भरी माताक मंदिर मे चलि गेल छलाह।

12.

हम आचार्य सँ पूछि देलियनि—तंत्र जे एतेक अपयशक भागी बनल अछि, से की वेद सँ बहरायल अछि?

आचार्य उत्तर देलनि—हँ, हँ! तंत्र सेहो वेद सँ बहरायल अछि। मुदा तंत्र साधनाक मार्ग जे वेद मे कहल गेल अछि ओ शक्ति मार्ग अछि। बाद मे अहि मे बहुतो अन्तर आबि गेलै। वाम मार्गी, अति वाम मार्गी, अघोर पंथी, कापालिक सम्प्रदायक तामसी पूजा आदि मनुक्ख अपन स्वार्थ लेल, वासनाक पूर्ति लेल एकरा अतिशय कठोर बना देलक। एकरा बुझक लेल पंडित, जे जानकारी अछि से सुनू।

साधना लेल आवश्यक भेल योग एवं तंत्र। साधना मे धारणाक बाद ध्यान आ तखन समाधि। साधनाक मुख्य मांग अछि एकाग्रता। एकाग्रता प्राप्त कर' मे बहुत श्रम लगैत छैक। बाजब, देखब, सुनब अर्थात प्रत्येक क्रिया मे शरीरक ऊर्जा खर्च होइत छैक। मुदा एकाग्रता लेल अत्यधिक ऊर्जा चाही। एहि मे सबसँ पैघ बाधक 'काम'क नियंत्रण मे सर्वाधिक ऊर्जा खर्च होइत छै। साधक पौलनि जे ध्यानकाल एकाग्रता प्राप्त करबा मे सभ सँ पैघ बाधक अछि 'काम' शक्ति। 'काम'क चलिते योगी स्खलित भ' ऊर्जाक क्षय करैत छथि। थोड़ महायोगी कँ छोड़ि 'काम' पर विजय प्राप्त करब योगी लेल कठिन होइत छन्हि। कयल की जाए? तखन एगो मार्गक आबिष्कार कयल गेल। प्रचण्ड काम शक्ति पर नियंत्रण करक लेल 'काम' कँ मुख्य आधार बना क' साधना कयल जाए। एकरे नाम देल गेल तंत्र मार्ग।

ऋग्वेद मे अछि वागाम्मृणी सूक्त। अहि सूक्त सँ कुण्डलिनी शक्तिक परिचय भेटैत अछि। शाक्त तंत्र कँ 'कौल' मत कहल जाइत अछि। कौल मताबलम्बी अर्थात कुण्डलिनी शक्ति कँ जननिहार मानव पिण्ड मे ब्रह्माण्डक सभ तत्त्वक मिश्रणक खोज केलनि। ओ इहो ज्ञान पौलनि जे मानव शरीरक मूल शक्ति सुसुप्तावस्था मे मूलाधार चक्र मे अवस्थित अछि। जँ काम शक्ति कँ अत्यधिक उत्तेजित क' बिन्दुपातक अवस्था मे आनि मूलाधार चक्र पर आघात कएल जाय

त' मूलाधार चक्र मे सुतल कुण्डलिनी जागि सकैत अछि। कुण्डलिनी जागरण सँ मूलाधार चक्रक मूल शक्ति अष्ट चक्र भेदन क' सहस्त्रार चक्र मे पहुँचि सकैत अछि। मूलाधार चक्र भेलीह शिवा आ सहस्त्रार चक्र मे छथि शिव। अर्थात तंत्र साधना बले जँ शिवा कैँ शिव मे मिला देल जाए त' ब्रह्माण्डक सभटा शक्तिक अधिकारी मानव बनि जेताह। अहि विधि सँ साधक कैँ सभटा सिद्धिक संगहि महानिर्वाण सेहो प्राप्त भ' जेतनि। अहि तरहें 'काम' शक्तिक महत्त्व कैँ चिन्हल गेल आ ओकरा तंत्र साधना मे स्थापित कएल गेल।

तंत्र साधनाक आधार अछि पंचमकार तथा षट्चक्र भेदन। पंचमकार भेल मांस, मदिरा, मुद्रा, मीन आओर मैथुन। ई पंचमकार शरीर मे रह' बला पाँच तत्त्व जेना पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाशक प्रतिनिधित्व करैत अछि। कौल मत मे पंचमकार ककरा कहैत छै से बुझियौ।

ब्रह्म मुहूर्त मे आकाश सँ अमृतक अढ़ाई बून्द प्रेम सुधा बनि खसैत अछि। योगी ओहि सुधा रसक पान करैत छथि अर्थात 'मदिरा' पिबैत छथि। साधक ज्ञान रूपी तलवार सँ पाप एवं पुण्य, दुनू तरहक बंधन के बलि दैत छथि, तैँ ओ 'मांसाहारी' भेलाह। शरीर महक इड़ा एवं पिंगला नामक दुनू नाड़ी कैँ मत्स्य कहल गेल अछि। साधक कुम्भक द्वारा सुषुम्ना मार्ग मे वायु संचालन क' इड़ा एवं पिंगला नाड़ी कैँ शोधन करैत छथि तैँ ओ 'मत्स्य' भक्षक कहौलनि।

सत्संग क' साधक अधलाह विचार एवं अधलाह संगतिक निरादर करैत छथि तैँ 'मुद्रा' साधक भेलाह। सहवास सँ हजारो गुणा अधिक आनन्द सुषुम्ना मे प्राण कैँ स्थिर करब अछि। अहि यौगिक क्रिया कैँ 'मैथुन' नाम देल गेल अछि।

वेद मे तंत्रक विधान सांकेतिक भाषा मे अछि। एकरे पिपीलका मार्ग अर्थात विशुद्ध तंत्र मार्ग बताओल गेल अछि। तंत्रक दुरुपयोग हेबाक सम्भावना कैँ ध्यान मे रखैत गोपनीयता कैँ आवश्यक मानल गेल।

आब षट्चक्र भेदनक की अर्थ भेलै तकरो बुझि लिअ। ढोढ़ीक नीचा काम केन्द्रक स्थान अछि। एकरा मात्र स्थूल शरीर सँ सरोकार छैक। ओहि मे मूलाधार, स्वाधिष्ठान तथा मणिपुर नामक तीन टा चक्र छैक। क्रिया सम्बन्धी जे किछु अछि ओ काम केन्द्र सँ संचालित होइत अछि। ढोढ़ीक ऊपर ज्ञान केन्द्र अछि। एतुका तीनू चक्र अनाहत, विशुद्धी एवं आज्ञा चक्र सूक्ष्म शरीर सँ सम्बन्धित अछि। मानव शरीरक मोन, बुद्धि, विवेक तथा अहंकार अही ज्ञानक तीनू चक्र सँ गतिमान होइत अछि। अही छहो चक्र भेदन अथवा चक्र जागरण कैँ तंत्र विद्या मे षट्चक्र भेदन कहैत अछि।

मिथिला मे आदि काले सँ कौल मताबलम्बीक वर्चस्व रहलनि अछि आ तैँ

मैथिल 'कुलीन' कहबैत छथि। एतय भगवती एवं महादेवक पूजा घरे-घर अदौ सँ होइत रहल अछि। उपासनाक प्रत्येक विधा एवं गृहस्थ जीवनक प्रत्येक सुअवसर यथा मुण्डन, उपनयन, विवाह, अरिपन, देवाल परक चित्रांकण, पूजा घर सँ भनसा घर तक अर्थात सभ ठाम मिथिला मे तंत्र-मंत्र आ यंत्रक दर्शन होइत अछि। कामहिक कारण सृष्टि अछि एवं पृथ्वी पर कोनो टा क्रिया होइत अछि। अस्तु, काम शक्तिक प्रबलता एवं उपयोगिता सँ मिथिलाक पंडित आदि काले सँ परिचित रहला आ ओ तंत्र कैँ आधार बना निःस्वार्थ भाव सँ साधना एवं उपासना करैत रहलाह अछि। पुजारी बाबा भजनानन्द कौल सम्प्रदायक साधक रहथि। ओ वेदक अनुसारे पंचमकारक सेवक तथा षटचक्र भेदनक समर्थक छलाह।

चण्डचूर अहि सँ भिन्न अति दुष्ट वाममार्गी कापालिक छल। बौद्ध धर्म सँ बहरायल बज्रयानी समुदाय कैँ वेदक सांकेतिक भाषा कैँ बुझबाक संस्कार नहि छलै। भारत मे ओहि काल वेद आ वैदिक धर्मक विरोध मे प्रचण्ड हवा बहि रहल छलै। मध्य एशिया सँ आयल वर्ण संकरी जाति कैँ ने कोनो धर्म छलै आ ने नैतिक मूल्य। सुगमता सँ उपलब्ध बौद्ध धर्मक ओ सभ दीक्षा लेलक आ बौद्ध भिक्षु बनि भारत मे पसरि गेल। चिंतन काल बौद्ध भिक्षु कैँ शारीरिक चक्रक ज्ञान भेलै। शरीर चक्रक आरो जानकारी एवं विकास ओ सभ मिलि क' केलक तथा तंत्र मे प्रचलित पंचमकारक लौकिक विवेचना क' वाम मार्गी तंत्रक जन्म देलक। उत्कट साधना एवं वाम मार्गक तामसी पूजा पद्धतिक बलें ओ सभ काम केन्द्रक तीनू चक्रक भेदन कर' मे सफल भेल। काम केन्द्रक तीनू चक्रक भेदन होइतहिं मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तवन आदि प्रकारक सिद्धी ओकरा सहजहि प्राप्त भ' गेलै। साधारण क्षमता रखनिहार मनुक्ख कैँ थोड़बो सिद्धि प्राप्त करबाक अर्थ भेल अनिवार्य रूपें अनर्थ होयब। सैह भेलै। स्वभाव आ आचरण सँ राक्षस प्रवृत्तिक बौद्ध भिक्षुक एतबा सिद्धि प्राप्त क' हिंसक, कामुक, लम्पट, क्रोधी आ दुष्ट बनि सम्पूर्ण आर्यावर्त्त मे पसरि गेल। ओ तमाम तांत्रिक पापाचार एवं यौनाचार प्रवृति कैँ धारण क' भारत मे हाहाकार मचा देलक। यैह मुख्य कारण भेलै जे बौद्ध धर्म सन महान धर्म भारत सँ सदाक लेल पलायन क' गेल। जेना कहि चुकलहुँ अछि चण्डचूर अही बज्रयानी मार्गक कापालिक छल जे मिथिला मे आबि बलपूर्वक भैरवी मंदिर मे खंती गारि तामसी साधना शुरू कयने छल।

चण्डचूरक अबितहि पुजारी बाबा विशम्भरी माताक मंदिर मे चलि गेल रहथि, मुदा हुनक नजरि चण्डचूर एवं ओकर शिष्य पर सदिकाल रहैत छलनि। चण्डचूरक साधना शुरू भेल। ओ विधि-विधान सँ अलंकार, माला, कुण्डल आ यज्ञोपवित धारण केलक। फेर नाड़ी शोधन, प्राणायाम आदि योगाभ्यास करैत रहल। किछु

दिन ई सभ केलाक बाद ओ गौरी पूजा, रोहिणी पूजा एवं कन्या पूजा केलक। एक मास तक ओकर यैह सभ कार्य होइत रहलैक। तकर बाद ओकर तामसी पूजा आरम्भ भेलै। ओकर सभटा चेला मिलि भैरवी मंदिरक आगाँ बड़ी टा कुंड बनौलक आ ओहि मे अग्नि प्रज्जवलित केलक। चण्डचूर पता नहि कोन प्रकारक द्रव्य आ समिधा कँ ओहि कुंड मे आहूति देनाइ शुरू केलक जे सम्पूर्ण तारा मंदिरक प्रांगण मे दुर्गन्धि पसरि गेलैक। चण्डचूरक अहि कृत्य सँ दुखी भ' बाबा भजनानन्द कँ छोड़ि आन-आन मंदिरक सभटा पुजारी एवं कर्मचारी ओतए सँ पलायन क' गेल। पूजा-अर्चना कर' बला भक्त सेहो मंदिर कँ त्यागि देलनि।

चण्डचूरक तामसी पूजा गति पकड़लक। ओ पूर्णतः चण्डालक स्वरूप मे आबि गेल। चण्डचूर मनुक्खक हड्डीक माला पहिरि नरमुंड मे मदिरा पिअ लागल आ कुंड मे मंत्र पढ़ि-पढ़ि क' समिधा फेक' लागल। ओकर पूजाक विधि ततेक ने वीभत्स रहैक जे बाबा भजनानन्द कँ सेहो सहन करब कठिन छलनि। तथापि ओ अपन आसन पर मंत्र जाप करैत रहला आ चण्डचूरक सभटा कृत्य कँ देखैत रहला। अहि तरहें दोसर मास बीति गेल।

तेसर मासक आरम्भे मे चण्डचूरक तामसी पूजा अति पर पहुँचि गेलै। ओकर चेला मे सँ कियो कतहुँ सँ एकटा शव उठा अनलक। कइएक दिन-राति तक चण्डचूरक शव साधना चलैत रहलै। ओहि सँ निवृत्त भ' ओ योनि पूजा केलक आ समस्त तप कँ आहूति बना भैरवी पूजा लेल अग्रसर भेल। चण्डचूर सनक कापालिक कँ तीव्र कामोत्तेजना लेल अक्षत यौवन सम्पन्न तरूणी जे अस्पर्शा होथि तकर प्रयोजन रहैक। ओकर चेला अहि तरहक काज कर' मे निपुण छल। नीच आ जंगली जातिक एक-एक बाला कँ ओकर शिष्य आन' लागल। चण्डचूर खुल्लम-खुल्ला ओहि रमणी संग रमण करए आ अन्त मे ओहि बालाक बलि भैरवीक मूर्तिक आगाँ द' दैक। बालाक मृत शरीर कँ ओकर चेला अग्नि कुंड मे फेकि दैक।

अहि तरहें चण्डचूर अनेकों बालाक बलि देलक। आब ओकरा ऊँच वंशक कन्याक बलि देब जरूरी भेलै। ओ अपन शिष्य सँ एकर मांग केलक। चण्डचूरक शिष्य मे प्रधान छलै ब्रजेश्वर। आगाँ बढ़ि ब्रजेश्वर अपन गुरु चण्डचूर कँ सूचित केलक जे चननपुरा साम्राज्यक महाराज रुद्र प्रताप सिंह देव कँ कन्या छन्हि। ओ कन्या यौवनक पयदान पर पयर राखि चुकल छथि। हुनक नाम अछि स्वेता। स्वेता सनक सुन्दरि कन्या त्रिभुवन मे भेटब असम्भव अछि। भोग एवं बलि देबा लेल स्वेता सँ अधिक योग्य कन्या पायब दुर्लभ अछि। ब्रजेश्वर अपन गुरु कँ इहो सूचना देलक जे स्वेताक अपहरण करक क्षमता कोनो शिष्य मे नहि छैक। अस्तु,

एकरा लेल स्वयं चण्डचूर कँ चननपुरा राजधानीक राजमहल मे जाए पड़तनि। कारण चण्डचूरक शक्तिक आगाँ कोनो टा काज कठिन नहि रहै।

कामी आ व्यभिचारी चण्डचूर अपन प्रधान शिष्य ब्रजेश्वर सँ सूचना पाबि हर्षित भेल। ओ भयंकर अट्टाहास केलक। ओकर अट्टाहास सँ समग्र मंदिर, गाछ-बृक्ष आ चारु दिशा थर्रा उठल। ओ भैरवीक मूर्तिक आगाँ जोर-जोर सँ निनाद करैत बाजल-हे माता! हम प्रतिज्ञा करैत छी जे अगिला अमावस्याक मध्य रात्रि मे पूजा क' अहाँ कँ स्वेताक रुधिर सँ तृत्प करब आ तखन 'टहा' विद्याक मांग करब। हे माता! जँ हम अपन शपथ पूर्ति नहि क' सकब, त' अहाँक समक्ष अपन बलि द' अपन जीवन लीला कँ समाप्त क' लेब। हे माता! हमर वचन कँ सत्य मानब।

चण्डचूरक महा प्रलयकारी शपथ कँ बाबा भजनानन्द सुनलनि। ओ किएक विशम्भरी माताक मंदिर मे अड्डी मारि आसन जमौने छलाह तकरो स्पष्टीकरण भेल। यादव कुलक एक बालक हुनका नित्य एक लोटा दूध पहुँचाबैत छल। ओही बालकक माध्यमे ओ पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय कँ पत्र लिखि पठौलनि। पत्र मे एतबे लिखल रहै—जकर भय छल से भेल। अनर्थ करत तकर राक्षस प्रण लेलक अछि। भेंट भेला पर सविस्तर गप्प कहब।

पछिला तीन मास सँ अर्थात जहिया सँ चण्डचूर तारा मंदिरक प्रागंण मे पयर रखने छल, पुरोहित आशंकित रहैत छलाह। पुजारी बाबाक पत्र पबितहि बिना एको पल विलम्ब कयने हुनका लग पहुँचि ओ प्रणाम केलनि। पुजारी स्वेता सम्बन्धी चण्डचूरक प्रतिज्ञा द' पुरोहित कँ अवगत करा देलथिन। सभटा समाचार सुनि पुरोहित कँ मूर्छा आब' लगलनि। भय सँ थरथरी पैसि गेलनि। हुनक आँखिक आगाँ अन्हार भ' गेलनि। राजकुमारी स्वेता कँ स्मरण करितहि हुनक अश्रुधार बह' लगलनि। ओ हिचकैत पुजारी बाबा कँ कहलनि—कोनो उपाय त' अहीं करबै बाबा। की अहाँक तपबल सँ चण्डचूरक तंत्र शक्ति अधिक छैक? भ' ने सकैए।

पुजारी बाबा पुरोहितक हाथ पकड़ि हुनका संयत केलनि आ कहलनि—अहाँ स्वयं शास्त्र-पुराणक ज्ञाता छी। तइयो हम स्पष्ट किछु कहब तकरा धैर्य सँ अहाँ सुनू। कापालिक शिव कँ भैरव आ भगवती कँ भैरवी रूप मे पूजा करैत अछि। शिव आ पार्वती हमरो आराध्य देवी-देवता छथि। तखन अहि तामसी भोग एवं बलि देबाक की रहस्य छैक से हमरा बुझबाक सामर्थ सँ बाहर अछि। कापालिक मत मे समस्त गोपनीयता काम शक्ति मे सन्नहित अछि। ई लोकनि कामना आ वासनाक भोग कँ सिद्धि कहैत अछि। वेदान्त मे वर्णित माया सँ हटिक' कापालिक

माया प्रगट करैत अछि। ज्ञान कैँ अज्ञान सँ झाँपि भ्रमक संसार प्रगट क' ई सभ अपन प्रयोजन पूर्ण करैत अछि। इहो प्रत्यक्ष जे उग्रता, भयानकता, अश्लीलता आ वीभत्सताक मध्य कोनो अज्ञात शक्ति सँ कापालिक अनेक आ विचित्र सिद्धि प्राप्त करैत अछि। तँ एकरा सँ एतय टक्कर लेब हमरा विचारे उचित नहि होयत। राजकुमारी स्वेताक प्राण रक्षाक संगहि चननपुरा साम्राज्य कैँ नष्ट होयबा सँ बचौनाइ हमर आ अहाँक एखन अभीष्ट अछि। अहाँ रात्रि भरि एतय रुकल रहू। हम एकहि आसन मे बैसि माता विशम्भरीक रात्रि भरि गोहारि करबनि। चण्डचूरक सत्यानाश कर' लेल माता कोनो ने कोनो उपाय अवश्ये बतौतीह। माताक आदेश प्राप्त क' काल्हि सकाले हम दुनू अगिला कार्यक्रम बनायब।

राति भरि पुजारी बाबा भजनानन्द पूजा मे निमग्न रहला। सकाले ओ पुरोहित कैँ कहलनि–हमरा दुनू कैँ मानसरोवर झील जे हिमालय पर्वत पर अवस्थित अछि जाए पड़त। ओतए सूक्ष्म शरीर मे अनेकों महात्मा आ महामुनी निवास करैत छथि। हुनकर आह्ान कर' पड़त। ओहने महा तपस्वीक आगमन सँ चण्डचूरक उपद्रव समाप्त होयत। माताक यैह आदेश छनि।

पुजारी बाबा भजनानन्द तखनो अपन पूजाक आसन पर बैसले रहथि। ओ पुनः पुरोहित सँ कहलनि–चण्डचूर राजकुमारी स्वेताक प्राप्ति सँ पहिने तंत्रक चक्रार्चन पूजा करत, फेर सँ भैरवी लग अपन प्रण कैँ दोहराओत। अहि काज मे ओकरा पन्द्रह दिन सँ कम समय नहि लगतै। ओहुना अगिला अमावस्याक आइ सँ चौबीस दिन बिलम्ब छैक। माता विशम्भरीक आशीर्वाद सँ कोनो महामुनीक संग ल' समय सँ पहिने हम दुनू घुमि क' आबि जायब।

पुजारी बाबा अपन आगाँ राखल थार सँ एकटा कबच आ एकटा मट्ठा पुरोहितक हाथ मे दैत कहलनि–हम अपन समस्त तप अर्पित क' माता सँ मंत्र सिक्त हाथी दाँतक बनल कबच तथा योग सिद्ध अष्ट धातुक मट्ठा प्राप्त केलहुँ अछि। कबच आ मट्ठा ल' अहाँ चननपुरा जाउ। उचित व्यक्ति कैँ कबच आ मट्ठा पहिरा देबनि। अहि कबच आ मट्ठा पर तत्काल चण्डचूरक तंत्रक कोनो प्रभाव नहि पड़तैक। अहाँ अबिलम्ब घुमि कैँ आउ। तखन हम दुनू मानसरोवर झील हेतु शीघ्रतिशीघ्र प्रस्थान करब।

पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय कबच आ मट्ठा ल' क' चननपुरा अयलाह। किछु काल तक ओ विचार केलनि–महाराज आ महारानी, सेना आ सेनापति तथा चननपुरा साम्राज्यक समस्त प्रजाक स्नेह राजकुमारी स्वेता मे आरोपित अछि। स्वेताक प्राण त' गोवर्धन छथि। तँ सभ सँ उत्तम जे कबच आ मट्ठा गोवर्धनक शरीर मे रहए।

पुरोहितक निर्णय मे पुत्र मोह विवादक विषय भ' सकैत अछि। उचितन कबच आ मट्ठा स्वेताक शरीर पर रहक चाहैत छल। मुदा हम ओहि बात पर ध्यान नहि द' पुरोहित की केलनि से कहब। पुरोहित अपन पुत्र गोवर्धन कैँ बुझबैत कहलनि — हम एक पखवाड़ा लेल तीर्थाटन जा रहल छी। जाबे तक हम घुमि क' आयब, अहाँ अहि कबच आ मट्ठा कैँ अपन शरीर सँ अलग नहि करब। पुजारी बाबाक देल अहि कबच आ मट्ठा पर तामसी तंत्रक कुप्रभाव नहि पड़तैक।

अधिक चिन्ताग्रस्त नहि होथि तेँ पुरोहित चननपुरा पर आयल विपत्ति द' महाराज कैँ किछु नहि कहलनि। तीर्थाटनक नाम पर एक पक्षक अवकाश ल' पुरोहित बाबा भजनानन्द लग पहुँचलाह। दुनू मानसरोवर झील लेल प्रस्थान केलनि।

नेपाल, भूटान आ सिक्किमक पहाड़, दर्रा एवं दुर्गम रस्ता पार करैत दुनू मानसरोवर झीलक कात पहुँचलाह। स्नान आदि सँ निवृत भ' दुनू मंत्रोचार करैत त्राहिमाम्क संदेश सूक्ष्म लोक मे पठाब' लगलाह।

आचार्य आगाँ कहलनि–शून्य, अति शून्य, महाशून्य एवं सर्वशून्य जे क्रमशः कायात्मक, वचनात्मक, मानसात्मक तथा ज्ञानात्मक सुख अछि तकरा पार क' हम सहजानन्द सुखधाम पहुँचि योग निद्रा मे विश्राम क' रहल छलहुँ। बाबा भजनानन्द आ पुरोहित राम बल्लभ उपाध्यायक पीड़ा भरल विनती हमरा लग पहुँचल। योगबल सँ हम दुनूक प्रार्थनाक उद्देश्य एवं चण्डचूर द्वारा चननपुरा पर आनल विपत्तिक ज्ञान प्राप्त कयलहुँ। वस्तुस्थिति कैँ बुझि आ विधाता सँ आदेशित भ' हम दुनूक समक्ष प्रगट भेलहुँ। फेर पुजारी आ पुरोहित कैँ संग ल' आकाश मार्ग सँ सोझे चननपुराक बेगबती नदीक कछेर मे पहुँचलहुँ। मुदा, हमरा तीनूक पहुँचबा सँ पूर्वहि जे विनाश हेबाक रहैक से किछु घड़ी पहिने भ' चुकल रहै। स्वेता आ गोवर्धन संगहि समस्त चननपुरा साम्राज्यक प्राणी कालग्रस्त भ' चुकल रहथि। जे भेलै से बड़ दुखद भेलै।

13.

हम अधैर्य आ व्याकुल होइत आचार्य सँ पुछलियनि—आचार्य! अहाँ तीनूक पहुँचबा सँ पहिने की भेलै? किएक चननपुराक समस्त प्राणी एकहि संग काल कवलित भेलाह? ओ केहन कारुणिक घटना छलै जकरा अहाँ तीनू रोकि नै पौलहुँ?

हमरा समक्ष आचार्य ओहिना पद्मासन मे बैसल रहथि। हमरा हुनक व्यक्तित्वक परिचय छल आ ताहि अनुरूप हमर आचरण होयबाक चाही। मुदा अगिला कथा जानक व्यग्रता मे हम ततेक ने अधीर भ' गेल रही जे हमर बाजब सही मे शिष्टताक अनुकूल नहि रहि सकल। हम अपन भाव कैँ काबू करक लेल हाथ जोड़ि लेल।

आचार्यक काया एकाएक पारदर्शी बनि गेल छलनि। हुनक स्वर हमर कान मे नहि पहुँचि हमर बेकल भेल मोन आ धकधक करैत छाती पर प्रहार क' रहल छल। आचार्य कहि रहल छलाह—पंडित! ओहि दिन चननपुरा मे जे भेलै से सही मे अनर्थ भेलै। वासना आ कामनाक भिखमंगा सदिकाल भय आ चिन्ता मे रहैत अछि। मंदिर मे पुरोहितक आयब आ दोसर दिन हुनक पुजारी संग गायब भ' जायब, चण्डचूर आ ओकर शिष्य कैँ भय एवं चिन्ता सँ भरि देलकै। स्वेताक अपहरण सँ पहिने चण्डचूर कैँ चक्रार्चन पूजा विधिपूर्वक करब जरूरी छलैक। पूजा मे कनिओं टा भूल-चूक जागृत भेल भैरवी सहन नहि करथिन से ओकरा बुझल छलै। तथापि राजकुमारी स्वेता कैं प्राप्त करब एवं भोग करबा लेल आतुर भेल ओकर वासना ओकर काल बनि गेल छलै। कहुना क' ओ चक्रार्चन पूजा समाप्त केलक आ भैरवीक आगाँ फेर सँ अपन शपथ दौहरौलक। पूजा मे विधि-विधानक कमी रहलै आ की पूरा भेलैक तकरो सोह चण्डचूर कैँ नहि रहलै।

ठीक पन्द्रहम दिन जेठ मासक अष्टमीक सकाले चण्डचूर चननपुरा पहुँचि गेल। खूंखार आ भयानक आकृति बला चण्डचूर अपन सभटा शिष्यक संगे चननपुरा राजभवनक मुख्य दरबज्जा पर आबि ठार भेल। कापालिकक आगमनक सूचना सेनापति शूर सेन गणपति कैँ भेटलनि। महलक रक्षार्थ सेनापति व्यूह रचना

क' चण्डचूर एवं ओकर शिष्य मंडली कैँ घेरि लेलनि। तीर-कमान, भाला, तलवार सँ लैस सेना आक्रमणक लेल तैयार भ' गेल। सूचना पाबि महाराजा एवं महारानी सेहो ओतए अयलीह।

पशुबलि आ नरबलि देनिहार वामाचार तांत्रिक कैँ देखि महाराजा आ महारानी आतंकित भ' गेली। चण्डचूरक एक हाथ मे लोहाक चूट्टा आ दोसर हाथ मे मदिरा सँ भरल नरमुंड छलै। ओ महाराजा आ महारानी कैँ देखतहिं भयंकर अट्टाहास केलक। सम्पूर्ण राजमहल काँपि उठल। चण्डचूर नरमुंड सूं एक घोंट मदिराक कुरुर क' गर्जना केलक—ने हम मंत्र जानी आ ने तंत्र। हम छी रमणी सँ रमण कर'बला व्यभिचारी कापालिक चण्डचूर। अय! रुद्र प्रताप सिंह देब! सुन', हम तोहर पुत्री राजकुमारी स्वेता संग विवाह कर' एलहुँ अछि। शीघ्र विवाहक तैयारी कर। नहि त' सम्पूर्ण चननपुरा कैँ जरा क' भस्म क' देबौक। एकोटा प्राणी कैँ जिबैत नहि छोड़बौ आ स्वेता कैँ अपहरण क' ल जेबौक। हम शपथ ल' चुकल छी। भैरवी कैँ स्वेताक रुधिर सँ तृप्त करक हमर प्रतिज्ञा कैँ संसार मे कियो ने तोड़ि सकैत अछि।

चण्डचूरक अति कर्कश प्रलाप सुनि महाराज आ महारानी किछु पल लेल जड़वत भ' गेला। ताहि समय मे कापालिकक अत्याचार सँ सम्पूर्ण भारत कराहि रहल छल। साधारण गृहस्थक कोन कथा, दिन-दहाड़े, सभहक समक्ष राजाक पुत्री कैँ केश पकड़ि घिसिया क' कापालिक ल' जाइक आ ककरो साहस नहि होइक जे ओकरा रोकि सकितए। मुदा स्वेता त' महाराज आ महारानी कैँ कलेजाक टुकड़ा छलथिन। ताहू पर सँ चण्डचूर स्वेताक लेल अपशब्द बाजल छल। महाराजक राजपूती शोणित मे उफान उठलनि। ओ गरजैत सेनापति कैँ आदेश देलनि—गणपति, अहि बदमास तांत्रिक पर हमला करू। एकोटा जीबि क' वापस नहि जाए।

महाराज आ सेनापति, दुनूक हाथ मे तलवार चमकि उठल। समूह मे सेना चण्डचूर आ ओकर शिष्य मंडलीक नाश करबाक लेल आगाँ बढ़ल। मुदा चण्डचूर त' सभ तरहक तैयारी क' क' आयल छल। ओ मंत्रोचार करैत अपन गरदनि सँ मनुक्खक हड्डीक माला निकाललक आ माया पसारि सम्मोहन एवं स्तवन, दुनू तरहक सिद्धि कैँ एकहि समय मे प्रयोग केलक। ताही क्षण चण्डचूरक सिद्धि अपन करतब देखौलक। महाराज, महारानी, सेनापति आ तमाम सेना सम्मोहित होइत अपन अकिल आ विवेक सँ अलग भ' गेला। भ्रमित भेल ओतुका जन समुदाय पोसुआ कुकुर जकाँ चण्डचूरक आगाँ नांगरि डोलाब' लागल।

चण्डचूर अपन शिष्य संगे राजभवनक भीतरी प्रांगण मे प्रवेश केलक। तत्काल

ओकर चेला सभ मिलिक' विवाह बेदी आ होम करबा लेल कुंड तैयार क' लेलक। कुशक जउर मे हाथ बान्हि क' स्वेता कैँ विवाह मंडप मे आनल गेल। स्वेताक सभटा सखी, राज्यक कर्मचारी आ महाराज-महारानी भ्रमित भेल विवाह मंडप मे पहुँचि मूक दर्शक बनल रहल। चण्डचूर कोयला सन कारी चोंगा पहिरने छल। ओकर आँखि करजनी जकाँ लाल-लाल भ' गेल रहैक। ओ एक बेर स्वेता दिस ताकए ओ फेर नरमुंड सँ मदिरा पान करए। विवाह मंडप सँ थोड़बे हटल सेनापति शूर सेन गणपति अचेता अवस्था मे जमीन पर बैसल रहथि। सभटा दृश्य अजीबे आ डेराओन रहैक। जेना बुझि पड़ैत छलै जे स्वयं समय चण्डचूरक बंदी बनल कराहि रहल होअय।

एकाएक आश्चर्यबला बात भेलै। जेना स्वयं भगवती आबि स्वेता मे कोनो शक्ति भरि देलथिन तहिना ओ चण्डचूरक माया कैँ तोड़ि हाथ मे बान्हल जउरक रस्सी कैँ खोलि राजभवनक सिंहदरबज्जा दिस दौड़ि पड़लीह। स्वेताक पयर मे बिहारि पैसि गेल छल। ओ सिंहदरबज्जा सँ बाहर भ' दौड़ि रहल छलीह। हुनक पाछाँ चूट्टा भंजैत चण्डचूर, ओकर शिष्य, महाराज, महारानी आ बड़ी टा जन समूह दौड़ि रहल छल। चरैत पशु बाँय-बाँय बोमियाइत सेहो जहँपटार दौड़ लागल' छल।

राजभवनक अहि हलचल सँ पूर्णतः अनभिज्ञ गोवर्धन गौशालाक एक कात ठार हल्ला सुनि आश्चर्य सँ एम्हरे ताकि रहल छलाह। स्वेता सोझे जा क' गोवर्धनक देह मे लेपटा गेलीह आ चिचियाति बजलीह—हमरा बचाउ हे हमर प्राणनाथ। हमर पिता राजा होइतहुँ कापालिकक भय सँ आन्हर भेल छथि। ओ कापालिक संग हमर बिआह करा रहल छथि। अहाँ कैँ हम अपन स्वामी मानने छी। अहाँक देह मे पुजारी बाबाक देल कबच आ मट्ठा अछि। दुष्ट कापालिकक कोनो टा वश अहाँ पर नहि चलतैक। हे हमर स्वामी, अहि स्थान सँ हमरा दूर ल' चलू।

बस भ' गेल। आब हम आचार्यक कोनोटा गप्प सुनि नहि रहल छलहुँ, केवल आँखि सँ दृश्य देखि रहल छलहुँ। स्वेता आ गोवर्धन एक कात दौड़ि रहल छथि,नदीक कछेर, बेगबती धारा, दुनूक फरस पर चढ़ब, गोवर्धनक रस्सा पकड़ि पयर बले फरस कैँ आगाँ बढ़ायब, कापालिक द्वारा रस्सा काटब, फरसक धार मे उनटब, स्वेता आ गोवर्धनक नदीक धार मे उब-डुब करब आ फेर डुबि क' मरि जायब। फेर देखलहुँ 'हा पुत्री', 'हा स्वेता' बजैत, चिचिआति महारानी हेमाबतीक धार मे कुदब। तखन देखल महाराज, सेनापति, सेना आ समस्त जनसमुदायक स्वेच्छा सँ जल समाधि लेब।

हमर मुंह सँ अबाज फुसफुसाइत बाहर भेल—उलपी संग नाव पर आब' काल

हम झपकी लेने छलहुँ। ताहीकाल सपना देखने छलहुँ। की हमर देखल सपना सत्ये छलैक।

उत्तर आचार्य देलनि–हँ, हँ। अहाँ जे सपना देखलहुँ से सभटा सत्य छलैक। ओहिना भेल रहैक। स्वेताक संगहि सभ कियो डुबि मरला। सभ कैँ मोह ग्रसित कयने छलनि। तँ विधाताक बनाओल नियमक अनुसारे निर्दोष रहितहुँ सभ के प्रेत योनि भेटलनि। मात्र गोवर्धन प्रेत बन' सँ बाँचि गेलाह,कारण ओ अनासक्त एवं अनुराग हीन प्राणी छलाह। विभिन्न तरहक जीव-जन्तुक योनि मे जिबैत-मरैत तेरह सय बर्खक बाद गोवर्धन पुनः मनुक्ख योनि मे जन्म लेलनि अछि। प्रेतिन बनल स्वेता कैँ एखनहुँ गोवर्धन मे प्राण अटकल छन्हि। गोवर्धनक प्रेम मे वियोगिनी बनल स्वेता एखनहुँ वैह स्वेता छथि जे तेरह सय बर्ख पूर्व मे राजकुमारी स्वेता रहथि। बाँकी बचल महाराज, महारानी, सेनापति, सेना संगहि तमाम चननपुराक प्रजा एखनहुँ स्वेताक स्नेह मे बान्हल प्रेत लोक मे चक्कर काटि रहल छथि। तँ सूक्ष्म लोक मे हमरा विधाताक आदेश भेटल जे गोवर्धनक संग स्वेताक विवाह करा स्वेता सहित ओहि कालक चननपुरा साम्राज्यक तमाम जन समुदाय, पशु-पक्षी आदि कैँ प्रेत योनि सँ मुक्त करा दी। ताही लेल तेरह सय बर्ख पूर्वक संसारक एक छोट अंश कैँ प्रगट क' चननपुरा मे आश्रम बना क' हम उपस्थित भेलहुँ अछि।

वीर बाबू आ पंकज दिस देखैत पंडित राजशेखर दत्त कहलनि–आचार्यक कहब सँ आब सभ किछु फरिछ भ' गेल छल। मुदा तखनहुँ हमर आँखि मे नाव पर देखल सपनाक सभटा दृश्य नाचि रहल छल। स्वेताक विह्वल भेल वाणी तखनहुँ हमर कान में पहुँचि रहल छल। स्वेताक लेल हमर हृदय मे प्रेम प्रस्फुटित भ' गेल छल आ तहिना गोवर्धनक लेल तीव्र इर्ष्या। हम आचार्य कैँ कहलियनि–गुरुवर,अपनेक कहब अछि जे काल्हि भोरे अहि आश्रम मे गोवर्धन अओताह। जे परिस्थिति छैक ताहि मे गोवर्धन कैँ स्वेता संग विवाह करैए टा पड़तिन। ओहुना स्वेताक समर्पण मे एतेक ने उबाल छनि जे एक जन्म कैँ के कहए, हजार जन्म लेलाक बादो जँ स्वेता सनक प्रेमिका भेटए त' एकरा सौभाग्ये टा कहल जेतैक।

आचार्य गम्भीर होइत कहलनि–पंडित! अहाँक विचार उत्तम अछि। हमरा ई पसिन्न भेल। अहाँ मे एहन नीक विचार होयत ताही लेल अहाँ कैँ अहि आश्रम तक आनल गेल अछि। मुदा समस्या त' ई छैक जे गोवर्धन अहीं जकाँ सोच-विचार रखैत होथि तखन ने? विधाताक शर्त छन्हि जे गोवर्धनक इच्छा सँ, स्वीकृति सँ विवाह होअय अन्यथा स्वेता एवं आन सबहक प्रेत योनि सँ मुक्ति नहि भेटतनि। पंडित! अहाँक मदतिक परम आवश्यकता छैक। अहाँ बुझा सुझा क' गोवर्धन कैँ

विवाह लेल तैयार क’ लेब तकर हमरो विश्वास भ’ रहल अछि।

हम मनहि मन सोच लगलहुँ—अहि यात्रा मे सभ सँ पैघ इनाम हमरा भेटल जे हम जीवनक रहस्य सँ परिचित भेलहुँ। प्रेमक की व्यापकता छै ताहू सँ परिचित भेलहुँ। कहू त स्वेता सनक सौन्दर्यक प्रतिमा आ प्रेम रस मे डुबल प्रेमिका सँ जँ गोवर्धन विवाह कर’ मे अरुचि देखबैथ त’ आश्चर्ये टा होयत। हुनका स्थान पर जँ हम रहितहुँ त’ स्वेता सनक परी देशक राजकुमारी सँ विवाह क’ प्रसन्ने टा होइतहुँ। मुदा एहन बात हमरा नहि सोचबाक चाही, पाप होयत। अंतर्यामी आचार्य की कहताह?

हम जोर सँ बजलहुँ—गुरुवर, गोवर्धन कँ विवाह लेल हम राजी अबस्से क’ लेब, तकर हम आशा करैत छी।

आचार्य हमरा दिस स्नेह सँ तकैत वाम दिस घुमि आ पूर्ण संतुष्ट होइत जोर सँ शोर पाड़लनि लज्जाबती, लज्जाबती एमहर आउ। पंडित कँ भोजन एवं विश्राम लेल ल’ जइयौन।

14.

पार्वती सँ बयस मे दू, तीन बर्खक पैघ मुदा हुनके सनक पाड़ीदार नुआ पहिरने आ कंचुकी सँ छाती झँपने लज्जाबती संगे हम आचार्यक कुटिया सँ बाहर अयलहुँ। राति अपन आंचर पसारि निस्तब्ध सुतल छलीह। निर्मल आकाश मे छिड़ियाअल तरेगनक प्रकाश सँ धरतीक दृश्य स्वच्छ आ सुन्दर लगैत रहैक। हम दीर्घ सांस लैत निःसांस छोड़लहुँ आ लज्जाबती दिस तकलहुँ। हुनकर नजरि हमरे पर टिकल छलनि। ओ हमर देह मे सटैत कहलनि–पाहुन! एकरा सौभाग्य कहियौ जे तेरह सय बर्ख पूर्वक संसार उपस्थित भेल अछि। महाराज रुद्र प्रताप सिंह देवक राजधानीक वैभव देखबाक सुअवसर अछि। की हर्ज, भोजन आ विश्राम सँ पहिले चननपुरा मे टहलि-बुलि ली।

हम फेर सँ लज्जाबती दिस तकलहुँ। सही मे, रमणीक सौन्दर्य आँखिए टा मे रहैत छै। हम हुनक आग्रह कँ स्वीकार करैत कहलियनि–ठीक छै, चलियौ।

महाराज रुद्र प्रताप सिंह देवक राजधानी कँे भरि इच्छा देखलहुँ। स्फटिक सदृश चमाचम चमकैत राज भवन, चहुँ दिस सिपाही, सेवक आ अमला लेल बनल कतार मे घर-आँगन, फूल सँ भरल, फुलबाड़ी, सुन्दर घाट सँ घेरल पोखरि, परती-मैदान, कलम-बाग, जंगल आदि सभ किछु देखलहुँ। एकटा चबूतरा कँ देखबैत लज्जाबती कहलनि–अहि चबूतरा कँ देखियौ। स्वेताक बाल्यावस्थाक मुख्य क्रीड़ा स्थल। अही चबूतरा पर अधिक काल स्वेता आ गावेर्धन खेलाइत छलाह।

लज्जाबती आगू कहलनि–एक दिन की भेलै से सुनि अहाँ कँ आश्चर्य होयत। पता नहि की भेल रहनि स्वेता कँ? ओ पटकि-पटकि क’ गोवर्धनक बाँसुरी कँ तोड़ि देलनि। ओहि घड़ी गोवर्धन नहि छलाह। कतहु सँ ऐला पर ओ अपन प्रिय बाँसुरी कँ टुटल देखलनि। रंज मे ओ स्वेताक गाल पर एक चाट बैसा देलनि। स्वेताक सखीक बीच हाहाकार मचि गेल। पता नहि आब की हेतै? महाराज सुनथिन्ह त’ जुल्मे भ’ जेतै। राजाक पुत्री पर हाथ उठेनाइक सजाय गोवर्धन कँ

अबस्से भेटतनि। मुदा से सभ किछु ने भेलै। गाल पर चाट खा क' स्वेता नोर तक नहि बहौलनि। उलटे सिनेह सँ गोवर्धन मे सटि गेलीह। प्रेम ककरा कहैत छै से सभ सखी चिन्ह गेली।

पोखरिक घाट पर पहुँचैत लज्जाबती दोसर खिस्सा कहलनि–अही पोखरि मे गोवर्धन एक दिन नहाइत रहथि। घाट पर बैसलि स्वेता हुनका देखैत रहथिन। हेलैत-हेलैत गोवर्धन जाठि लग पहुँचि गेलाह। स्वेता कें चिन्ता भेलनि जे गोवर्धन कहूँ डुबि ने जाथि। महाराजक पुत्री स्वेताक गात मे राजपूतक शोणित। ओ पोखरि मे कुदि पड़ली। आब लिअ, स्वेता पानी मे उब-डुब कर' लगलीह। घाट पर जमा भेल हुनक सभ सखी हल्ला करैत चिचियाए लगली। गोवर्धन पाछाँ घुमिक देखैत छथि जे स्वेता डुबि रहलीह अछि। पता नहि गोवर्धनक देह मे कत' सँ ओतेक जोश आ फुर्ती आबि गेलनि जे ओ एके सुरकिया मे स्वेता लग पहुँचि गेला। स्वेता कैँ अपन कोरा मे उठा गोवर्धन हुनका घाट पर अनलनि। स्वेताक पेट आ छाती दबा-दबा क' पानि बाहर निकाललनि। कने कालक बाद स्वेताक आँखि खुजलनि। दुनू एक दोसरा दिस ताहि तरहें तकलनि जे सभ सखी बुझि गेली जे प्रेमक समर्पण ककरा कहैत छै।

लज्जाबती बिन रुकनहि स्वेता आ गोवर्धन सम्बन्धी बहुतो खिस्सा सुनबैत रहली आ हम सुनैत रहलहुँ। हम दुनू घुमैत-घुमैत पशुशालाक ओहि स्थान लग पहुँचलहुँ जतए कापालिकक डरे विवाह मंडप सँ निकलि स्वेता दौड़ति आबि गोवर्धनक शरीर सँ लेपटा गेल रहथि। हमरा ओहि कालक स्वेताक मुखमंडल पर अंकित वेदना आ प्राणरक्षाक विवशता साफ-साफ देखाइ पड़' लागल। हमर हृदय द्रवित भ' गेल। स्वेताक पीड़ा कैँ सहबाक आरो शक्ति हमरा मे नहि रहि गेल छल। हम एक तरहें चिचियाइत लज्जाबती कैँ कहलियनि–बहुत देखलहुँ,बहुत सुनलहुँ। आब आरो नहि। स्वेता कैँ कष्ट मे देखि कलेजा फाटि रहल अछि। घुमि चलू आश्रम।

कुटिया मे पहुँचि फलाहार क' मोथाक गुदगर पटिया पर चित्तै पड़ि रहलहुँ। रात्रिक अन्तिम पहर रहैक, मुदा हमरा निन्न कथी लेल हैत? नैनीताल सँ चननपुरा तकक यात्राक एक-एक बात कैँ सोचैत रहलहुँ। मुदा सभटा व्यर्थ। स्वेता हमर मोन-मस्तिष्क पर नीक जकाँ आसन जमा चुकल छलीह। मोन कैँ बुझाब' लगलहुँ–अरे भाइ! स्वेता त' गोवर्धनक प्रेमिका छथि, हुनके पत्नी बनतीह। तोँ तीन मे आ की तेरह मे। मुदा मोनक खलबली कैँ के बुझाबए, के शान्त करए?

सोचैत-सोचैत जेना आँखि लागि गेल छल। नाक मे कोनो परिचित सुगन्धि प्रवेश केलक। चेहा क' उठलहुँ। हड़बड़ाइत कुटिया सँ बाहर एलहुँ। लज्जाबती आ

आचार्य ठीक सोझा मे ठार छला। लज्जाबतीक हाथ मे एकटा पैघ दर्पण छलनि। आचार्य कहलनि–पडित! अहाँ दुविधा मे बड़ी काल तक रहलहुँ अछि। दुविधा मे रहने मोन मे कष्टे टा होइत छैक। आब फरिछ मे आउ। दर्पण मे अपन छवि देखू, सभटा ओझड़ाहटि समाप्त भ' जायत।

आचार्यक आदेश पालन करैत दर्पण मे अपना कैँ निहारल। मुदा एतय त' कोनो आने छवि देखायल। देखैत छी एकटा गौर वर्ण, स्वस्थ्य आ पुष्ट शरीर, औंठिया केश, चेहरा पर देवताक सुन्दरता आ दाहिना हाथक पहुँचा लग लहसुनियाँ दाग। हम चिचिया क' बजलहुँ-अरे! ई त' गोवर्धन थिका।

आचार्यक धीर, गम्भीर ध्वनि कान मे पहुँचल–हँ, पंडित हँ। अहीं तेरह सय बर्ख पूर्व गोवर्धन छलहुँ। एखन अहि जीवन मे अहाँ पंडित राज शेखर दत्त छी।

अएँ, अएँ करैत, हकमैत, दुनू हाथे कपार पकड़ैत हम चुक्की-माली जमीन पर बैसि रहलहुँ। कने काल तक मोन शून्य भेल रहल। जेना कोनो बाज चिड़ै पर झपटा मारने होए तहिना ककरो विचार हमर मोनक विचार पर झपटा मारि हमरा सकपंज क' देने होए तेहन अनुभव भेल। आचार्यक कथन जे हम अपनहि नहि चननपुरा आयल रही, वरन् हमरा आनल गेल छल, तकर की प्रयोजन रहैक से आब हमरा स्पष्ट भ' रहल छल। बहुत तरहक विचार मोन मे चक्कर काट' लागल। अतीतक संसार मे रहितहुँ हम वर्तमानक संसार सँ अलग कहाँ भेल रही? उचित आ कि अनुचितक विचार कैँ फरिछाबैक विवेक हमरा मे नहि रहि गेल छल। कोनो निश्चित विचार त' मोन मे आबिए ने रहल छल। हमरा अजीबे तरहक विवशता घेरि नेने छल।

ताही घड़ी लज्जाबती पीठ पर हाथ रखलनि आ आहिस्ते कान मे कहलनि–जेठ शुक्ल अष्टमीक तिथि आइए थिकै। जे किछु हेतै से आइए हेतै। तँ अहाँक लग मे समय बड़ थोड़ अछि। अहाँक स्वीकृतिक इन्तजार मे हजारो जीवात्मा प्रेतात्मा बनल प्रतीक्षारत छथि। आचार्य सेहो अपन कुटिया मे अहाँक निर्णयक इन्तजार क' रहलाह अछि।

एकाएक लज्जाबती हमर मोनक दुविधा कैँ समाप्त केलनि। स्वेताक गोवर्धनक प्रति एकांगी प्रेमक जीत भेलै। हम उठि क' सोझे आचार्य लग पहुँचलहुँ। हुनक आगाँ दंडबत होइत अपन निर्णय सुनौलहुँ–गुरुवर, हम स्वेता सँ विवाह कर' लेल तैयार छी।

ठीक ताही काल पंकज बाजि उठलाह–पंडित ककाक निर्णय सोलहो आना सही भेलनि। हम हुनके जकाँ दुविधा मे रही। आब हमर मोन चैन भेल अछि।

पंकजक विचार सँ वीर बाबू आ पंडित कका अवगत भेलाह, मुदा दुनू किछु

बजला नहि। पंडित राज शेखर दत्त बिना रुकनहि अपन खिस्सा चालू रखलनि– आचार्यक आसनक बाम कात एकटा पैघ आकारक शंख राखल छलै। आचार्य शंख कैँ मुंह मे सटौलनि। शंखक ध्वनि दुन्दभीक ध्वनि बनि समस्त आश्रम कैँ गनगना देलक। हमर स्वेता संग विवाहक स्वीकृति छल शंख ध्वनि। तुरंते चहुँ दिसि शंख बाज'लागल। महाराज रुद्र प्रताप सिंह देवक राजमहल सँ सेहो शंखक ध्वनि आश्रम तक पहुँचि रहल छल।

तत्काल जनशून्य भेल चननपुरा लोक सँ भरि गेल। खेत-खरीहान मे चरैत पशु बाएँ-बाएँ कर' लागल। चिड़ै-चुनमुनी चारुकात फुदक' लागल। लोकक चहल-पहल सँ आश्रम गुंजायमान होब' लागल। ढोल, पीपही, तासा संगहि महिला समुदायक सामूहिक गान से शुरू भेल। पहिने ओ लोकनि दू-तीन गोट नचारी गौलनि। गीत एतेक ने कर्णप्रिय छल जे हमर ध्यान ओहि दिस आकृष्ट भेल। नेनहि सँ हम नचारी, उचती, तिरहुता, मलार, समदाउन, बटगबनी आदि ग्राम्य गीतक रसिया छलहुँ। हमरा अहि तरहक संगीत मे माटिक सुगंध, माटिक स्पर्श आ माटिक स्वाद भेटैत छल जे बड़ नीक लगैत छल। मिथिला मे अहि तरहक मधुर गीत प्राचीन, अति प्राचीन समय सँ गाओल जाइत छैक तकर ज्ञान होइतहि अपन लोक गीत मोन कैँ आनन्दित क' देलक।

चारूकात हलचल मचि गेल रहैक। एकहि संग सभ बाजि रहल छलाह। हँसी-मजाक सेहो भ' रहल छलै। सभ कैँ काज, किनको फुर्सति नहि छलै। हम वर रही तैँ युवतीक मंडली हमरा मे सटल रहथि जनिक हेड लज्जाबती छलीह। वर कैँ तैयार करक, सजेबाक भार हुनकैँ रहनि। लज्जाबती हुकुम चला रहल छलीह आ आन-आन छौंड़ी सभ कुदि-कुदि हुलास सँ काज क' रहल छलीह। ओही काल लाज कैँ अपना लग सँ टारैत लज्जाबती कहलनि–पाहुन! विधाताक आदेश रहनि जे पछिला जीवनक गोवर्धन जे अहि जीवन मे पंडित राज शेखर दत्त छथि, तनिक सहमति सँ जखन विवाह होयत तखने वांछित फल भेटत। तैँ टुकड़ा-टुकड़ा मे विभक्त क' अहाँक अहि जीवनक स्वभावक अध्ययन कएल गेल छल।

हमर विवाह भ' रहल छल। हमर विवाह स्वेता सँ भ' रहल छल। मोन मे खुशीक डिगडिगिया बाजि रहल छल। विवाह कालक अधीरता में पुलकित होइत हम लज्जाबती कैँ पुछलियनि–कोन विधि सँ हमर सहमति भेटल से ने कहू?

लज्जाबती गप्प-सप्प कर' मे पटु छलीह। ओ हमरा बुझबैत कहलनि–अहाँ कैँ बुझल अछि आ कन्हाइ मंडल सेहो अहाँ कैँ कहि चुकल छथि जे वर्तमान जीवनक स्वभाव पछिला जीवनक संस्कार सँ निर्मित होइत छैक। अहाँक अहि जीवनक स्वभाव कैँ जाँचल गेल। गोवर्धन बला अखखरपन, एकांत प्रिय, संसारक सभटा

वस्तु सँ निर्लोभ, किछु चाहबे ने करी तेहन संतुष्टिबला स्वभाव अहाँक अहू जीवन मे मौजूदे पाओल गेल। भेल मुस्किल। आब कयल की जाए? कोन विधि अपनाओल जाए जाहि सँ स्वेताक प्रति अहाँक प्रगाढ़ प्रेम जागरण होए। तखन ओ अद्‌भुत सुगन्धि आनल गेल। ई खास किसिमक सुगन्धि किन्नर जातिक आविष्कार थिक। एकर उपयोग ओ लोकनि पुरुष-नारीक मिलन हेतु करैत छथि। इन्द्र अही सुगन्धिक संग मेनका कैँ विश्वामित्रक तप भंग करक लेल पठौने छलथिन। विश्वामित्र जनिक तप साधना त्रिलोक मे प्रसिद्ध छल, मेनकाक शरीर सँ सुभाषित अहि सुगन्धिक कारणे काम-इच्छाक वशीभूत भ' गेल छलाह। तहिना नैनीताल मे अहि सुगन्धिक स्पर्श करितहिं अहाँ स्वेताक संग मिलन लेल उताहुल बनि गेलहुँ।

तेल-फुलेल मिश्रित विभिन्न प्रकारक जड़ी-बूटी जाहि मे हरदि प्रधान रहैक, तकर लेप हमर केश काटल माथ पर रगड़ैत लज्जाबती पुनः कहलनि–दोसर विपत्ति ठार भेल जखन अहाँ कन्हाइ मंडलक टायरगाड़ी पर चढ़लहुँ। अहाँ वार्तालापक विषय चुनलहुँ अध्यात्मक। अहाँक बयसक लोक जँ अध्यात्मक मे रूचि लेथि त' निश्चय ओ सोचनीय विषय भेल। एतुका काज सम्पादन में भाँगठ हेतै तकर अंदेशा होब' लगलैक। आब अहि सम्भावनाक निराकरण कोना होअय? तखन अहाँ कैँ उलपीक नाव मे बैसाओल गेल। एकांत पाबि उलपीक सौन्दर्य मे अहाँ ततेक ने मिसरी चटलहुँ जे स्पष्ट भेल कि मनुक्खक कपार पर नाच' बला वासना आ कामुकता सँ अहाँ फराक नहि छी। एतय आश्रम मे सभ कियो निश्चिन्त भेलाह।

हम स्नान आदि सँ निवृत भ' चुकल रही। धोती आ मिरजइ पहिर चुकल रही। ओहि समय मे प्रायः पागक चलन नै रहैक। रेशमी कपड़ाक एक किसिमक मुकुट हमर माथ झँपै लेल बनाओल गेल छल। जखन लज्जाबती हमर आँखि मे काजर कर' लेल हाथ बढ़ौलनि, हम हुनक हाथ पकड़ैत पुछलियनि–यात्रा मे हमरा ऊपर जान लेबा हमला भेल छल, से किएक?

लज्जाबती अत्यन्त सिनेह सँ हमर आँखि मे देखैत जवाब देलनि–जाहि काल अहाँ चननपुरा लेल यात्रा आरम्भ कयने रही एकटा आरो विकट समस्या उपस्थित भेल रहैक। आब त' अहाँ कैँ सभटा खिस्सा बुझल भ' गेल अछि। जखन चण्डचूर अपन प्रतिज्ञानुसार स्वेताक बलि भैरवी लग नहि द' सकल तखन भैरवी ओकर अपन बलि देबा लेल कहलथिन। इच्छा नहि रहितौ प्रण केलाक कारणें ओकरा अपन बलि देब' पड़लैक। अपन बलि देबा सँ पूर्व ओ अपन प्रधान शिष्य ब्रजेश्वर कैँ आदेश देने रहैक जे ओ स्वेता आ गोवर्धन सँ एकर बदला अवस्से लिअए। गुरु आज्ञा मानि ब्रजेश्वर दुष्ट प्रेतात्मा बनि बदला लेबाक ताक मे छल। ओकरा सभ

किछुक आ खास क' अहाँ द' पता चलि चुकल छलै। धर्मकांटा जेबा काल जखन अहाँ बस सँ नीचा उतरलहुँ त' यैह ब्रजेश्वर मानवी रूप मे अहाँ पर आक्रमण कयने रहए। अहाँक रक्षा केनिहार अहाँक सहयात्री छलाह महाराज रुद्र प्रताप सिंह देवक सेनापति शूर सेन गणपति।

फेर गह्वर मे अहाँ फँसि गेल रही आ असगर भ' गेल रही। यद्यपि अहाँक आँगुर मे कन्हाइ मंडलक देल अंगूठी छल, मुदा ओ पर्याप्त नहि छल। तेँ सेनापति शूर सेन गणपति साँप बनि अहाँक रक्षाक लेल पहुँचलाह। साँप बनल सेनापति आ सुग्गर बनल ब्रजेश्वरक मलयुद्धक बीचहि सँ अहाँ पड़ा गेलहुँ। अहि बेर सेनापति गणपति पूरा तैयारी क' क' गेल रहथि। हुनका आचार्यक आशीर्वाद सेहो प्राप्त रहनि। सेनापति ब्रजेश्वर केँ परास्ते टा नहि केलनि, ओकरा अपन गुरु चण्डचूर लग रौरब नर्क मे पठा देलनि। आब अहि कल्प तक दुनू नर्कक भोग भोगत।

लज्जाबतीक गप्प-सप्पक बीचहि मे कोनो बूढ़ चिचियाइत बजला—लज्जाबती सुनैत छी कि नहि? वरक चुमाओन लेल बिलम्ब भ' रहल छन्हि। जँ तैयार भ' गेल होथि त' नेने अबियन्हु। विवाहक सुअवसर काल बराती केँ की चाही? भोजन। समस्त बारातीक दिनुका आ रतुका भोजन महाराजक राजमहले मे हेतनि। ओना महल सँ समाद से आबि चुकल अछि। वरक परिछन कर' लेल महिला समाज आतुर भेल छथि।

कहबाक तात्पर्य जे बाराती तैयार रहथि। धीया-पुता, युवक-युवती, बृद्ध-बृद्धा मिला क' बराती हजार मे रहथि। आश्रम सँ बरियाती महाराज रुद्र प्रताप सिंह देवक राजमहल तक जायत। हमरा लेल कन्हाइ मंडलक टायरगाड़ीक स्थान पर बैलगाड़ी सजल तैयार छल। गाड़ी मे जोतल रहथि वैह माधव आ तिलकेसर। बहलमान रहथि कन्हाइ मंडल। बैलगाड़ी पर चढ़ि हम कन्हाइ मंडल केँ प्रणाम कयल। ओ शान्त भेल कहलनि—अहाँक प्रणाम केँ हम स्वीकार नहि कएल। एखन अहाँ राज शेखर दत्त नहि, गोवर्धन थिकहुँ। अहौं वर बनल स्वेता सँ विवाह लेल जा रहलहुँ अछि। अहि काज सँ हजार नहि, लाखों जीवात्मा प्रेतमुक्त होयताह। विधाताक इच्छे सँ सभ किछु भ' रहल अछि। अहि विवाह सँ अहाँ पुण्य प्राप्त करब से धरि अबस्से। तेँ एखन हमहीं अहाँ केँ प्रणाम करब।

कन्हाइ मंडल हाथ जोड़ि लेलनि। ताही काल बैलगाड़ीक आगाँ कतहु सँ आबि पंजा ठार भ' कहलनि—श्रीमान। सासुर मे अहाँक खबासीक काज हमरे देल गेल अछि। सासुर मे खबास कोन काज करताह? भोजन करताह। नीक-निकुत खेबा लेल एखनहि सँ हमर जी पनिआ रहल अछि।

बाराती महाराजक राजभवनक मुख्य दुआरि पर पहुँचल। हमरा आदर सहित

बैलगाड़ी सँ उतारल गेल। बाराती एवं सराती मे हमहीं टा केन्द्र बिन्दु रही जतए सभहक नजरि केन्द्रित छल। महाराज अपनहि सँ हमर पयर धोलनि। महारानी अपन आँचर सँ हमर पयर पोछलनि। बाँकी सभ अपन स्नेह, अपन अनुराग सँ हमरा तृप्ति केलनि। तखन परिछनक विधि शुरू भेल। परिछन कर' मे छेहा युवती छलीह। सभ सँ आश्चर्य उलपी कँ देखि क' भेल। उलपी ओहने परिधान पहिरने रहथि जेहन ओ नाव पर पहिरने छलीह। हुनक पयरक पायल मे ओहिना घुंघुरू खनकि रहल छलनि। उलपी हमर समीप आबि हमर कान मे कहलनि–बिधकरी हमहीं छी। विधिकाल अहाँक नाक-कान मरोड़ि हम नाव परक बदला अवस्से चुकायब। सावधान रहब।

तखने अनघोल भेलै। किछु कालक बाद माजरा बुझ' मे आयल। महाराजक पुरोहित जोर-जोर सँ बाजि रहल छलाह–एखन तक मिथिलाक विधि-विधान चलल। आब खंडवा प्रदेशक चन्द्रवंशी क्षत्रिक विवाहक रीति-रिवाज चलत। सभ सँ पहिने वर-वधू एक दोसरा कँ माला पहिरौथिन। कनडरिए नजरि सँ एक दोसरा कँ देखथिन्ह, पसिन्न करथिन। तखन जा क' वर-वधू विवाह मंडप मे जेताह।

प्रायः बड़ी काल सँ मिथिलाक पुरोहित शास्त्रार्थ क' रहल छलाह। कारण बजैत-बजैत हुनक गला सँ खोंचारल शब्द बाहर निकलि रहल छल। हम तकर किछुए भाग सुनि पौलहुँ। मिथिलाक पुरोहित कहि रहल छलाह–खंडवाक पुरोहित डीग्गा अछि, बूड़ि अछि, खसकल अछि। एकरा ढेका खोसैक लूरि तक नहि छैक। कियो एकरा कान पकड़ि दक्षिण मुंहे बैला दैत तखने हमर करेजक ताप मेटाइत।

अहि झमेला सँ अलगे हमरा ओहि स्थान पर पहुँचाओल गेल जतए कि वर-माल होइत। माला लेने स्वेता हमर आगाँ मे ठार छलीह। नैनीताल मे देखल स्वेता, समस्तीपुर मे देखल स्वेता, सपना मे देखल स्वेता, कल्पना मे देखल स्वेता कँ साक्षात आगाँ मे देखि हमर होशो-हबास खतम होब' लागल। हुनक आँखि मे देखैत आ अपन सभटा अभिलाषाक अर्पण करैत हम अपन हाथक माला हुनका पहिरा देल। माला पहिरबिते हुनकर नजरि हमरा चेहरा पर केन्द्रित भ' गेल। हम अपन मूड़ी कँ आगाँ झुकौलहुँ। ओ हमर गला मे माला पहिरा देलनि। एना अनुभव भेल जेना युग-युगक पिआस भेटा गेल होअए। अकाशो सँ पैघ ककरो प्रतीक्षा समाप्त भ' गेल होअय।

एतबा खिस्सा कहैत-कहैत एकाएक पंडित राज शेखर दत्त चौंकि उठला आ आएँ, आएँ बजैत उठि क' ठार भ' गेलाह। वीर बाबू आ पंकज, खिस्सा सुन' मे डुबल रहथि। पंडित ककाक अप्रत्याशित व्यवहार देखि घबड़ा गेला। दुनू एकहि संग ठार भ' गेला। 'की भेल पंडित कका' क भाव दुनूक चेहरा पर अंकित भ' गेलनि।

पंडित ककाक ध्यान कतहु आन ठाम रहनि। ओ किछु निश्चय करैत बजलाह-हँ, हँ। ई विनये थिकाह। हँ, यौ, वैह छथि। हम हुनक चिकरब सुनलहुँ अछि। ओ वीर बाबू एवं पंकज दिस देखैत बजला—अहाँ दुनू नीचा जाउ। विनय कँ मदति करियौन। ओ एहन बिकराल बाढ़िक समय मे एतेक सकाले किएक एलाह अछि?

वीर बाबू आ पंकज सीढ़ी उतरैत नीचा अयलाह। पूर्व दिस आकाश फरिच्छ जकाँ भ' गेल रहैक आ भोर होब' बला छलै। संध्याकाल जाहि बरामदा पर ठार भ' वीर बाबू आ पंकज पंडित ककाक हाथ पकड़ि ऊपर खींचने छलखिन से बरामदा डाँड़ तक पानि मे डुबि चुकल छलै। तइयो ओ दुनू ओहि स्थान तक पहुँचि गेला। ठीके विनय आबि रहल छलाह। बाढ़िक हिलकोर मे हुनक माथे टा जागल छलनि। ओ बुझू हेलैत, कठिन परिश्रमे आगाँ बढ़ि रहल छलाह। विनय नजदीक अयलाह। वीर बाबू आ पंकज हाथक सहारा देलथिन। विनय ऊपर बरामदा पर अयला आ अति प्रसन्न होइत कहलनि—भगवतीक असीम अनुकम्पा सँ अहाँ दुनू जीवित छी से देखि हमरा सभटा थकान फुर्र भ' गेल। मुदा अहाँ दुनू बचलहुँ कोना? आउटर हॉउस त' पानि मे डुबल अछि। तखन अपन सभहक वस्तु डुबि क' अबस्से सत्यानाश भ' गेल होयत?

विनयक प्रश्नक जवाब नहि द' उलटे वीर बाबू प्रश्न पूछि देलनि—एहन विकट समय मे जखन बाढ़ि सम्पूर्ण शहर कँ गिरक लेल उद्यत अछि, अहाँ एतेक सकाले किएक एलहुँ अछि से ने कहू?

—हम अहाँक प्रश्नक जवाब बाद मे देब। पहिने हमर प्रश्नक उत्तर दिअ।

वीर बाबू स्थिर होइत कहलनि—काल्हि सन्ध्या काल हम आ पंकज प्रलयंकारी बाढ़िक स्वरूप देखि भयभीत भेल अही बरामदा पर ठार चिन्ताग्रस्त रही। बाढ़िक जल-स्तर बढ़ले जा रहल छलै। सांझ से भ' गेल रहै। कोम्हर पड़ा' क जान बचाउ तकर कोनो टा मार्ग सुझिए ने रहल छल। दुनू हतोत्साहित भ' गेल रही। ताही काल देवतास्वरूप अहाँक स्वर्गीय काका जटाधर बाबूक बाल सखा आ अभिन्न मित्र पंडित राज शेखर दत्त अहींक नाम लैत एतय अयलाह। हुनके कहला सँ मकान मालिकक ताला तोड़ि सीढ़ी बाटे अपन सभहक गोट-गोट समान ऊपरका पोर्टिकोक छत पर उघि लेलहुँ। अहाँक पंडित कका उमेरगर होइतहुँ बड़ मजगुत छथि। आउटर हॉउस सँ कागज-पत्तर, कपड़ा-लत्ता संगहि चौकी, टेबुल, कुर्सी तक ऊपर पहुँचि गेल। आरो सुनू। कान्हि राति मे भोजन कत' भेटितए? अहाँक पंडित कका अपन बैग सँ रोटी, तरकारी आ मिठाइ खेबा लेल देलनि। हम आ पंकज भरि पेट भोजन कयलहुँ।

उत्साहित आ प्रसन्न होइत पंकज ताहि सँ आगाँ कह लगला—विनय बाबू, अहाँक पंडित कका साधारण लोक नहि छथि। ओ अपन जीवन मे घटल सत्य घटना कँे राति भरि कहैत रहला। हुनक खिस्सा एतेक ने मनलग्गू छल जे हम आ भाइ जी राति भरि जगले हुनक खिस्सा सुनैत रहलहुँ अछि।

विनय, वीर बाबू आ पंकज डाँड़ तक पानि मे डुबल बरामदा पर ठार रहथि। वीर बाबू आ पंकजक गप्प सुनि विनय मुंह बौने आश्चर्य मे डुबल रहथि। ओ कहलनि—बाढ़िक डेराओन रूप देखि अहाँ दुनू बताह त' ने भ' गेलहुँ अछि। कहू त पंडित कका कोना क' एतय अओताह? एहनो मूर्खताबला गप्प की नीक लोक बजैत अछि?

खिसियाइत वीर बाबू बजला—अहाँ एना अंटसंट किएक बजैत छी यौ विनय बाबू? हम दुनू ने मूर्ख छी आ ने बताह। जनिका संग राति भरि सँ छी, जनिका चलते प्राण बाँचल, तनिका द' हम दुनू की फूसि बाजब? चलू ऊपर चलू। अपन आँखि सँ पंडित कका कँे देखि लिअ। अहीं बला चौकी पर बैसल पंडित कका भेटताह।

तीनू ऊपर अयलाह। पंडित कका ओहि ठाम नहि छलाह। वीर बाबू घबड़ा क' मकानक छत, दू मंजिलाक छत, मकानक कोन-कोन मे पंडित कका कँे ताकि अयलाह। पंकज अबाजो देलथिन—कत' छी यौ पंडित कका?

मुदा कोनो जवाब नहि भेटलनि। पंडित कका कतहु ने रहथि। हुनकर बैग आ राति भरि जरैत डिबिया सेहो ने छल। पंडित कका हवा मे विलीन भ' गेल रहथि। सकदम भेल वीर बाबू आ पंकज एक कात ठार भ' गेला।

विनय तितल धोतीक पानि गारैत कहलनि—हमर काकाक मृत्यु सँ तीन बर्ख पहिने पंडित कका संसार त्यागि चुकल छलाह। हुनक मृत्यु धार मे फरस उनटला सँ भेल रहनि। हुनकर लाश धार मे भसिया गेल रहै जे तीन चारि कोस आगू जा क' भेटल रहैक। ठीके, ओ हमर काकाक एतेक ने प्रिय छलथिन जे हुनक मृत्यु सँ काका कँे बड़ जोरक आघात लागल छलनि। काका शोक मे कइअक दिन तक अन्न-जल नहि केलनि। पंडित ककाक कियो अप्पन नहि रहनि। काकाक कहला सँ हुनका मुखाग्नि हमहीं देलियनि आ हुनक श्राद्ध सेहो हमहीं केलियनि। तखन अहाँ दुनू कहि रहल छी जे राति-भरि पंडित कका खिस्सा सुनौलनि, रोटी-तरकारी आ मिठाइ खुऔलनि, एकर के विश्वास करत?

अप्रतिभ भेल वीर बाबू का पंकज चुपचाप ठार रहथि। ओना कोनो प्रकारक भय दुनू मे नहि छलनि, मुदा दुनूक माथ सँ घामक बुन्न टपकि-टपकि क' खसि रहल छलनि।

विनय कपड़ाक ढेरी सँ अपन धोती, कुर्ता निकालि तितल वस्त्र बदललनि। फेर कागज-पत्तरक ढेरी सँ चमड़ाक जिल्द लागल एकटा पोथी उठा अपन चौकी पर बैसला आ कहलनि—अही हस्तलिखित पोथीक कारणें हमरा एतेक भोरे आब' पड़ल। ई पोथी की थिकै से बुझलियै? यद्यपि हम एकरा पढ़ने नहि छी, मुदा ई थिकै पंडित ककाक जीवनी। ई पोथी छलै हमर काका लग। ओ एकरा सहेजि क' रखने छलाह। मृत्यु सँ किछु मास पहिने काका अहि पोथी कँ हमरा हाथ मे दैत कहने रहथि—विनय, एकरा छपबा दिहक। सुनि लए, हमर मृत्युक बाद तोँ हमर श्राद्ध-क्रिया नहिओ करब' तइयो हम रंज नहि हेब', मुदा जँ हमर मित्रक पोथी प्रकाशित नहि करबेहक, त' हमरा दुख हैत आ हम तोरा क्षमा नहि करब। हमर प्रबल इच्छा अछि जे लोक एकरा पढ़थि।

जीवन मे घर-गृहस्तीक जंजाल त' लगले रहैत छैक। ने फुर्सति रहल आ ने ध्यान रहल। मुदा अहि बेर अहि पोथी कँ प्रकाशन करबाक निमित्ते गाम सँ अनने रही। एक दू ठाम एकर प्रकाशनक मोल-जोल सेहो कयने रही। बीचहि मे काकाक एकोदिष्ट लेल गाम जाए पड़ल आ एमहर हरशंखा बाढ़ि आबि गेलै। चिन्ता भेल जे कहूँ पंडित कका बला पोथी बाढ़िक पानी मे नष्ट ने भ' गेल होइक। कुहरि कँ राति बितेलहुँ आ एक पहर राति बचले रहै तैखन गाम सँ बिदा भेलहुँ। भगवती कृपा सँ पोथी बाढ़ि मे नष्ट होइ सँ बाँचि गेल अन्यथा जीवन भरिक अभिशाप माथ पर लदा' लाइत। आब अहाँ दुनू बुझलियै जे बाप-बाप करैत किएक एतेक भोरे हम अयलहुँ।

वीर बाबू आ पंकज कँ अबिचंक पैसि गेल रहनि। दुनूक बकार कंठ मे अंटकि गेल रहनि। दुनूक चेहरा उज्जर-सफेद भ' गेल रहनि। ओ दुनू बौक बनल एक दोसरा दिस ताकि रहल छलाह। मुदा सदिकाल सचेत रह' बला मस्तिष्क विचारक निर्माण कइए रहल छल। वीर बाबू मनहिमन विचारलनि—की अही पोथीक रक्षार्थ पंडित कका कँ आब' पड़लनि? हँ, हँ। सैह बात सत्य होयत।

पंकज कहुना साहस केलनि। विनयक हाथ सँ पंडित कका बला पोथी अपन हाथ मे ल' लेलनि। पंकज पन्ना उनटाब' लगला। ठीक ओहिना नैनीताल सँ खिस्सा आरम्भ भेल छल जेना की पंडित कका राति भरि कहने रहथि। पोथीक अन्त मे एकटा पत्र लिखल रहैक। पंकज त' माटिक मूर्ति बनि गेल छलाह। वीर बाबू कँ सुनबैक इच्छा सँ तइयो ओ पत्र कँ जोर-जोर सँ पढ़लनि।

प्रिय जटाधर,

अहाँ हमर मित्र छी, भाइ छी आ असगरे हमर हितचिंतक छी। जीवन भरि

अहाँ हमरा उलहन दैत रहलहुँ जे हम विवाह किएक ने केलहुँ, घर गृहस्ती किएक ने बसौलहुँ। ओकर जवाब मे हम जीवनी लिखि क' पठा रहल छी। अहाँ एकरा जखन पढ़बैक तखन हमरा सँ, हमर जीवन सँ अहाँ परिचित भ' जैब।

सही मे, अपन सभहक संसारक अलाबा आरो संसार अहि सूर्य मंडल मे छैक। आजुक व्यस्त जीवन मे मनुक्ख अपना कँ चिन्ह पाओत आ की प्रकृतिक रहस्य कँ बुझि पाओत से सर्वथा कठिन छैक। प्रकृतिक दोहन कर' बला लोक अपन धर्मग्रंथ मे देल अमूल्य विद्या कँ सिखि सकत तकर सम्भावना दूर-दूर तक नहि अछि। तँ हमर कथा कँ कियो सत्य नहि मानत। जाए दिऔ, तकर परबाहि हमरो ने अछि। मुदा अहाँ पर हमर विशेष अधिकार अछि आ ओही अधिकारक दुआरे हम अहाँ कँ कहब जे अहाँ हमर कथा कँ सत्य मानब, हमर विश्वास करब।

स्वेताक संग हमर विवाह भेल। स्थूल जगतक हम आ सूक्ष्म लोकक स्वेता, दुनूक प्रेम मिलन केहन आनन्दक सृष्टि केलक तकर वर्णन कर' लेल शब्द नहि अछि। मात्र एतबे बुझियौक जे स्वेताक मिलन सँ हमरा जे सुख भेटल, आनन्द भेटल तकरबाद किछु रहिए ने गेलै जे हमरा चाही।

ताहू पर सँ स्वेताक संग हम करार मे बन्हा गेलहुँ। केहन करार? तकर खुलासा हम क' रहल छी। आचार्यक कहब अनुसार हमर आ स्वेताक विवाहित जीवनक आयु मात्र बीस दिनक छल। तकरबाद हमरा अपन संसार मे घुमि अयबाक छल। अन्तिम राति हम आ स्वेता चुपचाप बैसल रही। काल्हि भोरे हम दुनू सभ दिन लेल अलग भ' जैब, तकर पीड़ा मे ब्याकुल रही। ओही दारुण दुख मे अहुछिया कटैत स्वेता किछु निश्चय केलनि आ हमरा सँ कहलनि–'हे हमर प्राणनाथ, हे हमर प्रियतम गोवर्धन, हम अहाँ लेल सूक्ष्म लोक मे प्रतीक्षा करब। पृथ्वी लोकक आयु कँ समाप्त क' अहाँ आउ। तखन आचार्य सँ आशीर्वाद प्राप्त क' अगिला जीवन मे हम अहाँ फेर सँ पति-पत्नी बनब। जाबे तक अहाँ नहि आयब हम दीप जरा क' राखब, आँखिक नोर बचा क' राखब। आब अहाँ करार करु जे अहाँ हमरा लेल सेहो प्रतीक्षा करब, ककरो अनका सँ सम्बन्ध नहि जोड़ब।'

हम त स्वयं स्वेताक प्रेम मे डुबल रही, आतुर रही आ फेर मिलन होए ताहि कामना मे बाँन्हल रही। तँ हम हुनक करार कँ तखनहि स्वीकार कएल।

यैह कारण भेल जे हम विवाह नै केलहुँ, घर-गृहस्ती नै बसेलहुँ आ अहाँक कहब नै मानलहुँ। किछु दिन सँ हमरा आभास भ' रहल अछि जे हमर जीवनक अन्त निकट अछि। तँ ई पत्र लिखि अपन जीवन-कथाक संगहि पठा रहल छी।

अहाँक स्नेही,

राजशेखर

चिट्ठी पढ़लाक बाद पंकज हिचुकि-हिचुकि क' कान' लगला। ओ वीर बाबूक हाथ पकड़ि क' कहलनि—भाई जी, पंडित कका जे करार केलनि, उचिते केलनि। हम हुनकर जीवन-कथा कैँ पूर्ण विश्वास करैत छियनि। मुदा हुनका कहियौन जे एक बेर ओ फेर सँ प्रगट होथि, नहि त अविश्वास विश्वासक पाँजर तोड़ि देतैक।

वीर बाबूक आँखि मे सेहो नोर रहनि। मुदा ओ किछु नहि बाजि सकलाह, ठूठ भेल ठारे रहि गेलाह।
